RAJHIN/2016/70516

Bhilwara/171/2023-2024

सच्चाई से रुबरु

स्मार्ट हलचल

smarthalchal.com

वर्ष-10 | अंक-154 | जयपुर, बुधवार, 03 दिसम्बर 2025 | मूल्य-4 रूपये

प्रधानमंत्री कार्यालय का नाम अब सेवा तीर्थ, केंद्रीय सचिवालय कर्तव्य भवन

नई दिल्ली

केंद्र सरकार ने प्रधानमंत्री कार्यालय का नाम बदलकर सेवा तीर्थ कर दिया है। देश भर के राज्य भवन का नाम अब लोक भवन होगा। इसके अलावा केंद्रीय सचिवालय को कर्तव्य भवन के नाम से जाना जाएगा। न्यूज एजेंसी पीटीआई ने सरकार के सूत्रों के हवाले से मंगलवार को यह जानकारी पीएमओ के अफसरों ने कहा, 'सार्वजनिक संस्थानों में बड़ा बदलाव हो रहा है। सत्ता से सेवा की ओर बढ़ रहे हैं। ये बदलाव प्रशासनिक नहीं, सांस्कृतिक है।' इससे पहले केंद्र सरकार ने राजपथ का नाम बदलकर कर्तव्य पथ किया था। पीएम का आधिकारिक निवास भी रेस कोर्स रोड कहलाता था, जिसे 2016 में बदलकर लोक कल्याण मार्ग किया गया था।

क्यों बदला गया राज भवन का नाम?

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने पिछले साल राज्यपालों के सम्मेलन में हुई एक चर्चा का हवाला देते हुए कहा कि राज भवन नाम औपनिवेशिक मानसिकता को दर्शाता है। इसलिए राज्यपालों और उप-राज्यपालों के कार्यालयों को अब लोक भवन और लोक निवास के नाम से जाना जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का दफ्तर अब 78 साल पुराने साउथ ब्लॉक से निकलकर 'सेवा तीर्थ' नाम वाले नए एडवांस कैंपस में शिफ्ट होने जा रहा है। यह बदलाव सेंट्रल विस्टा री डेवलपमेंट प्रोजेक्ट का बड़ा हिस्सा है।

राजभवन का नाम बदलकर लोकभवन किया

जयपुर

राजस्थान में राजभवन का नाम बदलकर लोकभवन कर दिया है, अब राजभवन को लोकभवन के नाम से जाना जाएगा। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने राजभवन का नाम लोकभवन करने की अधिसूचना जारी कर दी है। राजभवन का नाम बदलने की यह अधिसूचना एक दिसंबर से लागू होगी।

राज्यपाल बागडे ने कहा कि औपनिवेशिक मानसिकता से लोकतांत्रिक भारतीय संस्कृति की ओर आगे बढ़ने की दिशा में 'लोकभवन' नामकरण बहुत बड़ी पहल है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। हमारे देश के संविधान की उद्देशिका ही 'हम भारत के लोग' से शुरू होती है। लोकतंत्र में लोक ही प्रमुख है, इसलिए राज्यपाल का कार्यस्थल अब 'लोकभवन' होना चाहिए।

राज्यपाल ने जारी की अधिसूचना, राजस्थान यह बदलाव करने वाला नौवां राज्य

नाम से जाना जाएगा। लोकभवन' केवल नामकरण नहीं बल्कि लोगों की भावनाओं, लोक आकांक्षाओं का प्रतीक है।

राजस्थान नौवां राज्य

राजस्थान से पहले आठ राज्यों के राजभवनों का नाम बदलकर लोकभवन किया जा चुका है। राजस्थान नौवां राज्य है। केंद्र शासित प्रदेशों में राजभवन को राजनिवास कहा जाता है, वहां भी अब राजनिवास का नाम लोकनिवास करने की तैयारी है।

थाने में वकील से धक्का-मुक्की, थानाधिकारी-कॉन्स्टेबल सस्पेंड

जोधपुर में थानाधिकारी बोले थे- वकील है तो क्या हुआ, सारी वकालत निकल जाएगी

जोधपुर

जोधपुर के कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड थाने में वकील भरतसिंह राठौड़ से धक्का-मुक्की के मामले में थानाधिकारी हमीर सिंह और रीडर (कॉन्स्टेबल) नरेंद्र सिंह को सस्पेंड कर दिया। थानाधिकारी-रीडर को सस्पेंड करने के ऑर्डर की कॉपी आने के बाद वकीलों ने विजयी रैली निकाली। इससे पहले थाने में वकील से अभद्रता मामले में राजस्थान हाईकोर्ट ने संज्ञान लेकर मंगलवार सुबह पुलिस कमिश्नर, पुलिस उपायुक्त (डीसीपी वेस्ट) और कुड़ी थानाधिकारी को तलब किया था।

पुलिस कमिश्नर ओमप्रकाश, डीसीपी वेस्ट विनीत बंसल, एसीपी, थानाधिकारी हमीरसिंह कोर्ट पहुंचे थे। कार्यवाहक मुख्य न्यायधीश संजीव प्रकाश शर्मा को थाने में वकील के साथ हुए दुर्व्यवहार का वीडियो चलाकर दिखाया गया था।

वकील को बंद करने की धमकी दी थी

थाने में बिना वर्दी के पुलिसकर्मी के बयान लेने पर वकील ने सवाल उठाए थे। इससे थानाधिकारी हमीरसिंह तमतमा गए और कहा था- वकील है तो क्या हुआ, अभी 151 में बंद कर दूंगा। सारी वकालत निकल जाएगी।

आरोप है कि थाने में वकील का कोट भी फाड़ दिया गया था। इसके विरोध में बड़ी संख्या में वकील थाने के बाहर देर रात धरने पर बैठ गए थे। राजस्थान हाईकोर्ट एडवोकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष रतनाराम ने कुड़ी भगतासनी थानाधिकारी हमीर सिंह भाटी को सस्पेंड करने की जानकारी दी। उन्होंने वकीलों को ऑर्डर की कॉपी दिखाई। थानाधिकारी और रीडर के निलंबन आदेश की कॉपी मिलने के बाद वकीलों ने विजयी नारे लगाए और थाने से विजयी रैली निकालकर निकले। वकील करण सिंह ने कहा- पुलिस का ऐसा रवैया बार-बार सामने आ रहा है। फिर चाहे वो थाने की पुलिस हो या ट्रैफिक पुलिस। वकील जोधपुर के कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड थाने के पूरे स्टाफ के खिलाफ कार्रवाई करने पर अड़े हैं।

मंगलवार को कुड़ी थाने में वकीलों के साथ दुर्व्यवहार का मामला सामने आया था। वकील ने धक्का-मुक्की करने, कोट फाड़ने तक के आरोप लगाए हैं। मामला हाईकोर्ट तक पहुंच गया है। मंगलवार को हाईकोर्ट में सुनवाई भी हुई।

पुलिस कमिश्नर को हाईकोर्ट ने फटकार लगाई थी

कोर्ट ने वीडियो देखने के बाद पुलिस कमिश्नर ओमप्रकाश को जमकर फटकार लगाई थी। जोधपुर पुलिस कमिश्नर और सरकार को हिदायत दी कि सभी पुलिसकर्मियों को 'सॉफ्ट स्किल ट्रेनिंग' दी जाए। किससे, किस तरीके से बात करनी चाहिए, कैसे लोगों से पेश आना चाहिए, यह पुलिस को आना चाहिए।

भजनलाल ने की प्रधानमंत्री से मुलाकात, आज कैबिनेट मीटिंग

मोदी को दिया प्रवासी राजस्थानी सम्मेलन का न्योता, मंत्रिमंडल फेरबदल पर भी चर्चा

जयपुर

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मंगलवार (2 दिसंबर) को संसद भवन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री की इस मुलाकात को राजस्थान के राजनीतिक हलकों में काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इधर, सीएम ने बुधवार को कैबिनेट बैठक भी बुला ली है।

10 दिसंबर को जयपुर में हो रहे प्रवासी राजस्थानी दिवस सम्मेलन के लिए पीएम मोदी को आमंत्रित किया गया। राजस्थान सरकार ने पिछले साल राइजिंग राजस्थान इन्वेस्टमेंट समिट के मौके पर हर साल प्रवासी राजस्थानी दिवस मनाने की घोषणा की थी। इसी के मद्देनजर इस साल पहला प्रवासी राजस्थानी दिवस मनाया जा रहा है। इसका उद्देश्य दुनियाभर में बसे प्रवासी राजस्थानियों को एक साथ लाना और उनके योगदान को सम्मानित करना है। बता दें कि पिछले साल राइजिंग राजस्थान समिट का उद्घाटन भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ही किया था। प्रवासी राजस्थान सम्मेलन जयपुर के जेईसीसी सभागार में होगा। सीएम भजनलाल शर्मा की पीएम मोदी से मुलाकात के बाद मंत्रिमंडल फेरबदल की चर्चाओं ने एक बार फिर से जोर पकड़ लिया है। माना जा रहा है कि दोनों नेताओं के बीच मंत्रिमंडल फेरबदल को लेकर भी चर्चा हुई है। सीएम भजनलाल शर्मा ने मंत्रिमंडल में प्रस्तावित बदलाव की जानकारी प्रधानमंत्री मोदी को दी है। उनसे मंजूरी मिलने के बाद राजस्थान में भी मंत्रिमंडल फेरबदल हो सकता है। पिछले कई दिनों से राज्य में मंत्रिमंडल फेरबदल की सुगबुगाहट है।

मौत की अफवाहों के बीच इमरान खान से मिलीं बहन

जेल से निकलकर कहा- भाई पूरी तरह ठीक, 7 दिन से पाकिस्तान में विरोध प्रदर्शन

इस्लामाबाद

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की बहन उज्मा खान ने मंगलवार को रावलपिंडी की अडियाला जेल में उनसे मुलाकात की। जेल से बाहर आकर उज्मा ने बताया कि भाई इमरान पूरी तरह ठीक है। दोनों के बीच करीब 20 मिनट तक मुलाकात हुई। उज्मा ने कहा कि वे आगे की जानकारी अपनी दोनों बहनों अलीमा खान और नोरीन खान से बातचीत के बाद शेयर करेंगीं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक मुलाकात से पहले उज्मा ने अपनी बहन अलीमा खान ने काफी देर तक बातचीत की थी। इमरान खान से 27 दिन के बाद परिवार का कोई सदस्य मिला है। इससे पहले उन्होंने 5 नवंबर को अपनी बहन नौरीन खान से मुलाकात की थी। पिछले मंगलवार को इमरान खान से मिलने उनके समर्थक और परिवार वाले पहुंचे थे, लेकिन जेल प्रशासन ने उन्हें इजाजत नहीं दी।

इसके बाद यह अफवाह फैल गई थी कि इमरान की मौत हो गई है और पाकिस्तान सरकार इसे छिपा रही है। इसे लेकर आज पाकिस्तान में बड़ा प्रदर्शन किया गया था, जिसे देखते हुए रावलपिंडी से लेकर इस्लामाबाद तक हाई अलर्ट जारी कर दिया गया था।

रावलपिंडी में धरना-प्रदर्शन पर रोक

पाकिस्तान सरकार ने आदेश जारी कर रावलपिंडी में 1 से 3 दिसंबर तक सार्वजनिक सभा, र-ैली, जुलूस, धरना-प्रदर्शन और 5 से ज्यादा लोगों के इकट्ठे होने पर बैन लगा दिया है। धारा 144 लागू है। डिप्टी कमिश्नर डॉ. हसन वकार ने इसे लेकर एक आदेश जारी किया है। आदेश में हथियार, लाठी, गुलेल, पेट्रोल बम, विस्फोटक सामग्री ले जाने पर रोक लगा दी गई है। इसके अलावा नफरत भरे भाषण देना, पुलिस की बैरिकेडिंग हटाने की कोशिश करना, दो लोगों के एक मोटरसाइकिल पर पीछे बैठने और लाउडस्पीकर के इस्तेमाल करने पर भी पूरी तरह से रोक लगा दी गई है।

इमरान खान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ ने मंगलवार को इस्लामाबाद हाईकोर्ट के बाहर और रावलपिंडी (अडियाला जेल) में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन करने का ऐलान किया था।

15 भगोड़े अपराधियों ने बैंकों के 58 हजार करोड़ हड़पे

इनमें विजय माल्या, नीरव मोदी शामिल, 19 हजार करोड़ वसूले, 39 हजार करोड़ अब भी बकाया

जयपुर

सरकार ने विजय माल्या, नीरव मोदी सहित 15 लोगों को भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किया है। इन 15 लोगों ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के 58 हजार करोड़ के लोन नहीं चुकाए और विदेश भाग गए। इनमें विजय माल्या, नीरव मोदी, संदेसरा बंधुओं के नाम शामिल हैं। सरकार ने इन भगोड़ों से 19 हजार करोड़ वसूले हैं, लेकिन 39 हजार करोड़ अब भी बकाया चल रहे हैं। बैंकों ने इस रकम को नॉन परफॉर्मिंग असेट घोषित कर दिया है। दौसा से कांग्रेस सांसद मुरारी लाल मीणा के सवाल के जवाब में वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने बताया- भगोड़े आर्थिक अपराधियों से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को 26,645 करोड़ की मूल रकम के साथ 31,437 करोड़ के ब्याज को मिलाकर 58 हजार 82 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ है। अब तक इनसे 19,187 करोड़ रुपए की वसूली हुई है। केवल संदेसरा बंधुओं (नितिन और चेतन) ने एकमुश्त सेटलमेंट प्रक्रिया के तहत 1630 करोड़ रुपए चुकाए हैं। बैंकों ने 3542 करोड़ की छूट की पेशकश की है।

कानूनी प्रतिबंध या निगरानी सूची में रखने की नीति बनाने से इनकार

भविष्य में आर्थिक अपराधियों को देश छोड़ने से पहले कानूनी रूप से प्रतिबंधित करने या निगरानी सूची में रखने से सरकार ने इनकार कर दिया है। मुरारी मीणा के सवाल के जवाब में कहा- सरकार ऐसी कोई नीति नहीं बना रही है।

विजय माल्या पर 9 पब्लिक सेक्टर बैंकों का 12 हजार करोड़ से ज्यादा बकाया है। सबसे ज्यादा स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के 7993 करोड़ बकाया हैं। माल्या के सभी खाते डूबत हैं।

राजस्थान में होगा एयरफोर्स का सबसे बड़ा युद्धाभ्यास

जैसलमेर

भारतीय वायु सेना का 'वायु शक्ति' का अगला संस्करण फरवरी 2026 में राजस्थान के पोकरण फील्ड फायरिंग रेंज में आयोजित किया जाएगा।

हालांकि इसकी औपचारिक घोषणा अभी बाकी है, लेकिन पिछली घटनाओं के पैटर्न को देखते हुए यह उम्मीद की जा रही है कि यह देश का सबसे बड़ा वायुसेना अभ्यास होगा, जिसमें प्रधानमंत्री और रक्षा मंत्री सहित कई गणमान्य व्यक्ति शामिल हो सकते हैं।

वायु शक्ति-2026 अभ्यास में राफेल जैसे मॉडर्न विमानों की मारक क्षमता मुख्य आकर्षण होगी।

क्या घुसपैठियों के लिए भी रेड कार्पेट चाहते हैं-सुप्रीम कोर्ट

रोहिंग्याओं को लेकर दायर याचिका पर सुप्रीम कोर्ट की दो टूक

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को एक जनहित याचिका (पीआईएल) पर सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार को नोटिस जारी करने से इनकार कर दिया। दरअसल, याचिका में कुछ रोहिंग्या शरणार्थियों के लापता होने को लेकर चिंता जाहिर की गई थी और इस मामले में केंद्र को निर्देश देने की अपील की गई। हालांकि, सर्वोच्च न्यायालय ने मामले में सुनवाई को टाल दिया।

सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में तीखी टिप्पणी करते हुए याचिकाकर्ताओं से कहा, 'आप जानते हैं वे घुसपैठिए हैं। भारत के उत्तरी बॉर्डर बहुत संवेदनशील हैं। आप जानते हैं कि देश में क्या हो रहा है। अगर कोई यहां गैरकानूनी ढंग से आया है, तब भी आप उनके लिए रेड कार्पेट चाहते हैं। वे सुरंगों के जरिए घुसते हैं और फिर आपके खाने, निवास के अधिकारी, बच्चों की शिक्षा, आदि के अधिकारी, हो जाते हैं। क्या हम कानून का दायरा इस तरह खींचना चाहते हैं? ऐसे मामलों में बंदी प्रत्यक्षीकरण (हीबस कॉर्पस) जैसी मांगें करना काफी काल्पनिक बात है।

भारत ने पाकिस्तान के लिए इंसानियत के नाते एयरस्पेस खोला

नई दिल्ली

भारत ने तूफान दितवाह से प्रभावित श्रीलंका के लिए राहत सामग्री ले जा रही पाकिस्तान की ओवरफ्लाइट को अपने एयरस्पेस से गुजरने की मंजूरी दे दी है। यह मंजूरी सिर्फ 4 घंटों के अंदर दी गई। ओवरफ्लाइट यानी, जब कोई विदेशी विमान किसी देश की सीमा के ऊपर से गुजरता है, लेकिन वहां लैंड नहीं करता, तो उसे ओवरफ्लाइट कहते हैं। सरकार की तरफ से जारी एक बयान में कहा गया कि पाकिस्तान ने सोमवार दोपहर लगभग 1 बजे भारतीय एयरस्पेस के ऊपर से उड़ान भरने की रिक्वेस्ट की थी। पाकिस्तान ने 1 दिसंबर को ही ओवरफ्लाइट इजाजत मांगी थी। इसका मकसद श्रीलंका को मानवीय मदद देना बताया गया। इसे देखते हुए भारत ने बहुत तेजी से रिक्वेस्ट प्रोसेस की।

पाकिस्तान ने श्रीलंका को एक्सपायर्ड राहत सामग्री भेजी

इस्लामाबाद

पाकिस्तान ने श्रीलंका को एक्सपायर्ड राहत सामग्री भेज दी है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक श्रीलंका में आए साइक्लोन दितवाह से निपटने के लिए पाकिस्तान ने मदद भेजी थी, लेकिन उन फूड पैकेट पर एक्सपायरी डेट अक्टूबर 2024 थी।

पाकिस्तान ने पानी, दूध पाउडर और आटे सहित कई पैकेट भेजे थे। पाकिस्तान हाई कमीशन श्रीलंका ने 30 नवंबर को सोशल मीडिया एक्स पर इससे जुड़ा एक पोस्ट किया था। इसमें राहत सामग्री की तस्वीर भी जारी की गई, जिसमें एक्सपायरी डेट लिखी नजर आ रही है।

ये पोस्ट वायरल हो रहा है, कई यूजर्स पाकिस्तान की आलोचना कर रहे हैं। हालांकि अब तक पाकिस्तान का रिएक्शन सामने नहीं आया है। श्रीलंका साइक्लोन दितवाह की वजह से भारी बाढ़ का सामना कर रहा है। इससे 390 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है। 370 लोग लापता हैं। देश में 11 लाख से ज्यादा लोग प्रभावित हुए हैं। वहीं, लगभग 2 लाख लोग घर छोड़कर शेल्टर होम में रह रहे हैं।

चुनाव सुधारों पर लोकसभा में 9 व 8 दिसंबर को वंदे मातरम् पर चर्चा

सरकार ने फौरन बहस के लिए अड़े विपक्ष को मनाया

नई दिल्ली

चुनाव सुधार यानी एसआईआर पर लोकसभा में 9 दिसंबर को चर्चा होगी। संसद में दो दिन से फौरन चर्चा पर अड़ा विपक्ष बहस के लिए मान गया है। मंगलवार को लोकसभा स्पीकर ओम बिरला से मुलाकात के बाद कांग्रेस नेता के. सुरेश ने बताया, '9 दिसंबर को इलेक्टोरल रिफॉर्म्स यानी चुनावी सुधारों पर 10 घंटे बहस होगी।' साथ ही उन्होंने कहा- एक दिन पहले 8 दिसंबर को वंदे मातरम् पर चर्चा होगी।

इसके लिए भी 10 घंटे का समय तय किया गया है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बहस की शुरुआत करेंगे। वंदे मातरम् के 150 साल पूरे होने पर सरकार सदन में इस पर चर्चा करा रही है।

भाजपा सांसद दामोदर अग्रवाल ने कहा, 'सरकार हमेशा नियमों के अनुसार किसी भी मुद्दे पर चर्चा के लिए तैयार रहती है। बिहार के लोगों ने पहले ही एसआईआर मुद्दे का निपटारा कर दिया है। किसी मतदाता का नाम मतदाता सूची से हटा नहीं है। विपक्ष अपनी हार का ठीकरा एसआईआर पर फोड़ना चाहता है। उन्हें इसके बजाय यह सोचना चाहिए कि उन्हें जनादेश क्यों नहीं मिल रहा।

एसआईआर पर चर्चा के लिए अड़ा था विपक्ष

शीतकालीन सत्र के पहले दो दिन हंगामे की वजह से सदन का कामकाज प्रभावित हुआ। विपक्ष एसआईआर और वोट चोरी के आरोप पर फौरन चर्चा की मांग पर अड़ा था। कांग्रेस नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने राज्य सभा में कहा ' एसआईआर की प्रोसेस के दौरान 12-13 लोगों की जान जा चुकी है। ये अर्जेंट मैटर है। फौरन चर्चा होनी चाहिए। विपक्ष ने दोनों सदनों की कार्यवाही चलने नहीं दी।'वोट चोर- गद्दी छोड़' के नारे लगाए। इसके बाद लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने दोनों पक्षों को अपने मीटिंग रूम में बुलाया था। यहां सहमति बनी कि कल से सदन बिना किसी हंगामे के चलेगा।

संसद के शीतकालीन सत्र में 8 दिसंबर को वंदे मातरम् पर 10 घंटे चर्चा होगी। बहस की शुरुआत पीएम मोदी करेंगे। वहीं अगले दिन 9 दिसंबर को इलेक्टोरल रिफॉर्म्स यानी चुनावी सुधारों पर 10 घंटे बहस होगी। केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल बुधवार, 10 दिसंबर को इसका जवाब देंगे।

दिल्ली ब्लास्ट, डॉ. शाहीन की कार से मिली असाल्ट राइफल-पिस्टल

फरीदाबाद

दिल्ली ब्लास्ट के आतंकी मॉड्यूल में शामिल लेडी डॉक्टर शाहीन सईद को लेकर लगातार खुलासे हो रहे हैं। ब्लास्ट के बाद शाहीन को गिरफ्तार किया गया। इसके बाद अल-फलाह यूनिवर्सिटी में खड़ी उसकी ब्रेजा कार से जांच के दौरान एक 'क्रिनकोव' असाल्ट राइफल और एक विदेशी पिस्टल बरामद हुई थी। 13 नवंबर को बरामद इस कार की जानकारी अब सामने आई है। यही वह कार है, जिसे 25 सितंबर 2025 को खरीदा गया था। सोशल मीडिया अकाउंट पर इसकी तस्वीर डाली गई थी। सूत्रों के मुताबिक, डॉ. शाहीन की कारों को अक्सर डॉ. मुजम्मिल इस्तेमाल करता था। जिन गाड़ियों में विस्फोटक सामग्री की ढुलाई की गई थी, वे भी डॉ. शाहीन और डॉ. उमर नबी के नाम ही थी। इसी बीच यूनिवर्सिटी में जब शाहीन के कमरे की तलाशी ली तो वहां बनाए गए सीक्रेट लॉकर से 18.50 लाख कैश, सोने के 2 बिस्कुट, खाड़ी देशों की करेंसी बरामद हुई थी।

सदन में ड्रामा नहीं, डिलीवरी होनी चाहिएः पीएम मोदी

नई दिल्ली

संसद का शीतकालीन सत्र सोमवार से शुरू हो गया। सत्र की शुरुआत लोकसभा में अभिनेता और पूर्व सांसद धर्मेंद्र को श्रद्धांजलि देने के साथ हुई। इसी दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मीडिया से संवाद करते हुए स्पष्ट संदेश दिया कि संसद में नीति पर गंभीर और रचनात्मक चर्चा होनी चाहिए, न कि हंगामा या प्रदर्शन। उन्होंने कहा कि संसद देश की आशाओं और अपेक्षाओं का केंद्र है, इसलिए यहां ड्रामा नहीं बल्कि परिणाम व प्रभावी काम होना चाहिए।

प्रधानमंत्री मोदी ने विपक्ष समेत सभी राजनीतिक दलों से अपील की कि वे सत्र को सुचारू, गरिमापूर्ण और सार्थक बनाने में सहयोग दें। उन्होंने कहा कि नारेबाजी और शोर-शराबे की राजनीति से देश का भला नहीं होता, बल्कि सकारात्मक बहस और ठोस नीतिगत फैसलों से आगे बढ़ा जा सकता है। उन्होंने कहा, ÷सदन में ड्रामा नहीं, डिलीवरी होनी चाहिए। नारे नहीं, नीति पर जोर देना चाहिए और इसके लिए नीयत भी होनी चाहिए।÷

प्रधानमंत्री ने कहा कि हाल ही में हुए चुनाव परिणामों को लेकर कुछ राजनीतिक दल अभी भी निराशा से उबर नहीं पाए हैं, लेकिन संसद इस निराशा को व्यक्त करने का स्थान नहीं है। उन्होंने कहा कि सत्र किसी पक्ष की पराजय की बौखलाहट का मैदान नहीं बनना चाहिए और न ही किसी की जीत के अहंकार का मंच होना चाहिए। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि नकारात्मकता और विरोध के नाम पर हंगामा करने से लोकतांत्रिक व्यवस्था कमजोर होती है और देश के विकास की गति प्रभावित होती है।

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन में युवा सांसदों को अधिक अवसर देने की आवश्यकता पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी की सोच, ऊर्जा और दृष्टिकोण से संसद को दिशा मिलने की क्षमता है। युवा सदस्य यदि सक्रियता से सहभागिता करें तो देशहित में महत्वपूर्ण विचार और सुझाव सामने आ सकते हैं, जो आने वाले समय में राष्ट्र निर्माण में भूमिका निभाएंगे। उन्होंने कहा कि संसद कार्य करने की जगह है, प्रदर्शन का मंच नहीं। हमें जिम्मेदारी की भावना के साथ काम करना होगा और जनता की उम्मीदों को पूरा करना होगा।

दोनों सदनों की कार्यवाही सुचारू व शांतिपूर्ण चले और सार्थक मुद्दों पर हो चर्चा

बसपा सुप्रीमो मायावती ने सत्तारूढ़ पार्टी और विपक्ष दोनों से अपील की

नई दिल्ली

बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमो मायावती ने सत्तारूढ़ पार्टी और विपक्ष दोनों से अपील की है कि वे संसद के शीतकालीन सत्र की कार्यवाही का सुचारू और निर्बाध तरीके से संचालन सुनिश्चित करें ताकि दिल्ली में वायु प्रदूषण और मतदाता सूची के एसआईआर जैसे आवश्यक एवं जनहित के मुद्दों पर सार्थक चर्चा हो सकें। एक्स पर पोस्ट में मायावती ने कहा कि संसद का शीतकालीन सत्र आज से शुरू हो गया है, जिसके काफी हंगामेदार होने की संभावना हैलेकिन हमारी पार्टी चाहती है

कि संसद के दोनों सदनों की कार्यवाही सुचारू व शांतिपूर्ण तरीके से चले और सार्थक मुद्दों पर चर्चा हो।

उन्होंने एसआईआर प्रक्रिया के दौरान आ रही व्यावहारिक मुश्किलों और आपत्तियों के साथ-साथ काम के दबाव के कारण कथित आत्महत्या की घटनाओं की ओर इशारा करते हुए बूथ-स्तर के बीएलओ के सामने आने वाली चुनौतियों पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि संसद की कार्यवाही सुचारू एवं शांतिपूर्ण तरीके से चलनी चाहिए ताकि देश व जनहित के जरूरी एवं अहम मुद्दों खासकर राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली एवं इसके आस पास के क्षेत्रों में वायु प्रदूषण के कारण हो रही भारी परेशानी और एसआईआर को लेकर आ रही व्यावहारिक परेशानियों और आपत्तियों के साथ साथ बूथ स्तर के अधिकारियों की आत्महत्या जैसी घटनाओं पर ठीक से चर्चा किए जाने और इनका उचित समाधान निकलने की दिशा में सार्थक प्रयास किया जा सकें।

वंदे मातरम और जय हिंद कहना कब से शिष्टाचार का उल्लंघन हो गया

सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने आदेश पर उठाया सवाल

नई दिल्ली

संसद के शीतकालीन सत्र से पहले, शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने राज्यसभा सचिवालय द्वारा जारी आदेश पर आपत्ति जाहिर की हैं, जिसमें सदन में वंदे मातरम और जय हिंद सहित विभिन्न नारों के इस्तेमाल पर रोक लगाने की सलाह दी गई थी। राज्यसभा सांसद चतुर्वेदी ने बताया कि इन नारों परप्रतिबंध लगाना ब्रिटिश काल के शासन जैसा है और उनकी पार्टी मामले पर सचिवालय से जवाब मांगेगी। हमारी पार्टी का मुख्य एजेंडा राज्यसभा सचिवालय और केंद्र से जवाब मांगना है कि वंदे मातरम और जय हिंद कहना कब से शिष्टाचार और नियमों का उल्लंघन हो गया। यह ब्रिटिश काल की शासन-व्यवस्था जैसा है।

राज्यसभा सचिवालय के नोटिस को राष्ट्र-विरोधी बताकर उन्होंने कहा कि हम जानते हैं कि वंदे मातरम और जय हिंद हमारे देश और इसके स्वतंत्रता संग्राम के लिए महत्वपूर्ण हैं। ये नारे लगाना देश प्रेम के कारण है, लेकिन अब वे जो कर रहे हैं, वहां राष्ट्र-विरोधी है। केंद्र को राज्यसभा में जय हिंदी और वंदे मातरम के लिए जारी किया नोटिस वापस लेना चाहिए। यूबीटी सांसद ने कथित वोट चोरी और चुनाव आयोग द्वारा चुनावों को कमज़ोर

करने के साथ-साथ दिल्ली में प्रदूषण पर भी चिंता जाहिर की है। इसी तरह, लोगों के स्वच्छ हवा के अधिकार को पूरा करने का आह्वान करते हुए, उन्होंने कहा कि लोग दिल्ली में प्रदूषण पर चर्चा चाहते हैं... यह देश का प्राथमिक एजेंडा बनना चाहिए।

महाराष्ट्र के नगर निगमों के चुनाव में व्यापक अनियमितता, 25 से ज़्यादा नगर निगमों के चुनाव स्थगित

मुंबई

महाराष्ट्र के कई जिलों में 25 से ज़्यादा नगर निगमों के चुनाव राज्य चुनाव आयोग (एसईसी) द्वारा अस्वीकृत नामांकन पत्रों से संबंधित अपील प्रक्रिया में व्यापक अनियमितताओं का पता चलने के बाद स्थगित किए गए हैं। पहले 2 दिसंबर को होने वाले मतदान अब इन क्षेत्रों में 20 दिसंबर को कराए जाएंगे। एसईसी ने ठाणे, बारामती, अमरावती, अहिल्यानगर, नांदेड़, सोलापुर, यवतमाल, धाराशिव, चंद्रपुर, अकोल और पुणे सहित कई स्थानों पर मतदान स्थगित किया है। चुनाव प्रचार के अंतिम चरण में पहुंचने के साथ ही यह निर्णय कई उम्मीदवारों के लिए बड़ा झटका है।

वहीं, महाराष्ट्र के पालघर में आगामी स्थानीय निकाय चुनाव में टिकट के लिए कथित रूप से 10 लाख रुपये मांगने को लेकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के दो समूहों के बीच झड़प हो गई।

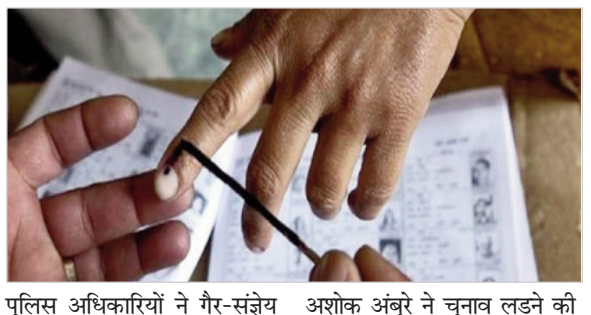

पुलिस अधिकारियों ने गैर-संज्ञेय शिकायत (एनसी) में दर्ज विवरण के हवाले से बताया कि भाजपा की शहर इकाई के पूर्व अध्यक्ष अशोक अंबुरे ने चुनाव लड़ने की इच्छुक पार्टी कार्यकर्ता वैशाली चव्हाण से कथित रूप से 10 लाख रुपये मांगे थे।

पीएम मोदी के बयान को कांग्रेस ने बताया पाखंड

वे खुद सदन में मौजूद नहींहोते

नई दिल्ली

कांग्रेस पार्टी ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा संसद सत्र की शुरुआत से पहले बयान देना सिर्फ पाखंड को दिखाता है, क्योंकि वे खुद सदन में मौजूद नहीं होते और विपक्ष से संवाद नहीं करते। कांग्रेस पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने दावा किया कि संसद में किसी गतिरोध के लिए खुद प्रधानमंत्री मोदी जिम्मेदार हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने विपक्ष पर निशाना साधकर आरोप लगाया कि वे संसद को चुनावी हार के बाद ÷हताशा निकालने का मंच बना रहा है। पीएम मोदी ने कहा कि यदि विपक्ष चाहे, तब वह राजनीति में सकारात्मकता लाने के कुछ सुझाव देने को तैयार हैं। संसद के शीतकालीन सत्र की

शुरुआत से पहले संसद परिसर में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि यह सत्र राजनीतिक रंगमंच न बने, बल्कि रचनात्मक और परिणामोन्मुखी बहस का माध्यम बने। इस पर पलटवार कर कांग्रेस नेता रमेश ने पोस्ट किया, प्रधानमंत्री मोदी कभी संसद में उपस्थित नहीं होते और इस बात को महत्व नहीं देते हैं। वह कभी विपक्ष से संवाद नहीं करते। फिर भी प्रत्येक सत्र से पहले वह संसद भवन के बाहर खड़े होकर लोकसभा और राज्यसभा के सुचारू कामकाज को सुनिश्चित करने के लिए विपक्ष से रचनात्मक सहयोग के लिए राष्ट्र के सामने भाषण देते हैं।''उन्होंने कहा, यदि संसद सुचारु रूप से नहीं चलती है, तब इसका दोष पूरी तरह से प्रधानमंत्री मोदी का है क्योंकि उन्होंने विपक्ष को अत्यावश्यक लोक महत्व के मुद्दों को उठाने की अनुमति देने से इंकार किया है।

सीएम ममता एसआईआर के खिलाफ मालदा, मुर्शिदाबाद, कूचबिहार में करेंगी रैलियां

कोलकाता

पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी इस सप्ताह मालदा और मुर्शिदाबाद में रैलियां आयोजित कर चुनाव आयोग की एसआईआर प्रक्रिया के खिलाफ अपना रोष जताएंगी इसके बाद अगले सप्ताह कूचबिहार में एक जनसभा भी करेंगी। टीएमसी सूत्रों ने बताया कि सीएम ममता बनर्जी द्वारा एसआईआर के विरोध में यह दूसरे चरण का अभियान होगा। इससे पहले उन्होंने पिछले सप्ताह शरणार्थी बहुल मतुआ क्षेत्र में बनगांव में रैली की थी और रैली में उन्होंने आरोप लगाया था कि सीमावर्ती इलाकों में रहने वाले परिवारों को डराने के लिए एसआईआर का दुरुपयोग किया जा रहा है।

टीएमसी अपने जिलावार अभियान को बीजेपी के घुसपैठियों का सफाया के बयान के जवाब के रूप में पेश कर रही है। टीएमसी नेताओं ने कहा कि मालदा, मुर्शिदाबाद में 3 और 4 दिसंबर को जबकि कूचबिहार में 9 दिसंबर को रैलियां आयोजित करने का फैसला लिया गया है। राजनीतिक रूप से संवेदनशील इन तीन सीमावर्ती जिलों में अल्पसंख्यक, प्रवासी और विस्थापित आबादी काफी ज्यादा है और एसआईआर से उनकी दिक्कतें बढ़ गई हैं। मालदा की रैली गजोले में और मुर्शिदाबाद की रैली बेहरामपुर स्टेडियम में आयोजित की जाएगी। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक कूचबिहार की रैली 9 दिसंबर को ऐतिहासिक रास मेला मैदान में

होगी और इस ठंड के मौसम में उत्तर भारत में सीएम ममता की सबसे बड़ी रैली के रूप में पेश किया जा रहा है।

बीजेपी ने टीएमसी पर अवैध प्रवासियों को बचाने और राजनीतिक लाभ के लिए मतदाता सूची के संशोधन का विरोध करने का आरोप लगाया है। यहां 2026 के विधानसभा चुनावों से पहले दोनों पार्टियां एसआईआर मुद्दे का लाभ उठाकर अपनी-अपनी विचारधारा को मजबूत करने की कोशिश कर रही हैं।

शिवगंगा सड़क हादसे पर पीएम मोदी ने जताया दुख, मृतकों के परिजनों को सहायता की घोषणा की

नई दिल्ली

तमिलनाडु के शिवगंगा में हुए सड़क हादसे पर सोमवार को पीएम मोदी ने गहरा दुख व्यक्त किया, साथ ही पीड़ित परिवारों के लिए आर्थिक मदद की घोषणा की। इस हादसे में कम से कम 12 लोगों की मौत हो गई थी और करीब 40 घायल हुए हैं। पीएमओ की ओर से एक्स पर लिखा-तमिलनाडु के शिवगंगा में हुए हादसे में लोगों की मौत बहुत दुखद है। मेरी संवेदनाएं उन लोगों के साथ हैं जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया है। मैं प्रार्थना करता हूं कि घायल लोग जल्द ठीक हो जाएं। उन्होंने घोषणा की कि प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष से मृतकों के आश्रितों को 2-2 लाख रुपए की अनुग्रह राशि दी जाएगी, जबकि घायलों को 50,000 रुपए मिलेंगे।

बता दें यह टक्कर रविवार शाम कुम्मनगुडी के पास हुई, जब दो बसें आमने-सामने टकरा गईं। कई यात्रियों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि कुछ लोग बसों के टूटे-फूटे हिस्सों में फंस गए। स्थानीय लोग ने मदद करने दुर्घटनास्थल पर पहुंचे। पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से घायलों को क्षतिग्रस्त वाहनों से निकाला और अस्पताल भिजवाया। मरने वालों की संख्या बढ़ने पर आपातकालीन टीमें देर रात तक काम करती रहीं।

अधिकारियों ने दुर्घटना का कारण पता लगाने के लिए जांच शुरू कर दी है। शुरुआती जांच में तेज रफ्तार, कम विजिबिलिटी या चालक की थकान जैसे कारणों की बात सामने आ रही है, हालांकि

अधिकारियों का कहना है कि पूरी जांच के बाद ही असल कारण पता चलेगा। पुलिस और परिवहन विभाग के अधिकारियों ने सोमवार सुबह सड़क की स्थिति का आकलन करने और फोरेंसिक सबूत इकट्ठा करने के लिए दुर्घटनास्थल का निरीक्षण किया। घायलों का अभी शिवगंगा और कराईकुडी के अस्पतालों में इलाज चल रहा है, कई यात्रियों की हालत अभी गंभीर है, जिससे डॉक्टरों को तैयार रखना पड़ रहा है।

कांग्रेस ने सरदार पटेल को इतिहास से मिटाने की कोशिश की

बीजेपी अध्यक्ष नड्डा ने 150 यूनिटी मार्च की सभा में लगाए आरोप

नई दिल्ली

बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने आरोप लगाया था कि कांग्रेस ने सरदार पटेल को इतिहास से मिटाने की कोशिश की और यहां तक कि कांग्रेस ने मोदी सरकार द्वारा सरदार पटेल के स्मारक के रूप में निर्मित 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' की लागत और जरुरत पर भी सवाल उठाया। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक नड्डा ने अटलदरा गांव में 'सरदार एट द रेट ऑफ 150 यूनिटी मार्च' के दौरान सभा को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस नहीं चाहती थी कि सरदार पटेल को याद किया जाए।

उन्होंने कहा कि देश के प्रथम पीएम जवाहरलाल नेहरू ने अपनी नीतियों से कश्मीर मुद्दे को बिगड़ने दिया, जबकि सरदार पटेल ने आजादी के बाद 562 रियासतों का सफलतापूर्वक देश में विलय किया। नड्डा ने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने यह सुनिश्चित करने के लिए काम किया कि भारत के लौह पुरुष का नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज न हो। उन्होंने कहा कि सरदार पटेल का निधन 1950 में हुआ था, लेकिन उन्हें 1991 में 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी ने सरदार पटेल को सच्चे अर्थों में याद किया और उन्हें श्रद्धांजलि दी, लेकिन जब मोदी ने पटेल को श्रद्धांजलि स्वरूप गुजरात के नर्मदा जिले में दुनिया की सबसे ऊंची 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' बनाने का फैसला किया, तो कांग्रेस ने इसकी लागत पर सवाल उठाए।

संक्षिप्त समाचार

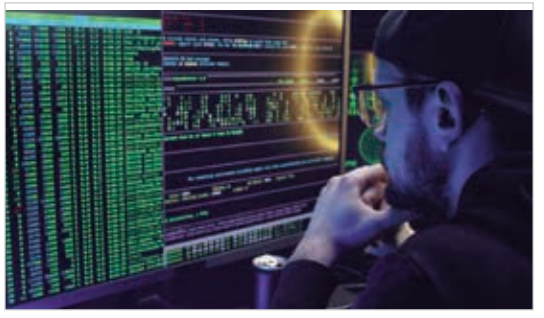

ईमेल पर भेजा लिंक.....क्लिक करते ही खाते से उड़ गए कुल 1,93,857 रुपये

नई दिल्ली ग्रेटर नोएडा में हुई एक साइबर ठगी की घटना दिखाती है, जहाँ एक व्यक्ति को बैंककर्मी बनकर भेजे गए फिशिंग लिंक पर क्लिक करने के कारण 1.90 लाख रुपये का नुकसान हुआ। घटना में पीड़ित आदित्य माहेश्वरी, ग्रेनो वेस्ट के गौर सिटी दो स्थित रक्षा अडेला निवासी है। उन्होंने क्रेडिट कार्ड नहीं बनने की समस्या को लेकर सोशल मीडिया पर पोस्ट किया था। साइबर अपराधी ने एचएसबीसी बैंक कर्मी बनकर फोन किया। इसके पीड़ित आदित्य को विश्वास दिलाया और ईमेल आईडी माँगी। ईमेल पर एक लिंक भेजा, यह कहकर कि क्रेडिट कार्ड के लिए दुबारा आवेदन करने हेतु इस पर क्लिक करें। जैसे ही पीड़ित ने लिंक पर क्लिक किया, अपराधी ने मोबाइल फोन हैक कर लिया। दो अलग-अलग बैंक खातों से कुल 1,93,857 रुपये (97,528+96,329) ट्रांसफर कर लिए।

राज्यसभा में सत्र के पहले दिन पूर्व चेयरमैन को लेकर खड़गे-रिजिजू में तीखी बहस

नई दिल्ली राज्यसभा में सोमवार को उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ को लेकर विपक्ष और सत्ता पक्ष के बीच तीखी बहस हुई। सदन में हंगामे की स्थिति उस समय बनी जब विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने पूर्व चेयरमैन धनखड़ के अचानक कार्यमुक्त होने का मुद्दा उठाया। खड़गे ने कहा कि ...मुझे उम्मीद है कि आपको बुरा नहीं लगेगा कि मुझे आपके पहले वाले राज्यसभा के चेयरमैन के ऑफिस से पूरी तरह से अचानक जाने का ज़िक्र करना पड़ रहा है...मुझे दुख हुआ कि सदन को उन्हें विदाई देने का मौका नहीं मिला। फिर भी पूरे विपक्ष की ओर से मैं उनके स्वस्थ जीवन की कामना करता हूं। मल्लिकार्जुन खड़गे को जवाब देते हुए किरेन रिजिजू ने कहा कि मैं बस हाउस को याद दिलाना चाहता हूं कि आप भूल गए हैं कि आपने पूर्व वाइस प्रेसिडेंट और पूर्व चेयरमैन का अपमान करने के लिए किस भाषा का इस्तेमाल किया था। आपने पूर्व चेयरमैन के बारे में जो शब्द इस्तेमाल किए थे। आपने जो रिमूवल मोशन दिया था, उसकी एक कॉपी अभी भी हमारे पास है।

करूर भगदड़ की जांच के लिए गठित समिति के सदस्य पहुंचे सीबीआई कार्यालय

तमिलनाडु तमिलनाडु के करूर में हुई भगदड़ की केंद्रीय जाँच ब्यूरो द्वारा जाँच की निगरानी के लिए सर्वोच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश अजय रस्तोगी की अध्यक्षता वाली 3 सदस्यीय समिति के सदस्य, आईपीएस अधिकारी सुमित शरण, करूर में मौजदू सीबीआई कार्यालय पहुँचे। न्यायमूर्ति रस्तोगी की अध्यक्षता वाली समिति में सुमित शरण के अलावा सोनल वी मिश्रा (आईजी, प्रोविजनिंग, सीआरपीएफ, नई दिल्ली) शामिल हैं। इस समिति द्वारा अब तक जाँच में एकत्र की गई सामग्री और साक्ष्यों की समीक्षा होने की उम्मीद है। इस बीच, करूर में तैनात सीबीआई अधिकारी पीड़ितों के परिवारों, घायलों, एम्बुलेंस चालकों, पुलिसकर्मियों, टीवीके पार्टी के लोकल प्रशासकों और वेलुचमिपुरम क्षेत्र के कारोबारी से पूछताछ कर रहे हैं।

पोर्टल पर अपलोड करने की समय सीमा नहीं बढ़ेगी

सुप्रीम कोर्ट ने साफ तौर पर इंकार किया

नई दिल्ली वक्फ की संपत्तियों की डीटेल उम्मीद पोर्टल पर अपलोड करने की समय सीमा बढ़ाने से सुप्रीम कोर्ट ने साफ तौर पर इंकार किया है। सुप्रीम कोर्ट ने याचिकाकर्ताओं से कहा है कि वे संबंधित ट्राइब्यूनल में जाकर अपनी बात रख सकते है। बता दें कि समय सीमा बढ़ाने वाली याचिकाओं में ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोल्ड (एआईएमपीएलबी) और एआईएमआईएम नेता असदुद्दीन ओवैसी की याचिका शामिल थी। वक्फ संपत्तियों का ब्यौरा पोर्टल पर अपलोड करने के लिए 5 दिसंबर तक का समय मिला है। अगर ऐसा नहीं किया जाता हैं, तब संबंधित व्यक्ति या संस्था को सजा भी हो सकती है। इसके पहले 15 सितंबर को सुप्रीम कोर्ट ने अपने अंतरिम आदेश में वक्फ (संशोधन) अधिनियम 2025 को पूरी तरह से स्थगित करने से इंकार किया था। हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने कुछ प्रावधानों पर रोक लगा दी थी। नियमों के मुताबिक वक्फ संपत्ति ना अपलोड करने वालों को छह माह की सजा और 20 हजार रुपये तक का जुर्माना हो सकता है। जो लोग संपत्तियों को पोर्टल पर दर्ज नहीं करवाएंगे उनकी संपत्ति का दर्जा खत्म किया जाएगा और बाद में केवल वक्फ ट्राइब्यूनल के आदेश पर ही फिर से पंजीकरण हो सकेगा।

ट्रेक्टर से टक्कर मार, कुचलकर हत्या करने के आरोप में एक गिरफ्तार

स्मार्ट हलचल| भीलवाड़ा

सदर थाना पुलिस ने ट्रेक्टर से टक्कर मार, कुचलकर हत्या करने के आरोप मे 1 आरोपी को गिरफ्तार किया द्वारा अपराधो की रोकथाम के लिए निरन्तर चलाये जा रहे अभियान के तहत् एएसपी पारसमल जैन मुख्यालय भीलवाडा के निर्देशन व माधव उपाध्याय आई.पी.एस सहायक पुलिस आयुक्त सदर भीलवाडा के निकटतम सुवरवीजन मे उक्त कार्यवाही कि गई। पुलिस थाना सदर पर दिनांक 29.11.2025 कों सुबह प्रियदर्षनी नगर के पास, सुवाणा हलेड रोड के पास करीब 50 मीटर की दुरी पर खाली भुमि पर एक व्यक्ति की लाश पडी है की सूचना मिली उक्त सुचना पर थानाधिकारी, थाना सदर व पुलिस टीम ने मौके पर पहुंच घटनास्थल का निरीक्षण कर घटनास्थल से करीब 100 मीटर दुरी खडी एक स्कुटी के नम्बर प्लेट पर अंकित रजि.नं की जानकारी राजकॉप ऐप से कि गई तो पता चला कि मृतक का नाम महेन्द्र सिंह पुत्र छीतर सिह पंवार जाति रावणा राजपुत निवासी मकान 10 डी 39, तिलक नगर भीलवाडा है। जिसके परिजनो को सुचना करने पर परिजन मौके पर आये। जिन्होने ने मृतक की शिनाख्त कर रूपये के लेनदेन एवं अवैध सम्बंधो के कारण हत्या करने की आशंका जताई मौके पर सहायक पुलिस अधीक्षक माधव उपाध्याय आई.पी.एस एवं एफ.एस.एल. एवं एम.ओ.बी टीम नें घटनास्थल का निरीक्षण किया। मृतक महेन्द्र सिंह की लाश को मोर्चरी एम.जी.एच अस्पताल भीलवाडा मे रखवाई और मेडिकल बॉर्ड से पोस्टमार्टम करवाया गया एवं मतृक के पुत्र की रिपोर्ट पर अज्ञात लोगो के विरूद्व हत्या का मामला दर्ज किया गया। मौके के हालात पोस्टमार्टम के आधार एवं एफएसएल युनिट द्वारा घटनास्थल के वैज्ञानिक जांच पडताल से पाया कि मृतक को पीछा कर किसी वाहन सें टक्कर मार कर हत्या कि गई । टीम ने अज्ञात हत्या के आरोपी की तलाश के लिए थाना स्तर पर टीम का गठन कर आस पास के सी.सी.टी.वी कैमरे देखते हुयें मृतक की पृष्ठभुमि के आधार पर सभी पहुलओं पर जांच करते हुयें, मृतक के परिजनों और दोस्तो से पुछताछ और जांच से सभी पहलुओ पर अनुसंधान किया । करीब 20 से अधिक संदिग्ध व्यक्तियो से पुछताछ कि गई और शक के दायरे मे आये रामेश्वर पुत्र रामचंद्र जाट उम्र 40 साल निवासी लक्ष्मीपुरा थाना बनेडा भीलवाडा को हिरासत मे लेकर मनौवैज्ञानिक तरीके से पुछताछ कि गई तो उसके द्वारा अपने ट्रेक्टर से टक्कर मार कर हत्या करना पाया गया। आरोपी रामेश्वर और मृतक महेन्द्र सिंह दोनो दोस्त होकर पिछले करीब 7-8 सालो से दुध डेयरी के धंधे मे पार्टनर थे। जिनके बीच रूपयो का लेनदेन होता रहता था। इसी दौरान आरोपी रामेश्वर जाट की पत्नि से मृतक महेन्द्र सिंह के अवैध सम्बंध बन गये थे और आरोपी महेन्द्र सिंह के प्रियदर्षनी नगर मे स्थित मकान में प्रत्येक रविवार को मिलने लग गये जिसकी जानकारी आरोपी रामेश्वर लाल को तीन माह पुर्व हुई तों उसने महेन्द्र को अपनी दोस्ती का हवाला देकर उसकी पत्नि से दुर रहने की सलाह दी तो महेन्द्र ने उसको धमकी दी कि वह उसके बीच मे नही आये वरना व उसकी पत्नि की बदनामी कर देगा और उसके इकलौते पुत्र की हत्या कर देगा। इसी वजह से आरोपी रामेश्वर ने योजना बनाई कि वह अपने मित्र महेन्द्र सिंह की हत्या कर देगा। दोस्त होने से उसका महेन्द्र सिंह की प्रत्येक गतिविधी की जानकारी थी उसने काफी सोच समझकर मॉर्निंग वॉक की आदत के अनुसार उसे वही ट्रेक्टर से टक्कर मार कर कुचल कर उसकी हत्या करना ही सबसे अच्छा तरीका लगा। आरोपी ने रात को सभी के सोने के बाद करीब दो बजे अपने ट्रेक्टर से निकल कर कच्चे रास्ते से सुवाणा हलेड मार्ग पर पहुंच कर वहॉ इंतजार कर घात लगाकर बैठा रहा और जैसे ही महेन्द्र वहॉ मार्निंग वॉक करने सडक पर आया तों आरोपी ने अपने ट्रेक्टर से टक्कर मारी, महेन्द्र बचने के लिये खेतो की तरफ भागा तो उसने ट्रेक्टर से पीछा कर उसके पीछे टक्कर मारी और उसके ट्रेक्टर के आगे के टायरो के नीचे कुचल दिया जिसके बाद आरोपी अपने ट्रेक्टर को लेकर मौके से भाग कर अपने घर पहुंच दैनिक दिनचर्या के काम करने लग गया जिससे कि किसी को उस पर कोई शक नही हो परन्तु मुखबीर की सुचना, और सुझबुझ से किये अनुसंधान और पुछताछ के बाद आरोपी रामेश्वर जाट को गिरफ्तार किया गया। टीम में कैलाश कुमार विष्नोई थानाधिकारी थाना सदर भीलवाडा, राजेन्द्र सिंह ए.एस.आई पुलिस थाना सदर भीलवाडा, हैड कांस्टेबल रोहिताश्व, मुकेश कुमार, भंवर सिंह गुर्जर । (विषेश योगदान), कमल किशोर (विषेश योगदान), गजराज (विषेश योगदान), भगवानदान, महादेव, महेन्द्र शामिल थे।

कांग्रेस एससी विभाग के प्रदेश उपाध्यक्ष बने डॉ. आर.सी. सामरिया

स्मार्ट हलचल

रायला। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एससी विभाग द्वारा रायला के डॉ. आर.सी. सामरिया को राजस्थान कांग्रेस एससी विभाग का प्रदेश उपाध्यक्ष नियुक्त किए जाने की घोषणा होते ही जिले और गांव में खुशी की लहर दौड़ पड़ी। कार्यकर्ताओं और ग्रामीणों में उत्सव का माहौल देखने को मिला। कार्यकर्ताओं ने जोरदार आतिशबाज़ी कर खुशी मनाई है।बड़ी संख्या में पहुंचे कांग्रेसजनों ने डॉ. सामरिया का माल्यार्पण, साफा बाँधकर और शॉल ओढ़ाकर भव्य स्वागत किया। कार्यकर्ताओं ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर खुशी साझा की।

डॉ. आर.सी. सामरिया को शुभकामनाएं देने के लिए उनके निवास पर पहुंचे जिला प्रभारी सोनू खान कायमखानी रायला उप सरपंच आरिफ काज़ी, राकेश कोगटा, अशरफ, सागर खान, हारून, रमीज रज़ा, इरफान, हुसैन जी, एमडी शौकत रज़ा, रवि सेन, दीपक, सहित सैकड़ों कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद रहे।

कार्यकर्ताओं ने 'कांग्रेस पार्टी जिंदाबाद' के नारे लगाए और अपनी खुशी का खुलकर इजहार किया। मौके पर मौजूद लोगों ने कहा कि डॉ. सामरिया की नियुक्ति से जिले के कांग्रेस संगठन को नई मजबूती मिलेगी। सभी ने डॉ. आर.सी. सामरिया को हार्दिक बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

ट्रक को खुर्द बुर्द करने के मामले में दो गिरफ्तार

स्मार्ट हलचल| भीलवाड़ा

प्रतापनगर थाना पुलिस ने ट्रक को खुर्द-बुर्द करने के मामले 2 आरोपी को गिरफ्तार किया। आरोपी गिरोह बनाकर डिफाल्टर वाहनों को अवैध शराब व अवैध मादक पदार्थो की तस्करी करने के लिए किराये पर लेते थे। एसपी धर्मेन्द्र सिंह द्वारा वांछित अभियुक्तो की गिरफ्तारी हेतु पारस जैन आरपीएस अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, मुख्यालय भीलवाडा के निर्देशन में एवं हेमेन्द्र कुमार आरपीएस वृताधिकारी, वृत शहर भीलवाडा के निकटतम सुपरविजन में राजपाल सिहं पु.नि. थानाधिकारी थाना प्रतापनगर के नेतृत्व में एक विशेष पुलिस टीम का गठन किया गया। दिनांक 29.07.2025 को प्रार्थी बद्रीलाल पिता रामलाल वैष्णव निवासी जाटो का खेडा आजादनगर थाना प्रतापनगर भीलवाडा ने रिपोर्ट दी और बताया की आरोपी 1. सम्पत सिहं 2. बालु सिंह 3. सरफराज उर्फ शेरू 4. फरजन 5. गोवर्धन द्वारा प्रार्थी के नाम पर एक ट्रक है जिसको उक्त आरोपियों द्वारा गिरोह बनाकर षडयंत्र पुर्वक किरायानामा, इकरार नामा लिखवाकर किराये पर ले लिया व किराए का तकाजा करने पर कहा कि हमने तेरा वाहन षडयंत्र पुर्वक किराये पर ले लिया है जिसको हम खुर्दबुर्द कर देंगें। आरोपियों द्वारा सोची समझी साजिश के तहत षडयंत्र रचकर प्रार्थी को धोखा देने की नियत से वाहन व दस्तावेजो को अमानतन प्राप्त कर उसे खुर्दबुर्द कर दिया और मेरे साथ धोखाधडी की है। उक्त रिपोर्ट पर मामला दर्ज कर जांच शुरू की । गठित टीम द्वारा आरोपियों की लगातार गलत सूचना एकत्रित कर टीम द्वारा भरसक प्रयास कर आरोपी मो. सरफराज उर्फ शेरू व गोवर्धन को गिरफ्तार किया गया। अन्य आरोपियों की तलाश जारी है।

गठित पुलिस टीमः-

टीम में राजपाल सिहं पु.नि. थानाधिकारी थाना प्रतापनगर, हैड कॉन्स्टेबल सुनिल, कांस्टेबल राकेश प्रतापनगर भीलवाडा (विशेष योगदान), प्रकाश शामिल थे ।

ये हुए गिरफ्तार

मो. सरफराज पुत्र मो. सब्बीर उम्र 41 साल निवासी गुलजार नगर थाना भीमंगज भीलवाडा, गोवर्धन पुत्र भैरूलाल शर्मा उम्र 50 साल निवासी गायत्रीनगर मालोला रोड थाना प्रतापनगर भीलवाडा।

45 लाख का डोडा पोस्त जब्त, भीलवाड़ा पुलिस ने दबोचे दो तस्कर भाई

ग्रेनाइट की आड़ में छिपाई गई 304 किलो से अधिक अफीम डोडा चूरा की खेप, अंतरराज्यीय नेटवर्क के खुलासे की तैयारी

स्मार्ट हलचल | जयपुर

एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स राजस्थान की सटीक आसूचना पर भीलवाड़ा पुलिस ने अवैध मादक पदार्थों की तस्करी के खिलाफ एक बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया है। पुलिस ने एक ट्रक कंटेनर की गहन जाँच के बाद ग्रेनाइट की बिल्टी की आड़ में तस्करी किया जा रहा 45.75 लाख रुपए मूल्य का 304 किलो 700 ग्राम अवैध डोडा पोस्त जब्त किया है। मौके से बीकानेर के दो तस्कर भाइयों पूरणा राम लेघा (40) और देवेंद्र उर्फ देवा (21) पुत्र भंवर लाल निवासी सोमलसर को तुरंत गिरफ्तार कर लिया गया।

अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स श्री दिनेश एमएन के सख्त निर्देशन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री सिद्धार्थ शर्मा के प्रभावी सुपरविजन में यह सफल ऑपरेशन पूरा किया गया। कांस्टेबल विजय सिंह एवं कांस्टेबल गोपाल धाबाई से मिली महत्वपूर्ण गोपनीय जानकारी के आधार पर इंस्पेक्टर राम सिंह के नेतृत्व में एक विशेष टीम गठित की गई। इस टीम ने आसूचना संकलन और मुखबिर तंत्र की मदद से सूचना को पुख्ता किया और तत्काल थाना पुलिस को सूचित किया।

इस पुष्ट सूचना के आधार पर गुलाबपुरा थाना पुलिस ने त्वरित नाकाबंदी की। नाकाबंदी तोड़कर भागे संदिग्ध ट्रक को पीछा कर चौकी 29 मील चौराहा पुलिया पर रुकवा लिया। ट्रक की विधिवत तलाशी लेने पर उसमें छिपाए गए 15 कट्टों में भरा यह भारी मात्रा में 304 किलो 700 ग्राम अफीम डोडा चूरा बरामद हुआ। इस मामले में एनडीपीएस एक्ट के तहत कठोर मुकदमा दर्ज कर दोनों आरोपियों पूरणा राम लेघा (40) और देवेंद्र उर्फ देवा (21) को सलाखों के पीछे पहुँचा दिया गया है।

प्रारंभिक पूछताछ में चौंकाने वाले खुलासे सामने आए हैं। दोनों आरोपी आंध्र प्रदेश के मातूर जिले से ग्रेनाइट भरकर पंजाब की ओर जा रहे थे। उन्होंने बीच रास्ते मध्य प्रदेश के जावर क्षेत्र से यह डोडा पोस्त लोड किया, जिसकी मंज़िल बीकानेर का गांव अर्जुनसर थी। वहाँ उन्हें देवाराम उर्फ भानू नाम के व्यक्ति को यह खेप सौंपनी थी, जो अपनी कार या कैंपर गाड़ी लेकर उनका इंतजार करता। दोनों तस्करों ने पूर्व में तीन से चार बार मादक पदार्थों की तस्करी करने की बात स्वीकार की है।

एएसपी श्री सिद्धार्थ शर्मा एवं इंस्पेक्टर राम सिंह नाथावत के कुशल नेतृत्व में की गई इस कार्रवाई में कांस्टेबल विजय सिंह व गोपाल धाबाई की विशेष भूमिका और हेड कांस्टेबल महावीर सिंह व जितेंद्र की तकनीकी कुशलता सराहनीय रही। वहीं टीम में शामिल एसआई प्रताप सिंह, बनवारी लाल शर्मा, हेड कांस्टेबल महेश सोमरा, हेमंत शर्मा, कांस्टेबल देवेंद्र सिंह, गंगाराम व चालक दिनेश शर्मा का भी उत्कृष्ट सहयोग रहा। वर्तमान में पुलिस टीम दोनों शातिर आरोपियों से गहनता से पूछताछ करने में जुटी है, ताकि उनके पूरे अंतरराज्यीय तस्करी नेटवर्क का समूल पर्दाफाश किया जा सके।

मूलचंद वर्मा फिर होंगे बड़लियास के थानाप्रभारी

स्मार्ट हलचल

थाने का नया थाना प्रभारी नियुक्त किया गया।

सवाईपुर। भीलवाड़ा जिला पुलिस अधीक्षक धर्मेन्द्र सिंह ने आज मंगलवार को 13 पुलिस निरीक्षकों के स्थानांतरण और पदस्थापन के आदेश जारी किए, रायला से थाना प्रभारी मूलचंद वर्मा को बड़लियास थाना प्रभारी लगाया गया । मूलचंद पहले भी कुछ दिन बड़लियास थाने में रहकर गए थे । सिद्धार्थ प्रजापत की रेंज चेंज होने के बाद कार्यवाहक के रूप में सब इंस्पेक्टर महेंद्र मीणा को लगाया गया था, आज जारी हुई सूची में मूलचंद्र वर्मा को बड़लियास

बार एसोसिएशन के सदस्यों ने किया न्यायिक कार्य का बहिष्कार

स्मार्ट हलचल| मांडलगढ़

बार एसोसिएशन के सभी अधिवक्ताओं द्वारा स्वेच्छा से न्यायिक कार्य का बहिष्कार किया गया।

पुलिस थाना कुडी भगतासनी के थानाधिकारी सहित पुलिसकर्मियों द्वारा अधिवक्ता भरत सिंह राठौड़ एवं उनके सहयोगी अधिवक्ताओं के साथ थाना परिसर में की गई मारपीट, हमले एवं अभद्रता की निंदा करते हुए सभी न्यायालयों न्यायिक कार्य का संपूर्ण बहिष्कार किया गया। उक्त मारपीट, अभद्रता व हमले से आहत सभी अधिवक्ताओ ने नारेबाजी, प्रदर्शन कर भारी रोष व्यक्त किया।।

इस दौरान बार एसोसिएशन अध्यक्ष जमना लाल सेन, वरिष्ठ अधिवक्ता गिरधारी लाल आचार्य, महेश चंद सुखवाल, देवेन्द्र पोरवाल, सत्यनारायण जीनगर, अनिल पारीक, ऋतुराज सिंह राठौड़, सांवरमल रेबारी, हरिओम नारायण सनाढय, उदय लाल गुर्जर, संदीप कुमार शर्मा, मनीष कुमार वैष्णव, मुकेश कुमार सोनी, नितिन सारस्वत, संजय खटीक, राधेश्याम शर्मा, निरंजन राव, मुकेश कुमार पड़ियार, हीरा लाल जीनगर, अरविंद वैष्णव, संजय चौहान, दिनेश तंबोली, पवन जीनगर, सत्यनारायण माली, ब्रजमोहन शर्मा, मोइन आसाम, खुशाल गोधवानी, शिव कुमार वैष्णव,जगपाल सिंह पुरावत, जगदीश धाकड़, नरेश रायका,महावीर मीणा, प्रदीप मीणा, वीरेंद्र राव, मुकेश खटीक, प्रदीप सुथार, विनोद धोबी, ममता मीणा, मनजीत गुर्जर, शैतान मीणा, परमेश्वर धाकड़, ऋषिपाल गुर्जर अनीस जुलाहा, कन्हैया लाल खटीक, सूर्यप्रकाश सोनी, अजय साहू सहित सभी अधिवक्ता मौजूद रहे।

चंवरा का हनुमान जी के दानपात्र से 1 लाख 11 हजार 666 रुपए की राशि निकली

स्मार्ट हलचल

आकोला। मेवाड़ के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल चंवरा के हनुमान जी के दानपात्र खोला गया। दानपात्र से 1 लाख 11 हजार 666 रुपए की राशि प्राप्त हुई। इस अवसर पर मंदिर विकास समिति अध्यक्ष बालुराम अहीर, उपाध्यक्ष गोपाल गुर्जर, कोषाध्यक्ष सुरेश बसेर, सचिव मदन सुथार, पुजारी सांवरमल वैष्णव, रोशन वैष्णव, कालु सिंह चौहान, लक्ष्मण सिंह राणावत, दिनेश पोरवाल, भोज राज गुर्जर सहित भक्तजन उपस्थित रहे।

सिडियास विद्यालय के प्रधानाचार्य को सेवानिवृति पर दी विदाई

स्मार्ट हलचल| भगवानपुरा

सेवानिवृत्ति राजकीय सेवा काल का अंतिम चरण है और इस घड़ी का प्रत्येक राजकीय कार्मिक को बेसब्री से इंतजार रहता है राजकीय सेवा के दौरान व्यक्ति को राजकीय जिम्मेदारी को वहन करना होता है जबकि राजकीय सेवा के उपरांत सामाजिक, धार्मिक एवं पारिवारिक जिम्मेदारी को निभाना उसकी जिम्मेदारी हो जाती है । उक्त विचार सोमवार को ग्राम पंचायत सीड़ीयास के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय सज्जनपुरा में प्रधानाध्यापक गोपाल लाल छापरवाल की सेवानिवृत्ति के अवसर पर विद्यालय परिवार द्वारा आयोजित विदाई समारोह कार्यक्रम में प्रधानाचार्य एवं पीईईओ बद्रीलाल डाकोत ने अध्यक्ष पद से संबोधित करते हुए व्यक्त किये । उन्होंने कहा कि आज के इस युग मे जीवन को अमुल्य बताते हुए कहा कि भाग्यशाली होते है वे राजकीय कार्मिक जिन पर ईश्वर की कृपा होती है और बड़े बुजुर्गो का आशिर्वाद होता है जो अपनी राजकीय सेवा पूर्णरूप से सानन्द सम्पन्न कर ऐसे कार्यक्रम के साक्षी बनते है। वरना कई लोग ऐसे भी होते है जो अधिवार्षिकी आयु (60 वर्ष) तक नही पहुंच पाते है और हम सभी से बिछुड़ जाते है । इस अवसर पर सर्वप्रथम मां सरस्वती के दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई । विद्यालय की बालिकाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए 'जग घुमी आई तेरे जैसा ना कोई ' स्वागत गीत प्रस्तुत किया । प्रधानाचार्य गणेशपुरा अन्विता ठाकुर एवं हरिपुरा ललित टेलर ने सेवानिवृत होने वाले गोपाल लाल छापरवाल के राजकीय जीवन का सटीक वर्णन करते हुए शेष जीवन सामाजिक , धार्मिक , पारिवारिक कार्यो में बिताने के साथ ही दीर्घायु स्वस्थ व सफल जीवन की मंगल कामना की । इस विद्यालय की स्थापना वर्ष 1999 में राजीव गांधी पाठशाला के रूप में हुई लेकिन आश्चर्यजनक पहलू यह है कि यहां से किसी भी कार्मिक का सेवानिवृत्ति कार्यक्रम आयोजित नहीं हुआ क्योंकि 26 वर्षो में कोई भी कार्मिक यहां से सेवानिवृत नहीं हुआ । यह पहला अवसर था कि किसी कार्मिक का यहां से सेवानिवृत्ति कार्यक्रम हो रहा है । और यह सेहरा भी छापरवाल के सिर पर ही सजा और गाँव मे ऐसे कार्यक्रम के साक्षी बनने के लिए न केवल अभिभावक, वार्ड पंच , उपसरपंच व बड़े - बूढ़े नौजवान नवयुवक कार्यक्रम में उपस्थित हुए बल्कि अपना उद्बबोधन भी दिया और शुभकामनाएं प्रकट की । जिसमें भोपाजी रामलाल खटीक, पूर्व छात्र रवि खटीक वर्तमान छात्र - छात्रा भरतराज व अंजली खटीक शामिल थे । विद्यालय की अध्यापिका सोनल मोहड़ व पीईईओ केंद्र से परेश तिवाड़ी ने अपने विचार प्रकट किये । पूर्व छात्र रवि खटीक ने कहा कि गुरुदेव केवल पढ़ाते ही नहीं वरन सही मार्गदर्शन भी करते हैं ज्ञान केवल किताबों से ही नहीं वरन् अनुभव से भी सीखा जाता है और वही सीखा हुआ ज्ञान हमेशा साथ रहता है अंत में सेवानिवृत होने वाले गोपाल लाल छापरवाल ने 8 वर्ष की इस विद्यालय में सेवा के दौरान किसी भी कार्मिक के प्रति व किसी भी अभिभावक, स्कूल सदस्यो छात्र छात्राओ से किसी प्रकार से कटुवचन, या जाने अनजाने में किसी प्रकार कुछ कहे हुए शब्दों के प्रति दुर्भावना नहीं रखते हुए क्षमा याचना की । इसी के साथ छापरवाल का 30 नवंबर को जन्मदिन होने पर उपस्थित सभी ग्रामीण एवं छात्र-छात्राओं व कार्मिकों ने हैप्पी बर्थडे टू यू व जन्म दिन की हार्दिक बधाई देकर उनके दीर्घायु जीवन की कामना की। इस अवसर पर उपसरपंच प्रकाश खटीक, वार्डपंच रामेश्वर लाल खटीक, गॉव के पप्पु सिंह राठोड़, अध्यापक गणेश लाल खटीक,सुरेश खटीक, शान्तिलाल खटीक, स्कूल अध्यक्ष मूलचंद खटीक, राहुल खटीक , छापरवाल के परिजनो में पत्नी मधु टेलर भाई शिवराज टेलर एवं उनकी पत्नी रेखा देवी, पुत्र कार्तिक, ईशान पुत्रियां अन्नु देवी, सोनु देवी, डिंपल एवं दामाद अमित, कुलदीप, रजनीश एवं शिक्षण संस्थाओ से वरिष्ठ अध्यापक श्रवणलाल कालबेलिया, उदयशंकर सोनी, मथुरालाल सोनी, मुकेश सोनी, मनीष नुवाल, प्रा वि के प्रधानाध्यापक कैलाश शर्मा, शा.शि. गोपाल प्रजापति, अन्नु स्वर्णकार अध्यापक दलीचन्द खटीक, हनुमान सहाय, सचिन चावला पंचायत शिक्षक मेवाराम गूर्जर विद्यालय परिवार के सुरेश कुमार सर्वा, हरिशंकर शर्मा, अल्पना पायक, सोनल मोहड़, नारायण लाल कुमावत समेत कई उपस्थित थे। संचालन हरिशंकर शर्मा ने किया।

मोक्षदा एकादशी पर काशीपुरी धाम में भव्य श्री श्याम संकीर्तन

काशीपुरी धाम में होने वाला संकीर्तन भक्तों के लिए अलौकिक अनुभव लेकर आता हैः सुरेश पोद्धार

सुधीर पारीक के भजनों पर भाव-विभोर हुए भक्त, मंदिर प्रांगण को फूलों, दीपों और आकर्षक लाइटिंग से सजाया

स्मार्ट हलचल

भीलवाडा। पावन मोक्षदा एकादशी और गीता जयंती के अवसर पर काशीपुरी धाम स्थित श्री श्याम मंदिर में आयोजित संगीतमय श्री श्याम संकीर्तन भजन संध्या में शहर भर से आए श्रद्धालुओं ने गहरी भक्ति के साथ सहभागिता की। कार्यक्रम में भजन गायक सुधीर पारिक (भीलवाड़ा) ने जैसे ही अपनी सुमधुर स्वर-लहरियों में श्याम भक्ति के सुर छेड़े, पूरा पंडाल 'श्याम3श्याम3' के अलख से गूंज उठा। भक्तजन देर रात तक भजनों में डूबे रहे और मंदिर परिसर में दिव्य आध्यात्मिक वातावरण बना रहा। संकीर्तन की शुरुआत बड़े हर्षोल्लास के साथ हुई, जिसमें सुधीर पारिक ने 'तेरी मैया को मैं भूल न पाऊँ गिरधर श्याम', 'मेरा अंबर भी श्याम तेरा, मेरा घर भी श्याम तेरा', और 'श्याम तेरा दीवाना3 दर पे तेरे आना' जैसे लोकप्रिय भजन प्रस्तुत किए, जिन पर भक्त झूम उठे और कई श्रद्धालुओं ने मोबाइल फ्लैशलाइट जलाकर पूरा वातावरण उजाला और भक्ति से भर दिया। अध्यक्ष सुरेश पोद्धार ने बताया कि मोक्षदा एकादशी का विशेष महत्व शास्त्रों में वर्णित है क्योंकि इसी दिन कुरुक्षेत्र में भगवान श्रीकृष्ण ने मोहग्रस्त अर्जुन को श्रीमद्भगवद्गीता का दिव्य ज्ञान प्रदान किया था, इसलिए इस तिथि को गीता जयंती भी कहा जाता है। उन्होंने बताया कि काशीपुरी धाम में हर वर्ष होने वाला यह संकीर्तन भक्तों के लिए अलौकिक अनुभव लेकर आता है और इस बार भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे। मंदिर प्रांगण को फूलों, दीपों और आकर्षक लाइटिंग से सजाकर भक्ति-मय दृश्य निर्मित किया गया था। मीडिया प्रभारी पंकज अग्रवाल ने बताया कि संकीर्तन का लाइव प्रसारण सोशल मीडिया के माध्यम से भी किया गया, जिसे हजारों लोगों ने देखा। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्यकृभक्ति, सेवा, सद्भाव और सकारात्मक ऊर्जाकृपूरी तरह सफल रहा। समिति द्वारा पानी, प्रसाद, पार्किंग और सुरक्षा की उत्कृष्ट व्यवस्थाएँ की गई थीं, जिससे श्रद्धालु निर्बाध रूप से संकीर्तन का आनंद ले सकें। मोक्षदा एकादशी होने के कारण दिनभर मंदिर में गीता पाठ, विष्णु पूजा, दीपदान और मंत्रजाप चलता रहा। श्रद्धालुओं ने भगवान श्रीश्याम के समक्ष अपनी मनोकामनाएँ व्यक्त की और आध्यात्मिक शांति का अनुभव किया। संकीर्तन के अंत में आरती के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और प्रसाद वितरण किया गया। कार्यक्रम का सुंदर संचालन श्री श्याम सेवा समिति (रजि.) काशीपुरी धाम, भीलवाड़ा द्वारा किया गया। जिसमें सभी पदाधिकारी और युवाओं ने सहयोग किया। भक्तजन देर रात तक श्याम नाम में डूबे रहे और मोक्षदा एकादशी की इस पावन रात को दिव्य स्मृति बनाकर लौटे।

खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स-2025: फतहसागर झील की लहरों संग उठा खेल का रोमांच

कायकिंग-कैनाईंग स्पर्धा शुरू, देश भर आए खिलाड़ियों ने दिखाया दमखम

स्मार्ट हलचल| उदयपुर

उदयपुर की शान और विश्व पर्यटन मानचित्र पर विशिष्ट पहचान रखने वाली विश्व प्रसिद्ध फतहसागर झील मंगलवार को उस वक्त खेलों के साहसिक रोमांच की साक्षी बनी, जब खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स 2025 के तहत कायकिंग एवं कैनाईंग प्रतियोगिता प्रारंभ हुई। अरावली की गोद में स्थित फतहसागर की लहरों पर जब रंग-बिरंगी कायक और केनाईंग उतरीं, तो नजारों ने आयोजन को अंतरराष्ट्रीय स्तर की गरिमा प्रदान कर दी।

जिला खेल अधिकारी डॉ महेश पालीवाल ने बताया कि प्रतियोगिता के पहले दिन 10 मुकाबले हुए। इसमें देश भर से आए खिलाड़ियों ने दमखम दिखाया।

संभागीय आयुक्त सुश्री प्रज्ञा केवलरमानी, युडीए आयुक्त एवं आयोजन के नोडल अधिकारी राहुल जैन एवं बड़गांव उपखण्ड अधिकारी लतिका पालीवाल सहित अतिथियों ने विजेता खिलाड़ियों को पारितोषिक एवं मैडल प्रदान कर प्रोत्साहित किया। राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद के खेल प्रबंधक नरेन्द्र भूरिया, राजस्थान कायकिंग एवं केनाईंग संघ के अध्यक्ष भगवान वैष्णव, सचिव दिलीप सिंह चौहान, राजसमंद जिला खेल अधिकारी धरमदेव सिंह सहित करतार सिंह, अजय अग्रवाल, मुकेश शर्मा एवं परिषद के प्रशिक्षक तथा बड़ी संख्या में खेलप्रेमी उपस्थत रहे।

यह रहे परिणाम

कायकिंग एवं केनाईगिंग (1000 मीटर) पुरूष वर्ग के तहत कायकिंग-1 में मोहनलाल सुखाड़िया यूनिवर्सिटी के वनेश शर्मा को स्वर्ण पदक, युनिवर्सिटी ऑफ केरल के अलान रेजी को रजत पदक तथा लवली प्रोफेशनल युनिवर्सिटी पंजाब के विशाल गोस्वामी को कांस्य पदक मिला। केनाईग-1 में यूनिवर्सिटी ऑफ केरल के सवीओ को स्वर्ण, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़ के विशु कुमार को रजत तथा लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, पंजाब के राजीव कुमार को कांस्य मिला। कायकिंग-2 में गुरूनानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर के मयंक शर्मा व सचिन को स्वर्ण, चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी के साहिल देसवाल व देव चौधरी को रजत तथा गुरु काशी यूनिवर्सिटी के सौरभ कुमार व सुमीत धाबास को कांस्य पदक मिला। केनाईग-2 में चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी के लीसराम पिरमबम व बोरीस सिंह को स्वर्ण, यूनिवर्सिटी ऑफ केरल के हर्ष शर्मा व प्रिंस को रजत तथा यूनिवर्सिटी ऑफ केरल के आदर्श गोस्वामी व सविओ जोशी को कांस्य पदक मिला।

इसी प्रकार महिला वर्ग कायकिंग-1 में चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी की पूजा ने स्वर्ण, बरकतुल्ला यूनिवर्सिटी की निधि ने रजत व पंजाब यूनिवर्सिटी की कुलसुम ने कांस्य पदक जीता। केनाईग-1 में चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी की मोरंथाम सोफा देवी को स्वर्ण, पंजाब यूनिवर्सिटी की निधि को रजत तथा शिवाजी यूनिवर्सिटी, कोल्हापुर की प्रिया मारुति चावन को कांस्य पदक मिला। कायकिंग-2 में चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी की कानसेम येफाटोम्बी देवी व आंचल कचरु सहारे को स्वर्ण, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़ की नंदनी व अल्पना साहनी को रजत व बरकतुल्ला यूनिवर्सिटी की निधि व अंजली चंदना को कांस्य, केनाईग-2 में चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी की मोरंथाम सोफा देवी व सलम चौबा देवी को स्वर्ण, गुरु काशी यूनिवर्सिटी की रिया व रितिका को रजत एवं कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी की सलोनी कुमारी व मीनाक्षी को कांस्य तथा कायकिंग-4 चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी की आंचल कचरु सहारे, मोनिका गढ़वाल, कोन्सी देवी, पूजा को स्वर्ण, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़ की कुलसुम, पुष्पा यादव, नंदनी, अल्पना साहनी को रजत तथा शिवाजी यूनिवर्सिटी, कोल्हापुर की प्रानली प्रमोद कोपारडी, निकिता मागदुम, आरती यादव, सुहाना जामदार को रजत पदक मिला।

खेल-पर्यटन को नई उड़ान

जिला खेल अधिकारी डॉ. महेश पालीवाल ने बताया कि विश्व प्रसिद्ध फतहसागर झील जैसे प्राकृतिक और सांस्कृतिक धरोहर स्थल पर प्रतियोगिता होने से खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय अनुभव मिला है तथा उदयपुर खेल-पर्यटन के नए केंद्र के तौर पर उभर रहा है। उन्होंने बताया कि आगामी दिनों में कायकिंग एवं कैनाईंग मुकाबले प्रातः 8 बजे से निरंतर जारी रहेंगे।

विराटनगर में मिठाई की दुकान से 3,200 रुपए चोरी

स्मार्ट हलचल | विराटनगर

विराटनगर नगर पालिका क्षेत्र के भीमसेन चौक स्थित जैन मंदिर के पास एक मिठाई की दुकान से नकदी चोरी होने का मामला सामने आया है। दुकानदार हीरालाल सैनी ने थाना विराटनगर में रिपोर्ट दर्ज करवाते हुए बताया कि पिछले कुछ दिनों से एक युवक अखबार पढ़ने के बहाने उसकी दुकान पर आता रहा था। दुकानदार के अनुसार, सोमवार सुबह करीब 6 बजे युवक जिंदल पुत्र मदनसिंह राजपूत उसकी दुकान पर बैठा अखबार पढ़ रहा था। इसी दौरान हीरालाल दूध देने बाहर चले गए। जब वे लौटे तो जिंदल दुकान से गायब मिला और गल्ला खुला हुआ था। गल्ला चेक करने पर उसमें रखे 3,000 रुपये नकद और करीब 200 रुपये की चिल्लर गायब मिले। हीरालाल ने आसपास पूछताछ की तो पड़ोसियों ने बताया कि गहरे हरे रंग की शाल ओढ़े जिंदल ही दुकान पर बैठा था और संदिग्ध रूप से इधर-उधर ताकझांक कर रहा था। दुकानदार ने कहा कि उसके जाने व आने के बीच दुकान पर कोई अन्य व्यक्ति नहीं आया, ऐसे में उन्हें पूरा शक है कि युवक जिंदल ने ही गल्ले से रुपये चोरी किए हैं।

स्कूल हेल्थ एंड वैलनेस प्रोग्राम: जयपुर में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशाला में उदयपुर जिले की हुई सराहना

उदयपुर की एसआरजी तोषी सुखवाल हुई सम्मानित

स्मार्ट हलचल| उदयपुर

आज मंगलवार को दुर्गापुरा जयपुर स्थित होटल आर्किड में स्कूल हेल्थ एंड वैलनेस प्रोग्राम पर आयोजित राज्य स्तरीय समीक्षा योजना एवं कन्वर्जेंस कार्यशाला में जिले में कार्यक्रम के बेहतर संचालन के लिए डाइट उदयपुर की सराहना की गई।

डाइट उदयपुर की ओर से कार्यशाला में शामिल हुए प्रधानाचार्य शीला काहाल्या के अनुसार आरएससीईआरटी उदयपुर द्वारा सत्र पर्यंत स्कूल हेल्थ एंड वैलनेस प्रोग्राम के आयोजन की समीक्षा के लिए आयोजित इस कार्यशाला में उदयपुर जिले की ओर से गिर्वा ब्लॉक के राजकिय सिंधी भाषाई उमावि प्रताप नगर उदयपुर की हैल्थ एम्बेसडर एवं एसआरजी तोषी सुखवाल ने उनके विद्यालय के साथ साथ सम्पूर्ण उदयपुर जिले में कार्यक्रम के क्रियान्वयन की प्रक्रिया को पीपीटी प्रेजेंटेशन के माध्यम से प्रदर्शित किया।

इस प्रस्तुति पर आरएससीईआरटी से स्टेट प्रोग्राम कॉर्डिनेटर डॉ आभा शर्मा तथा सीकों डिक्कॉन संस्था प्रतिनिधि ललिता आमेटा ने हैल्थ एंबेसेडर के इन प्रयासों की प्रशंसा की। इस अवसर पर एसआरजी तोषी सुखवाल के प्रदर्शित विशिष्ट कार्यों को राज्य स्तर पर पहचान मिली और इनके व इनकी टीम के प्रयासों से उदयपुर के विभिन्न विद्यालयों की उपलब्धियों यथा प्रशिक्षण,पीयर पायलटिंग इन गवर्मेंट स्कूल्स,पीयर पायलटिंग इन टीआरएस एवं ईएमआरएस पीयर पायलटिंग,सीएचओ ट्रेनिंग,मदरसा टीचर्स ट्रेनिंग कार्यक्रमों में निभाई जा रही भूमिका हेतु भूरी भूरी प्रशंसा करते हुए राज्य स्तर पर सम्मानित किया गया।

आयोजकों द्वारा डॉ आभा शर्मा ,एनएचएम से डॉक्टर एसएल गुप्ता ,यूएनएफपीए स्टेट हेड दीपेश गुप्ता एवं सोशल जस्टिस डिपार्टमेंट के एडिशनल डायरेक्टर एस आर मीणा की उपस्थिति में तोषी सुखवाल को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर उदयपुर के अतिरिक्त दौसा, सीकर और धौलपुर जिलों के एसआरजी को भी श्रेष्ठ कार्यों के लिए सम्मानित किया गया

उदयपुर जिले की विशेष उपलब्धि जो सराहना की पात्र रही थी रही वह ग्राउंड लेवल पर जो बेस्ट प्रैक्टिस हो रही है उनके वीडियो और इसके अलावा रेजिडेंशियल स्कूलों के लिए किए जा रहे पीयर पायलटिंग मदरसा के साथ ट्रेनिंग प्रोग्राम और सीएचओ ट्रेनिंग प्रोग्राम रहे।

देवास परियोजना-तृतीय एवं चतुर्थ चरण को मिली स्टेज- 1 स्वीकृती

उदयपुर को मिला ऐतिहासिक पेयजल संबल, रंग लाए पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया के प्रयास

स्मार्ट हलचल| उदयपुर

उदयपुर शहर की भावी पीढ़ियों की पेयजल सुरक्षा की दिशा में एक ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज हुई है। देवास-तृतीय एवं देवास-चतुर्थ जैसी बहुप्रतीक्षित और महत्वाकांक्षी जलापूर्ति परियोजनाओं को केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली से स्टेज-1 स्वीकृति मिल गई है। यह सफलता केवल प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि पंजाब के माननीय राज्यपाल श्री गुलाबचंद कटारिया के निरंतर प्रयासों, उनकी व्यक्तिगत रुचि और केंद्र सरकार के उच्च स्तर पर सशक्त पैरवी का प्रत्यक्ष परिणाम मानी जा रही है।

राज्यपाल कटारिया ने उदयपुर की जल समस्या को प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर की प्राथमिकता बनाते हुए इस परियोजना की लगातार मॉनिटरिंग की। उन्होंने केंद्रीय मंत्रियों और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ कई स्तरों पर संवाद कर वर्षों से लंबित वन स्वीकृति की प्रक्रिया को गति दी। यह उन्हीं के प्रभावी हस्तक्षेप का परिणाम है कि स्वीकृति अपेक्षाकृत कम समय में प्राप्त हो सकी।

जल संसाधन विभाग उदयपुर के अधीक्षण अभियंता मनोज जैन ने बताया कि देवास-तृतीय परियोजना के अंतर्गत गोगुन्दा तहसील के नाथियाथल गांव के समीप 703 एमसीएफटी क्षमता का बांध निर्मित किया जाएगा। यहां से 10.50 किलोमीटर लंबी सुरंग द्वारा जल को देवास-द्वितीय (आकोड़दा बांध) तक लाया जाएगा और फिर मौजूदा प्रणाली से पिछोला झील तक पहुंचाया जाएगा। वहीं देवास-चतुर्थ परियोजना के तहत अम्बा गांव के पास 390 एमसीएफटी क्षमता का बांध बनेगा, जिसे 4.15 किलोमीटर की सुरंग से देवास-तृतीय से जोड़ा जाएगा।

इन दोनों परियोजनाओं के पूर्ण होने के बाद उदयपुर शहर को आने वाले कई दशकों तक निर्बाध पेयजल उपलब्ध हो सकेगा। साथ ही पिछोला, फतहसागर और स्वरूपसागर जैसी ऐतिहासिक झीलों का जलस्तर स्थायी रूप से बनाए रखने में मदद मिलेगी। इससे न केवल पर्यावरणीय संतुलन मजबूत होगा, बल्कि पर्यटन और स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी नया जीवन मिलेगा।

स्टेज वन स्वीकृति मिलने पर राज्यपाल श्री गुलाबचंद कटारिया ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि उदयपुर की झीलें केवल जलस्रोत नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं। इन परियोजनाओं से पेयजल संकट का स्थायी समाधान होगा और झीलों की ऐतिहासिक गरिमा भी सुरक्षित रहेगी। उन्होंने इस कार्य में सहयोग देने के लिए केंद्र सरकार और संबंधित अधिकारियों का आभार भी व्यक्त किया।

एक ही रात में 12 कुओं से लाखों की केबल चोरी, ग्रामीणों में रोष

स्मार्ट हलचल

आकोला। किशनपुरा गांव में चोरों ने बीती रात आतंक मचाते हुए एक साथ 12 किसानों के कुओं से लाखों रुपये की बिजली केबिल काट ले गए। चोरी की यह वारदात बरूंदनी सर्किल पुलिस चौकी क्षेत्र में हुई, जहां एग्रीकल्चर उपयोग में लगाई गई केबल मुख्य रूप से निशाने पर रही। पहले भी इसी गांव से इस तरह की घटना हो चुकी है लेकिन पुलिस कार्यवाही शून्य रही।

भारतीय किसान संघ के जिला राजस्व प्रमुख पुष्कर लाल मीणा ने बताया कि बरूंदनी क्षेत्र में केबल, वाहन, ट्रांसफार्मर और मवेशी चोरी की वारदातें तेजी से बढ़ी हैं। ग्रामीणों की नींद खराब कर रही ये वारदातें क्षेत्र में कानून-व्यवस्था पर सवाल उठा रही हैं।

पीड़ित किसानों में सोहनलाल धाकड़, माधुलाल धाकड़, भगवानलाल धाकड़, बालु धाकड़, हरिओम दरोगा, शांतिलाल सुनार, रामनारायण सोमाणी, छितर धाकड़, नन्दलाल धाकड़ व कन्हैयालाल धाकड़ शामिल हैं। चोर 200 से 550 फीट तक केबल काटकर ले गए। इससे खेतों में सिंचाई व्यवस्था बाधित हो गई है। किसानों का कहना है कि पूर्व में 22 जुलाई को भी इसी प्रकार अज्ञात चोरों ने केबल चोरी की थी, जिसकी रिपोर्ट थाना बिगोद में दर्ज कराई गई थी, लेकिन आज तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई।

सोहनलाल धाकड़ ने भीलवाड़ा पुलिस अधीक्षक, पुलिस उप अधीक्षक मांडलगढ़ और थाना प्रभारी बिगोद को लिखित शिकायत भेजकर चोरी का खुलासा करने व चोरों को शीघ्र गिरफ्तार करने की मांग की है। किसानों ने जल्द कार्रवाई नहीं होने पर आंदोलन की चेतावनी दी है।

युथ कांग्रेस ने लॉन्च किया युवा कांग्रेस का संकल्प अभियान

स्मार्ट हलचल| चित्तौड़गढ़

02 दिसंबर 2025 को युवक कांग्रेस चित्तौड़गढ़ द्वारा प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन कर युवक कांग्रेस के 100 दिन के संकल्प अभियान, हर घर तक कि शुरुआत करी ।

युथ कांग्रेस प्रदेश संयोजक दीपक सिंह राठौड़ ने बताया कि युथ कांग्रेस उदयपुर संभाग के नवनियुक्त संभाग प्रभारी राहुल खान के मुख्य आतिथ्य में युथ कांग्रेस चित्तौड़गढ़ ने अपने 100 दिन के विशेस अभियान कि शुरुआत कि।

जिलाध्यक्ष देवी लाल मेघवाल कि अध्यक्षता में आयोजित इस प्रेस कॉन्फ्रेंस में उदयपुर संभाग प्रभारी राहुल खान ने मीडिया को संबोधित करते हुए बताया कि युथ कांग्रेस आगामी 100 दिन तक पूरे जिले ओर संभाग में एक विशेस अभियान युवा कांग्रेस का संकल्प, हर तक कि शुरुआत कि।

युथ कांग्रेस चित्तौड़गढ़ जिला प्रभारी प्रदीप कुमार मीणा ने बताया कि इस अभियान के माध्यम से यूथ कांग्रेस कि प्रदेश सरकार से नो प्रमुख मांगे हैं, इन मांगो में पत प्रक्रिया के माध्यम से वोट के खिलाफ, बढ़ते हुए नशे से युवाओं को बचाने हेतु युवाओं का युद्ध ड्रग्स के विरुद्ध, बेरोजगारी के विरोध में, किसान को पूरे प्रदेश में हो रही खाद, बीज ओर पेस्टीसाइड कि कमी के विरोध में, महिला सुरक्षा के लिए, बिजली कि अव्यवस्था, पानी के संकट, बढ़ती हुई महंगाई, सड़के ओर बुनियादी ढांचे, किसानों कि कर्ज माफ़ी प्रमुख मुद्दे हैं जिनको लेकर पूरे प्रदेश में ओर जिले में बूथ लेवल तक अभियान चलाकर डोर टू डोर जनता को जागृत करते हुए लड़ाई लड़ी जाएगी। इस दौरान राहुल खान, उदयपुर संभाग प्रभारी, जिला प्रभारी प्रदीप कुमार मीणा जिलाध्यक्ष देवी लाल मेघवाल, प्रदेश सचिव युवराज श्रीमाली, आशाराम गाडरी, प्रदेश संयोजक दीपक सिंह राठौड़,प्रदेश सचिव चक्षु शर्मा, जिला उपाध्यक्ष नितिन वर्मा, महेंद्र छापरवाल, रामेश्वर माली, प्रदेश सचिव रियाज खान, जिला महासचिव अकरम अली, किशन खटीक, जिला सचिव मनीष सुथार, निंबाहेड़ा विधानसभा अध्यक्ष जसवंत आंजना, कपासन विधानसभा अध्यक्ष वीपी सिंह नरधारी, बड़ी सादड़ी विधानसभा अध्यक्ष गोपाल जनवा, चित्तौड़गढ़ विधानसभा अध्यक्ष छत्रपाल सिंह,उपाध्यक्ष शैलेन्द्र सिंह चुंडावत, महासचिव राहुल शर्मा पिंटू खटिक, भगवती लाल खटीक, बेगू विधानसभा उपाध्यक्ष रामेश्वर अहीर, रवि जायसवाल, भेरू लाल मेघवाल, राहुल सिंह सोलंकी, राजकुमार जायसवाल, विकास धाकड़ आदि कार्यकर्ता ओर पदाधिकारी मौजूद रहे।

शिल्पग्राम उत्सव 2025 हेतु स्टॉलों की खुली निलामी आज से

स्मार्ट हलचल| उदयपुर

पश्चिम क्षेत्र सांस्कतिक केन्द्र, उदयपुर द्वारा आयोजित शिल्पग्राम उत्सव - 2025 हेतु शिल्पग्राम परिसर में खाने के व्यंजन/फूड स्टॉल, आईस्क्रीम आदि स्टॉलों की खुली बोली द्वारा निलामी शिल्पग्राम परिसर में की जावेगी।

पश्चिम क्षेत्र सांस्कतिक केन्द्र, उदयपुर केन्द्र निदेशक फुरकान खान ने बताया कि खाने के व्यंजन/फूड स्टॉल की खुली निलामी दिनांक 3 दिसम्बर 2025 को, आईस्क्रीम, ज्यूस स्टॉल व गन्ने का रस, गुड, बैल चालित चरखिया तथा शिल्पग्राम चौपाल ढाबा दि. 4 दिसम्बर 2025 को तथा खुरजा पोट्री, कारपेट, सहारनपुर लकड़ी फर्निचर की खुली निलामी 5 दिसंबर 2025 को शिल्पग्राम परिसर में प्रातः 11 बजे से आयोजित होगी।

इसके अलावा पारंपरिक भोजन हेतु उचित दरों वाली 5 स्टॉलों के लिए तथा शिल्पग्राम उत्सव के दौरान ऊंट सवारी हेतु प्रार्थना पत्र 8 दिसंबर 2025 तक बंद लिफाफे में कार्यालय भिजवा सकते है।

रोजगार कौशल एवं प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का समापन

स्मार्ट हलचल| उदयपुर

राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय उदयपुर में राज्य सरकार के 'राइजिंग राजस्थान अभियान' के तहत महाविद्यालय के कैंपस प्लेसमेंट एवं कैरियर काउंसलिंग सेल के तत्वावधान में महिंद्रा एंड महिंद्रा समूह के नांदी फाउंडेशन के सहयोग से रोजगार कौशल एवं प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का समापन हुआ । इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में हसीना चक्की वाला, सीईओ क्वालिटी मार्बल एक्सपोर्ट्स एवं कोषाध्यक्ष यूसीसीआई उपस्थित थी। उन्होंने छात्राओं से कहा कि आज का समय ए आई और उद्यमिता का है। छात्राएं स्वयं का अध्ययन प्रारंभ करें और रोजगार के लिए एआई में कुशलता हासिल करें। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्राचार्य प्रो. दीपक माहेश्वरी ने छात्राओं से कहा कि प्रशिक्षण सीखने के बाद उसका अभ्यास जारी रखें । कार्यक्रम में रोजगार प्रकोष्ठ के प्रभारी प्रो. अशोक सोनी ने छात्राओं के लिए इस प्रशिक्षण की उपयोगिता बताई। कार्यक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त 41 छात्राओं को महिन्द्रा फाउंडेशन के द्वारा प्रमाणपत्र वितरित किए गए, प्रशिक्षण में श्रेष्ठ रही तीन छात्राओं सादिया बानो, नंदनी पालीवाल और राजबाला मेहावत को पुरस्कृत किया गया । प्रशिक्षण कार्यक्रम को लेकर सिमी खान और कृष्णा ने फीडबैक दिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम की संयोजक शालिनी दुबे कार्यक्रम का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. साक्षी चौहान ने किया। इस अवसर पर रोजगार परामर्श प्रकोष्ठ के सदस्य डॉ. शुभ्रा तिवारी, डॉ. अनुपम , डॉ. अंजु बेनीवाल और डॉ मीनाक्षी माहुर सहित बड़ी संख्या में छात्राएं उपस्थित थी।

शक्करगढ़ में उमड़ा श्रद्धा का सागर, स्वामी अमराव जी महाराज के प्रथम निर्वाण महोत्सव का दिव्य समापन

स्मार्ट हलचल

शक्करगढ़। श्री संकट हरण हनुमत धाम शक्करगढ़ में ब्रह्मलीन संत स्वामी अमराव जी महाराज के प्रथम निर्वाण महोत्सव के अंतर्गत चल रहे श्रीमद्भागवत कथा एवं दिव्य संत समागम का भव्य समापन मंगलवार को उनकी प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा के साथ श्रद्धा और भक्ति की अपार लहरों के बीच संपन्न हुआ। पूरे मंदिर परिसर में सुबह से ही भक्तों का रेला उमड़ पड़ा, मानो पूरा क्षेत्र अध्यात्म और आस्था की अविरल धारा में स्नान कर रहा हो।

मंगलवार को वृंदावन के सुप्रसिद्ध आचार्य पंडित मुकेश शास्त्री के वैदिक मंत्रोच्चार और शास्त्रोक्त विधि-विधान के मध्य प्राण-प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। अनुष्ठान के दौरान वातावरण में गूंजते मंत्रों, शंखनाद और ढोल-नगाड़ों की ध्वनि ने माहौल को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। सैकड़ों की संख्या में उपस्थित महिला-पुरुष श्रद्धालु भाव-विभोर होकर 'सदुरु भगवान की जय' के नारों से पूरे परिसर को गुंजायमान करते रहे।

प्राण-प्रतिष्ठा के पश्चात कथा स्थल पर विश्राम दिवस की कथा आरंभ हुई, जिसमें महामंडलेश्वर आचार्य स्वामी जगदीश पुरी जी महाराज ने श्रीमद्भागवत कथा के अंतिम दिवस के प्रमुख प्रसंगों का रसपूर्ण वर्णन किया। उन्होंने कहा कि भागवत कथा का अंतिम दिन जीवन के परम सत्यभक्ति, शरणागति और मोक्षकृको समझाने वाला दिवस होता है। स्वामी जी ने उद्धव-शिक्षा, श्रीकृष्ण के द्वारका-त्याग और लीला-समापन के प्रसंगों को भावुक कर देने वाले ढंग से प्रस्तुत करते हुए कहा- 'भगवान श्रीकृष्ण ने देह नहीं छोड़ी, वे अपने धाम को गए। भक्त और भगवान का संबंध कभी समाप्त नहीं होता। सच्चे संत भी शरीर त्यागने पर अपने भक्तों का साथ नहीं छोड़ते। '

उन्होंने उपस्थित श्रोताओं को संदेश देते हुए बताया कि स्वामी अमराव जी महाराज का पूरा जीवन तप, त्याग, सेवा और भक्ति का अनुपम उदाहरण रहा। 'उनके आदर्श, उनके उपदेश और उनका मार्गदर्शन ही उनके अमरत्व का सच्चा प्रतीक है।' कथा के दौरान ब्रह्मचारी नारायण चैतन्य तथा भजन गायक चंद्र मोहन शर्मा द्वारा प्रस्तुत भजनों पर श्रोता झूमते और तालियाँ बजाते नजर आए।

संत समागम में देशभर से पधारे संतों ने अपने दिव्य उपदेशों से श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। हरिद्वार से आए स्वामी दिव्यानंद पुरी महाराज ने अपने आशीर्वचन में कहा- 'मनुष्य जीवन अत्यंत दुर्लभ है और इसका उद्देश्य केवल एक है। परमात्मा की प्राप्ति। यह जीवन भोग-विलास के लिए नहीं, बल्कि प्रभु की भक्ति और उनके गुणगान के लिए मिला है।' उन्होंने श्रीमद्भागवत महापुराण की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि संत-महात्माओं के लिए युगों से यह अमृत-रस का स्रोत रहा है। भागवत के चार अक्षरों में ही सम्पूर्ण जीवन का सार छिपा है। महाराज जी ने कहा कि 'परमात्मा अनादिदृअनंत हैं। मनुष्य का कल्याण उसी में है कि वह परमसत्ता से अपना संबंध जोड़ कर भक्ति को जीवन का प्रधान मार्ग बनाए। 'मुंबई से पधारे महामंडलेश्वर विश्वेश्वरानंद गिरी महाराज ने कहा कि सत्य समय-समय पर अपने आपको प्रकट करता है और संत-महापुरुष उसी सत्य का संदेश मानव समाज को देते हैं। उन्होंने कहा कि 'परमात्मा के अवतार भक्तों की प्रार्थनाओं और संकल्पों के परिणामस्वरूप होते हैं। जैसे भगवान वामन और भगवान कबीरकृजो जगत के कल्याण हेतु अवतरित हुए।' उन्होंने यह भी कहा कि संतों का आगमन साधारण घटना नहीं, बल्कि समाज के पुण्यों का उदय होता है। 'जब जनमानस के सत्कर्म फलित होते हैं, तब संत धरती पर प्रकट होकर मार्गदर्शन करते हैं। '

संत समागम में ओंकारेश्वर के स्वामी सच्चिदानंद गिरी महाराज, स्वामी विजयानंद महाराज, राजेन्द्र पुरी महाराज, स्वामी चित्त प्रकाश महाराज, सर्वचैतन्य महाराज सहित अनेक संत-महापुरुषों की पावन उपस्थिति रही।

आश्रम परिसर में ब्रह्मलीन सदुरुदेव की पावन स्मृति में बुधवार, 3 दिसंबर को प्रातः 10 बजे से 12.30 बजे तक श्रद्धांजलि सभा आयोजित की जाएगी।

आश्रम के मीडिया प्रभारी सुरेंद्र जोशी ने बताया कि इस अवसर पर संत-महात्माओं, समाजसेवियों और भक्तजनों द्वारा पुष्पांजलि अर्पित कर सदुरुदेव के जीवन, सेवाओं और आध्यात्मिक उपदेशों को याद किया जाएगा। श्रद्धांजलि सभा के बाद 12.30 बजे से पुष्पांजलि एवं पूर्णाहुति भंडारा का आयोजन होगा, जिसमें सभी भक्तजन प्रसाद ग्रहण करेंगे।

यूरिया की कालाबाजारी, जमाखोरी रोकने के लिए एक्शन मोड पर सरकार

सीमावर्ती इलाकों में चेक पोस्ट पर बढ़ाई निगरानी, अधिक यूरिया बेचने वालों और बार-बार खरीदने वालों पर रहेगी पैनी नजर

स्मार्ट हलचल| उदयपुर

प्रदेश में यूरिया वितरण को लेकर आ रही खबरों के बीच किसानों को मांग के अनुसार उर्वरक उपलब्ध कराने तथा जमाखोरी व कालाबाजारी पर पूरी तरह अंकुश लगाने के लिए राज्य सरकार एक्शन मोड पर है। सरकार ने इसके लिए विस्तृत कार्ययोजना जारी कर कालाबाजारी और जमाखोरी करने वालों पर सख्त से सख्त कार्यवाही के निर्देश दिए हैं।

चेक पोस्ट पर कड़ी निगरानी

जारी निर्देशों के अनुसार अतिरिक्त निदेशक कृषि को अधीनस्थ जिलों की ब्लॉकवार उर्वरकों की मांग, आपूर्ति एवं उपलब्धता की नियमित जानकारी कृषि आयुक्तालय को भेजने की हिदायत दी गई है। वहीं सीमावर्ती राज्यों से सटे इलाकों में स्थापित चेकपोस्ट और बैंक पोस्ट के माध्यम से कड़ी निगरानी रखने के लिए भी पाबंद किया गया है, ताकि जमाखोरी, कालाबाजारी, टैगिंग, अवैध भंडारण, परिगमन तथा अनुदानित उर्वरकों के गैर-कृषि उपयोग को रोका जा सके। दोषियों के खिलाफ उर्वरक नियंत्रण आदेश, 1985/1986 के तहत सख्त कार्रवाई की जाएगी। जिला-स्तरीय आकलन में सीमावर्ती जिलों में रासायनिक उर्वरकों, विशेषकर यूरिया की खपत में वृद्धि सामने आने पर प्रशासन को अतिरिक्त सतर्क रहने के निर्देश दिए गए हैं। कोटेड यूरिया के औद्योगिक डायवर्जन को रोकने के लिए चेकपोस्ट पर निगरानी और सघन की जाएगी।

वितरण प्रबंधन, निगरानी और शिकायत निस्तारण पर फोकस

राज्य सरकार ने कृषकों को मांग के अनुसार समय पर और सहजता से उर्वरक उपलब्ध कराने के साथ-साथ जमाखोरी व कालाबाजारी पर पूरी तरह अंकुश लगाने के लिए सख्त दिशा-निर्देश जारी किए हैं। प्रमुख शासन सचिव, कृषि एवं उद्यानिकी मंजू राजपाल ने सभी प्रदेश के सभी कृषि अधिकारियों को उर्वरक वितरण के उचित प्रबंधन, निगरानी और शिकायत निवारण को लेकर जारी कार्ययोजना को प्रभावी ढंग से लागू करने के निर्देश दिए हैं।

खुदरा विक्रेताओं पर विशेष जोर

सभी उर्वरक विक्रय केंद्रों पर मूल्य सूची, प्राधिकार पत्र और उपलब्ध स्टॉक का स्पष्ट प्रदर्शन अनिवार्य किया गया है। प्रत्येक कार्यालय में स्थापित उर्वरक कंट्रोल रूम को और सक्रिय करते हुए, किसान कॉल सेंटर एवं सीधे प्राप्त शिकायतों का त्वरित निस्तारण कर उसका रिकॉर्ड संधारित करने के आदेश दिए गए हैं। कंट्रोल रूम के संबंध में व्यापक प्रचार-प्रसार पर भी जोर दिया जा रहा है।

अधिक व बार-बार खरीदने वालों पर नजर

आईएफएमएस पोर्टल के माध्यम से यूरिया के टॉप खरीददार, बार-बार के खरीददार तथा अधिक यूरिया बिक्री करने वाले रिटेलर चिन्हित कर उनका भौतिक सत्यापन किया जाएगा और दोषी पाए जाने पर कार्रवाई होगी। साथ ही की गई कार्रवाई को पोर्टल पर अपलोड भी किया जाएगा।

वितरण के दौरान व्यवस्था और अनुशासन

उर्वरक विक्रय के समय मनोनीत विभागीय कर्मियों की मौके पर उपस्थिति सुनिश्चित होगी। अधिक भीड़ होने पर टोकन प्रणाली लागू की जाएगी, जिसमें उपलब्ध मात्रा के अनुरूप किसानों को प्राथमिकता से टोकन दिए जाएंगे। एक समय में 20 से अधिक किसानों की उपस्थिति नहीं रहे, यह सुनिश्चित कर शांतिपूर्ण और सुव्यवस्थित वितरण किया जाएगा।

इंगला क्षेत्र में 3 महीने से भटक रही अज्ञात महिला की खुशहाल वृद्धाश्रम ने की सार सम्भाल

स्मार्ट हलचल

शंभूपुरा। लगभग 3 माह से करीब 25 वर्षीय अज्ञात महिला डूंगला के गुमानपुरा गांव में भटक रही दिनांक 30 नवम्बर को डूंगला के स्थानीय समाजसेवक गोपाल शर्मा के सान्निध्य में अस्पताल में ले जाया गया एवं डूंगला पुलिस उपनिरीक्षक अमृतलाल को भी सूचना दी गई इसी दौरान उक्त महिला को डूंगला अस्पताल से चित्तौड़गढ़ जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया तो यह सब घटनाक्रम खुशहाल वृद्धाश्रम की संचालिका को बताया गया।

संचालिका नंदिनी त्रिपाठी ने बताया कि दौरान वह अपने घर कपासन गई थी तो जिस एम्बुलेंस में महिला को लाया गया उसके चालक द्वारा भर्ती करने का अनुरोध करने पर भी उसे भर्ती नहीं किया गया, यह कहकर कि ये अज्ञात है, जानकारी में पता चला कि सोमवार को जब नंदिनी त्रिपाठी व आश्रम टीम से जीवन मेनारिया के साथ अस्पताल पहुंची तो वह महिला गम्भीर स्थिति में पाई गई उसके हाथ सड चुका था मक्खियो के साथ मधुमक्खियों ने भी हाथ पर घर बना लिया था, नंदिनी ने बताया कि इतना होने के बावजूद मेडिकल टीम ने कोई संवेदनशीलता नहीं दिखाई तत्पश्चात नंदिनी ने उसे अपनी जिम्मेदारी से भर्ती करवाया और बहुत कोशिश के बाद डाक्टर भानुप्रताप व राजेश स्वामी से बात कर इलाज शुरु हुआ। फीमेल सर्जिकल वार्ड में कार्यरत महिला स्टाफ और सफाई कर्मचारी ने स्वयं महिला होने के बाबजूद कोई मदद नही की, परंतु वहां के इंचार्ज लोकेश सुथार का आत्मीयता से सहयोग मिला। नंदिनी ने कहा कि उक्त महिला की पहचान अभी तक नही हो पाई है, उसके हाथ पर सपना नाम खुदा हुआ है, पहनावे और भाषा से आस पास के इलाके की लगती है।

अभाविप ने पांच सूत्री मांगों को लेकर पीजी कॉलेज में किया प्रदर्शन

स्मार्ट हलचल | चित्तौड़गढ़

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद चित्तौड़गढ़ के महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोतर महाविद्यालय इकाई द्वारा पांच सूत्री मांगों को लेकर प्रदर्शन किया । इकाई अध्यक्ष शिवाय गुर्जर ने मांगो को बताया जिसमें प्रमुख मांगो में परीक्षा आवेदन शुल्क में राहत प्रदान की जाए , रिवील की फीस कम की जाए, सत्र 2024 2025 के रिवील के अटके हुए रिजल्ट जल्द से जल्द जारी किए जाए । इकाई सचिव हंसराज खटीक ने बताया कि परिणामों में पारदर्शिता रखी जाए जिससे विद्यार्थियों के रिजल्ट ना बिगड़े , एवं आर.एल. की समस्या का समाधान महाविद्यालय से ही हो। इस निमित्त प्रदर्शन में प्रांत कला मंच सहसंयोजक विपुल सिंह राणावत, प्रांत सोशल मीडिया संयोजक राजेश गायरी,भाग संयोजक गणपत मेघवाल, नगर मंत्री अर्पित वैष्णव, नगर कला मंच संयोजक सुमन जाट, आदित्य मेनारिया, धर्मेन्द्र सुखवाल, पवन,गणपत गुर्जर, राहुल मेघवाल, कृष्णपाल सिंह, किरण, कौशल, संजय साहू, अनिल सुखवाल, रोहित, संजय, आशीष, नवीन, नयन सुख, ज्योति रैगर, कुँ. यशराज, देवराज, इशांत, सुनील, संजय, लव आदि कार्यकर्ता उपस्थत रहे।

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन का प्रदेश स्तरीय प्रांतीय अधिवेशन 14 दिसंबर को खाटूश्यामजी में

स्मार्ट हलचल | खाटूश्यामजी/कोटा

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन द्वारा 14 दिसंबर, रविवार को प्रदेश स्तरीय प्रांतीय अधिवेशन का भव्य आयोजन खाटूश्यामजी (जिला सीकर) स्थित श्री श्याम भक्त धर्मशाला, मंडा रोड पर किया जा रहा है। यह महत्वपूर्ण अधिवेशन प्रातः 9 बजे आरंभ होकर दोपहर 3 बजे तक चलेगा। कार्यक्रम के उपरांत सभी अतिथियों और आगंतुकों के लिए भोजन प्रसादी की विशेष व्यवस्था की गई है। अधिवेशन में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के राष्ट्रीय एवं प्रदेश स्तरीय पदाधिकारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहेंगे। इनमें राष्ट्रीय अध्यक्ष गोपाल शरण गर्ग, प्रदेश अध्यक्ष (पूर्वी राजस्थान) गिरीश कुमार गर्ग, प्रदेश महामंत्री (पूर्वी राजस्थान) सन्मति हरकारा, प्रदेश कोषाध्यक्ष (पूर्वी राजस्थान) राजेश कुमार गर्ग, महिला प्रदेशाध्यक्ष आरती गुप्ता, युवा प्रदेशाध्यक्ष नितिन अग्रवाल तथा प्रदेश प्रवक्ता महेंद्र गर्ग प्रमुख रूप से शामिल होंगे। इनके साथ अनेक वरिष्ठ सदस्य भी अपनी उपस्थिति से आयोजन की शोभा बढ़ाएंगे। अधिवेशन में अतिथियों के सम्मान के साथ पिछली बैठक की पुष्टि की जाएगी तथा अध्यक्षीय उद्बोधन के माध्यम से आगामी कार्ययोजना और रणनीतियों पर चर्चा होगी। सम्मेलन के स्वर्णिम महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में प्रस्तावित विभिन्न कार्यक्रमों की रूपरेखा पर विशेष विमर्श होगा। साथ ही राजनीति में अग्रवाल समाज की प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए युवाओं और महिलाओं को अधिक संगठित, जागरूक और सक्रिय बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए जाएंगे। कोटा से भी बड़ी संख्या में प्रतिनिधि अधिवेशन में भाग लेंगे। इनमें अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष हेमराज जिंदाल, प्रदेश (पूर्वी राजस्थान) वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं कोटा जिला चेयरमैन रामगोपाल अग्रवाल, जिलाध्यक्ष चन्द्रप्रकाश सिंघल ,जिला महामंत्री रमेश चन्द्र गोयल, प्रदेश (पूर्वी राजस्थान) मीडिया प्रभारी परमानन्द गोयल सहित अनेक पदाधिकारियों और सदस्यों के शामिल होने की संभावना व्यक्त की गई है। कार्यक्रम में संभागीय स्तर पर अग्रवाल सम्मेलनों के आगामी आयोजनों की रूपरेखा तैयार की जाएगी।

प्रदेश के विभिन्न जिलों, तहसीलों और उपखंड मुख्यालयों पर भगवान अग्रसेन के नाम से चौराहों के निर्माण तथा महत्वपूर्ण मार्गों का 'अग्रसेन मार्ग' के रूप में नामकरण करने के प्रस्तावों पर विचार किया जाएगा। समाज की सांस्कृतिक एकजुटता को सुदृढ़ करने हेतु जिला स्तर पर अग्रवाल कर्मचारियों का सक्रिय संगठन विकसित करने तथा प्रत्येक जिला एवं तहसील मुख्यालय में अग्र भागवत एवं अग्र मंगल पाठ के नियमित आयोजन पर विशेष बल दिया जाएगा। प्रदेश महामंत्री (पूर्वी राजस्थान) सन्मति हरकारा ने बताया कि अधिवेशन की तैयारियों को लेकर प्रदेशभर की टीमें पूरे उत्साह और समर्पण के साथ कार्यरत हैं। कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु स्वागत अध्यक्ष के रूप में अमित चिरयाना (जिला चेयरमैन, सीकर), जिलाध्यक्ष अनिल तोदी, महिला जिलाध्यक्ष किरण खैतान और युवा जिलाध्यक्ष लोकेश हजारिका को महत्वपूर्ण दायित्व सौंपे गए हैं। स्वागत समिति में विष्णु भूत, लक्ष्मीकांत चूड़ीवाला, संदीप बजाज, मणिशंकर खैतान सहित अनेक सक्रिय सदस्य शामिल हैं, जो आयोजन को सफल और यादगार बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। प्रदेश स्तरीय इस प्रांतीय अधिवेशन में प्रदेश सहित देश के विभिन्न भागों से प्रतिनिधि मंडलों के शामिल होने की उम्मीद है। अधिवेशन को लेकर पूरे प्रदेश में उत्साह का वातावरण है और समाजजन इसकी सफलता को लेकर आशान्वित हैं।

बैरवा बने प्रदेश कांग्रेस कमेटी एससी विभाग के पीसीसी सदस्य

स्मार्ट हलचल | चित्तौड़गढ़

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी अनुसूचित जाति विभाग नई दिल्ली राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेंद्र पाल गौतम, कैसी वेणुगोपाल, ऋतिक मकवाना, के.राजू, प्रभारी सुखविंदर सिंह रंधावा, अशोक गहलोत, सचिन पायलट, टीकाराम जूली, गोविंद सिंह डोटासरा के आदेश अनुसार प्रदेश अध्यक्ष ममता भूपेश बैरवा द्वारा राजस्थान के पीसीसी सदस्यों की नियुक्ति दिये जाने के क्रम में पूर्व राज्य मंत्री सुरेंद्र सिंह जाड़ावत की अनुशंसा पर चित्तौड़गढ़ जिले के काफी समय से कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ता के रूप में कार्य कर रहे अखिल भारतीय बैरवा समाज के जिलाध्यक्ष व बैरवा समाज छात्रावास अध्यक्ष रामेश्वर बैरवा के कार्य को देखते हुए उन्हें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने पीसीसी सदस्य की जिम्मेदारी सौंपी गई।

एससी एसटी महासभा संयोजक रतन देव मोहिल रैगर ने बताया राष्ट्रीय और प्रदेश नेतृत्व द्वारा एक छोटे कार्यकर्ता को इतनी बड़ी जिम्मेदारी दिये जाने पर हम आभार और धन्यवाद करते। बाबूलाल बैरवा, मूलचंद बैरवा, रतन लाल, किशन लाल जटिया, रमेश जटिया, चम्पालाल, राजू, जानकी लाल, एडवोकेट सुनील रजक, एडवोकेट चमन लाल, भेरूलाल, बाबूलाल, लादूलाल बैरवा जोधपुरिया, पुष्कर आदि कार्यकर्ताओं ने खुशी जताई।

मांगों के समाधान के लिए शासन सचिवालय में अधिकारियों से प्रतिनिधि मंडल ने मुलाकात की

स्मार्ट हलचल

चाकसू। महिला बाल विकास विभाग में कार्यरत आंगनवाडी कार्यकर्ता, सहायिका, ग्राम साथिनों की प्रमुख मांगों को लेकर अखिल राजस्थान महिला बाल विकास संयुक्त कर्मचारी संघ का प्रतिनिधि मंडल संगठन के संस्थापक संरक्षक छोटीलाल बुनकर के नेतत्व में शासन सचिवालय में विभाग के प्रमुख शासन सचिव भवानीसिंह देथा से मिला जिसमें मानदेय वृद्धि, बजट घोषणा अनुसार सेवानिवृति पर ग्रेच्यूटी भुगतान, गैर आईसीडीएस कार्य नही कराने व किये गये चुनाव कार्य की प्रोत्साहन राशि का भुगतान कराने केलिए निर्वाचन अधिकारियों से मुलाकात की

प्रदेशाध्यक्ष रचना शर्मा ने बताया कि, बीजेपी ने विधान सभा चुनाव घोषणापत्र में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आंगनबाडी कार्मिकों को दिये जाने वाले मानदेय को आधार मानकर13,000 रुपये देने का वादा किया परन्तु राज्य में 5 हजार से 10 हजार रुपये ही कार्मिको को मानदेय दिया जा रहा है। जबकि मध्यप्रदेश में अब 15,000 रुपये मानदेय हो गया है। रचना शर्मा ने बताया कि बजट सत्र से पूर्व जयपुर में मांगो के समर्थन में बड़ी सभा कर सरकार पर नैतिक दबाव बनाया जायेगा।

प्रतिनिधि मंडल में छोटीलाल बुनकर ,रचना शर्मा, कृष्णा वर्मा , माया जाट व राजन सैन उपस्थित रहे।

रीकों की भूमि से प्रशासन ने हटाया अतिक्रमण

स्मार्ट हलचल| लाखेरी

उपखण्ड क्षेत्र के खरायता और रामगंज में वर्ष 2013 में रिको को आवंटित की गई भूमि से जुड़े बहुचर्चित विवाद पर आखिरकार प्रशासन ने सख्त रुख अपनाते हुए बड़ी कार्रवाई की है। करीब दस वर्ष से अटकी इस जटिल फाइल पर मंगलवार को मोहर लगा दी गई, जब राजस्व और पुलिस प्रशासन ने संयुक्त अभियान चलाकर अतिक्रमण हटाया और भूमि का सीमा-ज्ञान (डिमार्केशन) करवाया।

सुबह से लेकर दोपहर तक चला प्रशासनिक अभियान कार्रवाई की शुरुआत मंगलवार सुबह कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच हुई। प्रशासनिक अमले में शामिल रहे इंद्रगढ़ तहसीलदार रामभरोस मीणा,लाखेरी पुलिस उपाधीक्षक नरेंद्र नागर, थाना अधिकारी सुभाष शर्मा, तथा भारी संख्या में पुलिस जाप्ता मौजूद रहा। अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर क्षेत्र की घेराबंदी कराई, राजस्व दस्तावेजों और पुराने रिकॉर्ड का मिलान किया और इसके बाद उन स्थानों पर कार्रवाई शुरू की, जहां पिछले कुछ वर्षों में अवैध कब्जे व निर्माण पाए गए थे।

2013 से अटका था मामला

उद्योगों के लिए रीको द्वारा 2013 में इस भूमि का औद्योगिक विकास के उद्देश्य से अधिग्रहण व आवंटन किया गया था। लेकिन सीमांकन को लेकर हुए विवाद, स्थानीय स्तर पर उठे विरोध, और कुछ लोगों द्वारा किए गए अतिक्रमण के कारण यह भूमि वर्षों तक उपयोग से बाहर पड़ी रही। इस वजह से संभावित उद्योगों की स्थापना रुक गई, क्षेत्रीय रोजगार प्रभावित हुआ,और विकास कार्य अधर में लटके रहे। आज की कार्रवाई को इसी लंबे अवरोध को समाप्त करने की दिशा में ऐतिहासिक कदम माना जा रहा है। अतिक्रमण हटते ही स्पष्ट हुई वास्तविक सीमा राजस्व टीम के निर्देश पर बुलडोज़र की मदद से अवैध कब्जों को हटाया गया। इसके बाद भूमि की वास्तविक सीमा स्पष्ट हुई और अधिकारियों ने पूर्ण पारदर्शिता के साथ पैमाइश कर नई सीमा-ज्ञान रिपोर्ट तैयार करवाई। अधिकारियों का कहना है कि अब पूरी भूमि का वास्तविक क्षेत्र चिन्हित हो चुका है, जिससे आगे की कार्रवाई सुगमता से हो पाएगी।

कार्रवाई देखने उमड़ी भीड़, पुलिस सतर्क

कार्रवाई की सूचना मिलते ही खरायता और रामगंज क्षेत्र के आसपास के सैकड़ों लोग मौके पर पहुंच गए। संभावित तनाव को देखते हुए पुलिस ने पूरे इलाके में अतिरिक्त जाप्ता तैनात रखा। अधिकारियों ने लोगों को शांति बनाए रखने की अपील करते हुए बताया कि यह कार्रवाई पूर्णतया वैधानिक प्रक्रिया के तहत की जा रही है। आगे भी चलेगी निगरानी, दोबारा कब्जा होने पर सख्त कार्रवाई होगी ।तहसील प्रशासन ने बताया कि सीमांकन के बाद अब भूमि के पुनः उपयोग की प्रक्रिया शुरू होगी, रीको को अद्यतन रिपोर्ट भेजी जाएगी, और दोबारा कब्जा या निर्माण की स्थिति में तुरंत कानूनी कार्रवाई की जाएगी। डीएसपी नरेंद्र नागर ने कहा कि प्रशासन किसी भी तरह के अवैध कब्जों के खिलाफ शून्य सहनशीलता की नीति पर काम कर रहा है। क्षेत्रवासियों ने राहत की सांस ली लंबे समय से विवाद के कारण परेशान स्थानीय निवासियों ने इस कार्रवाई का स्वागत किया। ग्रामीणों का कहना है कि वर्षों से रुका औद्योगिक विकास अब गति पकड़ सकेगा और क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर खुलेंगे।

लाखेरी उपखंड के खरायता व रामगंज की रिको भूमि पर आज की कार्रवाई केवल अतिक्रमण हटाने का अभियान नहीं थी, बल्कि यह उस विकास-योजना को पुनः पटरी पर लाने का प्रयास था, जो एक दशक से अवरुद्ध थी। प्रशासन की इस पहल को क्षेत्र के भविष्य और औद्योगिक विकास के लिए ऐतिहासिक कदम माना जा रहा है।

विधायक ने मंत्री से मिलकर विधानसभा क्षेत्र के नहरो की मरम्मत की मांग रखी

स्मार्ट हलचल

चाकसू। चाकसू विधानसभा क्षेत्र के किसानों को अब अपनी फसलों के लिए पानी एवं खाद की आवश्यकता है। यूरिया खाद के मांग करते हुए किसान सहकारी समितियों एवं क्रय-विक्रय सहकारी समिति के कार्यालय में चक्कर लगाते रहते है। लेकिन उनको यूरिया मांग के अनुसार नहीं मिलने से हताश एवं परेशान हैं। यही हालात फसलों की पिलाई का है। क्षेत्र के शीलकी डूंगरी बांध, चंदलाई बांध, लाखावास बांध, पीपला बांध सहित अन्य जलाशयों से किसानों के खेतों तक पानी की आपूर्ति के लिए निकलने वाली नहरों के हालात खराब हो रहे हैं, जगह जगह क्षतिग्रस्त हो चुकी अथवा लोगों ने अतिक्रमण कर बाधित कर दिया। इन समस्याओं के लेकर चाकसू विधायक रामावतार बैरवा ने राजस्थान सरकार के जल संसाधन विभाग मंत्री सुरेश सिंह रावत से कार्यालय में मिल कर नहरों का सर्वे करवाकर आवश्यक मरम्मत करवाई जाने का आग्रह किया है। इसी क्रम में विधानसभा क्षेत्र में किसानों को पर्याप्त मात्रा में यूरिया खाद की आपूर्ति करवाने के लिए विधायक रामावतार बैरवा राजस्थान सरकार के कृषि एवं उद्यानिकी विभाग मंत्री किरोड़ी लाल मीणा से मिल पर लिखित में पत्र देते हुए शीघ्र कार्यवाही की मांग की। दोनों ही विभागों के मंत्रियों ने विधायक को पर्याप्त सहयोग का विश्वास दिलाया है।

अभिभाषक संस्थान द्वारा 50 लाख रूपये की लागत के निर्माण कार्यो का विधायक आक्या ने किया लोकार्पण

स्मार्ट हलचल

चित्तौड़गढ़। जिला अभिभाषक संस्थान चितौडगढ मंगलवार को वर्ष 2025 में संस्थान द्वारा कराये गये विभिन्न विकास कार्यो का लोकार्पण जिला एवं सेशन न्यायाधीश (कार्यवाहक) अटल सिंह चांपावत व विधायक चन्द्रभान सिंह आक्या व संस्थान अध्यक्ष एसपी सिंह राठौड़, अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश विनोद कुमार बैरवा, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट संतोष कुमार बैरवा, यु.आई.टी. सेक्रेटरी कैलाश गुर्जर के मुख्य आथित्य में राजस्व न्यायालय व नवीन न्यायालय परिसर में लोकार्पण किया।

संस्थान के निर्माण कमेटी संयोजक ओम प्रकाश शर्मा ने बताया कि विधायक चन्द्रभान सिंह आक्या ने वर्ष 2025 की कार्यकारिणी व संस्थान के अध्यक्ष एसपी राठौड़ की पहल पर विधायक ने अधिवक्ताओं व आमजन के पेयजल हेतु दो ट्युबवेल मय मोटर, टंकी लागत करीब चार लाख रूपये तथा पार्किंग हेतु टिन शेड व इंटरलॉकिंग टाइल्स लागत करीब बीस लाख रुपये अधिवक्ताओं व पक्षकारों व आमजन हेतु निशुल्क बिजली सुविधा के लिये विधायक आक्या ने सी.एस.आर.फण्ड के माध्यम से करीब 20 किलो वाट का सोलर संयंत्र लागत करीब पन्द्रह लाख रूपये तथा भराव कार्य लगभग सात लाख रूपये के विकास कार्यो की अनुषंगा करके उक्त सम्पुर्ण कार्य 1 वर्ष के कार्यकाल में पुरा करके आज उनका लोकार्पण किया। इस दौरान संस्थान के सभी अधिवक्तागणों ने हर्ष व्यक्त किया। विधायक आक्या ने कहा संस्थान को पुर्व में भी हर मांग को पुरा करते हुए कई विकास कार्य करवाये ओर भविष्य में भी अधिवक्ताओं की हर मांग को पुरा करने का प्रयास करेगे तथा एडवोकेट प्रोटेक्शन बिल को शीघ्र राजस्थान सरकार से पास करवाने का आश्वासन दिया।

इस दौरान संस्थान के सचिव नरेन्द्र योगी ने बताया कि संस्थान की विभिन्न कमेटीयों कार्यकारिणी, मनोनित कार्यकारिणी, संरक्षक मण्डल, विशिष्ट आमंत्रित सदस्य, निर्माण कमेटी, बीमा कमेटी, मेडिकल कमेटी, स्पोर्ट कमेटी, अनुशासन कमेटी, एन.ओ.सी.कमेटी, महिला दिवस आयोजन कमेटी, संविधान संशोधन कमेटी, राजस्व न्यायालय कमेटी, ए.आई.बी., पोधारोपण, वनभ्रमण, चेम्बर, धार्मिक सांस्कतिक आयोजन, सेमिनार, लिटिकेंट हाल, सम्मान आदि कमेटीयों द्वारा वर्ष भर में उल्लेखनीय, सराहनीय,उत्कृष्ट कार्यो के लिये कमेटीयों के सभी पदाधिकारीयों को विधायक आक्या व संस्थान अध्यक्ष एस पी सिंह राठौड द्वारा प्रशंसा पत्र देकर सम्मान किया।

इस दौरान भाजपा नेता पुर्व उपसभापति भरत जागेटिया, शैलेन्द्र झंवर, अनिल ईनाणी, नवीन पटवारी, संस्थान उपाध्यक्ष अनुराग दाधीच, सचिव नरेन्द्र योगी, संदीप सेठिया, हिमांशु कीर, शुभम सुखवाल, वरिष्ठ अधिवक्ता लक्ष्मीलाल पोखरना, चम्पालाल जाट, महेन्द्रपाल सिंह अरोडा, पुर्व अध्यक्ष महेन्द्र सिंह मेडतिया, ओम प्रकाश शर्मा, प्रदीप काबरा, सावन श्रीमाली, शैलेन्द्र सिंह राव, नरेन्द्र पोखरना, बद्री गिरि गोस्वामी, मुबारिक हुसेन मंसुरी, सुर्यपाल सोलंकी, कृष्णगोपाल व्यास, रमेशचन्द्र दशोरा, शंकर पुरी गोस्वामी, रजनीश पितलिया, गिरीश दीक्षित, महिपाल सिंह, योगेश शर्मा, मालम सिंह पवांर, ललीत लडडा, दिनेश दायमा, दिनेश कुमार मोड, रमेशचन्द्र शर्मा, लोकेश शर्मा, सुमित्र गर्ग, गोपाल जाट, कालू लाल सुथार, भैरूदास वैष्णव, बगदीराम धाकड, रत्नेश कुमार जैन, पुष्पेन्द्र ओझा, राधेश्याम खटीक, कमल प्रजापत, धर्मेन्द्र जैन, सत्यनारायण माली, चंदा सुथार, पुजा मेनारिया, सीमा भारती, भारती गहलोत, यास्मीन शेख, आचल शर्मा, आशा पोखरना, मंजू पीतलीया आदि कई अधिवक्तागण उपस्थित थे।

एसबीआई सेवा संगठन की त्रैमासिक बैठक उदयपुर में सम्पन्न

स्मार्ट हलचल| उदयपुर

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया प्रशासनिक कार्यालय उदयपुर एवं सेवा संगठन की त्रैमासिक बैठक आज सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। बैठक में बैंक प्रबंधन एवं संगठन पदाधिकारियों ने विभिन्न मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की और कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए। बैठक में प्रशासनिक कार्यालय उदयपुर के उपमहाप्रबंधक श्री शशि नाथ मिश्र सहित उदयपुर, बांसवाड़ा, राजसमंद, सिरोही, चित्तौड़गढ़ और भीलवाड़ा के सहायक महाप्रबंधकों ने भाग लिया।

सेवा संगठन की ओर से सर्कल अध्यक्ष अशोक मीणा, उपाध्यक्ष लाला राम मीणा, सचिव पूरनमल मीणा, कोषाध्यक्ष भूपेंद्र कुमार जाटव, ऑर्गनाइजेशन सचिव हरकेश मीणा, ऑर्गनाइजेशन सचिव कमल सिंह खींची, उप कोषाध्यक्ष ऋषि कुमार वाल्मीकि, उदयपुर अंचल अध्यक्ष रवि चौहान, उप महासचिव दीपक मालवी तथा अन्य क्षेत्रीय व प्रशासनिक पदाधिकारी उपस्थित रहे।

बैठक सकारात्मक माहौल में सम्पन्न हुई। संगठन द्वारा उठाए गए सभी मुद्दों पर प्रबंधन ने समाधान प्रस्तुत किए तथा कुछ मामलों में शीघ्र कार्रवाई का आश्वासन दिया। अंत में उपमहाप्रबंधक श्री शशि नाथ मिश्र ने सेवा संगठन के पदाधिकारियों को मोमेंटो प्रदान कर उनका स्वागत एवं सम्मान किया।

प्रसूता की मां ने सीएमएचओ के सामने ही खोल दी चिकित्सालयो में भ्रष्टाचार की पोल

नौ माह के नवजात बच्चे की गर्भ में मृत्यु के मामले में दोषियों के विरुद्ध कार्यवाही की मांग, कांग्रेस नेता चर्मेश शर्मा के साथ सीएमएचओ से मिला पीड़ित परिवार

स्मार्ट हलचल| बूंदी

बूंदी के गागोस गाँव की बेटी नौ माह की गर्भवती खुशबू भील को गत दिनों डिलीवरी के लिये तीन दिन तक हिंडोली राजकीय चिकित्सालय में भर्ती रखने के बाद भी समय पर रेफर नहीं करने से चिकित्सकीय लापरवाही से गर्भ में ही बच्चे की म्रत्यु के मामले में मंगलवार को पीड़ित परिजनो ने राजस्थान बीज निगम के पूर्व निदेशक चर्मेश शर्मा के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल के साथ बूंदी सीएमएचओ ओपी सामर को अपनी पीड़ा बतायी और दोषियों के विरुद्ध कार्यवाही की मांग से लेकर।ज्ञापन दिया।इस दौरान प्रसूता के पति मुकेश भील, मां संतरा भील,जिला कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता जगरुप सिंह रंधावा,युवा कांग्रेस जिला महासचिव अक्षत शर्मा,कैलाश बाई,ओमप्रकाश भील,चेतन रैगर, जसवीर बैरवा, साहिल कुमार ने स्वास्थ्य विभाग की लापरवाही पर सीएमएचओ के विरुद्ध कड़ा आक्रोश जताया।

सीने पर चढ़कर जोर से पेट दबाया

पीड़िता खुशबू भील के पति मुकेश भील व अन्य परिजनों सीएमएचओ से कहा कि पैसे देने के बाद वह नर्स खुशबू के सीने पर चढ़ गयी और जोर-जोर से पेट को दबाने लगी। लेकिन उसे डिलीवरी नहीं हुई और दर्द और ज्यादा बढ़ गया। हरिजन ने बार-बार वहां के स्टाफ से बूंदी रेफर करने की गुहार लगाई लेकिन वे वहां पर ही डिलीवरी करवाने पर अड़े रहे। और तीन दिन भर्ती के बाद जब गर्भ में ही बच्चा मर गया तब जाकर रैफर किया।

समय पर रैफर करते तो बच जाती जान

चिकित्साकीय लापरवाही से नौ माह से गर्भवती महिला के पेट में ही नवजात बच्चे की मृत्यु पर पीड़ित परिजनो ने बूंदी सीएमएचओ से कहा कि परिजनों को मजबूर कर रिश्वत के पैसों के लिये खुशबू भील को तीन दिन तक हिण्डोली में भर्ती रखा गया। उसे समय पर बूंदी रेफर कर दिया जाता तो गर्भ में बच्चे की जान बच जाती। चिकित्सकीय लापरवाही ने गर्भ में ही नौ माह के नवजात बच्चे की जान ले ली।

भ्रष्टाचार की पोल खुली तो बगले झाँकने लगे सीएमएचओ

खुशबू को हिंडोली चिकित्सालय में भर्ती करवाने वाली प्रसूता की बूंदी गागोस निवासी माँ ने सीएमएचओ के समक्ष घटना के बारे में बताते हुये स्वास्थ्य विभाग में भ्रष्टाचार की पोल खोल कर रख दी। सार्वजनिक रूप से भ्रष्टाचार की बात सुनकर सीएमएचओ बगले झांकने लगे। प्रसूता की मां ने सीएमएचओ से कहा कि हिंडोली चिकित्सालय में भर्ती करने के बावजूद उनकी बेटी दर्द से तड़प रही थी और उसका इलाज नहीं किया जा रहा था। सभी परिजन बार-बार इलाज शुरू करने की गुहार लगा रहे थे। वहां पर कार्यरत एक नर्स ने कहा कि पैसे दोगे तो अभी डिलीवरी करवा देंगे। अपनी बेटी और उसके होने वाले बच्चे का जीवन संकट में देखकर मजबूरी में परिजनों ने नर्स को पांच सौ रुपये दिये। नर्स और पैसे मांग रही थी लेकिन परिजनो ने कहा कि अभी ये ही है बाद में और दे देंगे।

अमानवीय लापरवाही बर्दाश्त नही- चर्मेश शर्मा

राजस्थान बीज निगम के पूर्व निदेशक चर्मेश शर्मा ने सीएमएचओ ओपी सामर के समक्ष कड़ा आक्रोश जताते हुये कहा कि चिकित्सालय में लोग जान बचाने के लिये जाते हैं लेकिन वहां पर भ्रष्टाचार के लिये इस तरह गर्भ में ही नवजात बच्चों की जान ली जा रही है यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। शर्मा ने कहा कि इस तरह की अमन में लापरवाही किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं की जायेगी। जगरूप सिंह रंधावा ने उच्च स्तरीय जाँच और दोषियों के विरुद्ध तत्काल कार्यवाही की मांग रखी। ओमप्रकाश भील ने कहा कि सप्ताह भर में पीड़ित परिवार को न्याय नहीं मिला तो सीएमएचओ कार्यालय के बाहर ही आमरण अनशन प्रारंभ किया जायेगा।

किसानों को पर्याप्त यूरिया खाद उपलब्ध करवाए जाने की मांग को लेकर विधायक प्रमोद जैन भाया के नेतृत्व में धरना आज

स्मार्ट हलचल

बारां। अन्ता विधायक प्रमोद जैन भाया द्वारा विगत दिनों किसानों को पर्याप्त मात्रा में यूरिया खाद उपलब्ध करवाए जाने की मांग को लेकर 2 बार धरना दिया जाकर मुख्यमंत्री के नाम पत्र लिखे गए थे, इसके बावजूद यूरिया खाद की पर्याप्त मात्रा में आपूर्ति नही होने पर 03 दिसम्बर 2025 बुधवार को दोपहर 12.00 बजे प्रमोद जैन भाया द्वारा कांग्रेसजनों के साथ चम्बल फर्टिलाइजर्स फेक्ट्री-गढेपान पर धरना दिया जावेगा।

कांग्रेस जिलाध्यक्ष रामचरण मीणा ने बताया कि बारां जिले के किसानों की मांगों को लेकर अन्ता विधायक प्रमोद जैन भाया के नेतृत्व में पूर्व में दिनांक 26 सितम्बर 2025 एवं दिनांक 17 नवम्बर 2025 को जिला कलक्टर कार्यालय पर जिला कांग्रेस कमेटी बारां द्वारा धरना प्रदर्षन किया गया था। विधायक भाया द्वारा मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को पत्र लिखकर बारां जिले के किसानों को पर्याप्त मात्रा में यूरिया खाद आपूर्ति करवाए जाने की मांग की गई थी। लेकिन बडे खेद का विषय है कि बारां जिले के किसानों के लिए माह नवम्बर 2025 के लिए आवंटित कोटे अनुसार अभी भी 5000 मेट्रिक टन यूरिया खाद की आपूर्ति नही हो पाई है जिसके कारण किसान भाईयों एवं उनके परिवार के बुजुर्गो, महिलाओं को रात-रात भर लम्बी-लम्बी लाईनों में यूरिया खाद लेने के लिए खड़ा होना पड़ रहा है और फिर भी खाली हाथ लौटना पड़ रहा है। यूरिया खाद को लेकर बारां जिले में स्थिति इतनी विकट हो गई है कि कभी भी कानून व्यवस्था प्रभावित हो सकती है।

सीएफसीएल-गढेपान यूरिया खाद की काफी बड़ी फैक्ट्री है और यहां से सम्पूर्ण भारत देष में यूरिया खाद की आपूर्ति की जा रही है जबकि इस फेक्ट्री से निकलने वाले दूषित पानी व इसकी दूषित हवा से बारां जिलेवासी भी प्रभावित होते है। इसका दूषित पानी कालीसिन्ध नदी में मिलता है। इसी गढेपान स्थित चम्बल फर्टिलाइजर्स केमिकल फेक्ट्री में आज से करीब 13 वर्ष पहले एक सुबह अचानक अमोनिया गैस का रिसाव होने के कारण अन्ता विधानसभा क्षैत्र के ग्राम खान की झोपडिया में 31 ग्रामीणों की तबीयत बिगड गई। ग्रामीणों को चक्कर आने लगे, आंखों में जलन व उल्टियां होने लगी। ग्रामीण अपने घरों से निकलकर खुले स्थान की ओर भागने लगे थे, जिन्हें जिला चिकित्सालय बारां में भर्ती करवाना पड़ा था। ग्रामीणों की जान पर बन आई थी, इसके बावजूद इस फेक्ट्री से पर्याप्त मात्रा में बारां जिले के किसानों को यूरिया खाद उपलब्ध नही करवाया जाता है। विधायक प्रमोद जैन द्वारा बारां जिले के किसान भाईयों के लिए माह नवम्बर 2025 के लिए आवंटित सम्पूर्ण कोटे की तुरन्त आपूर्ति किए जाने की मांग को लेकर चम्बल फर्टिलाइजर्स केमिकल्स फेक्ट्री-गढेपान के मुख्य द्वार पर दिनांक 03 दिसम्बर 2025 को दोपहर 12.00 बजे कांग्रेसजनों के साथ धरना प्रदर्षन किया जावेगा। मीणा ने जिले के सभी कांग्रेस पदाधिकारियों, जनप्रतिनिधियों एवं कांग्रेसजनों से अधिक से अधिक संख्या में धरने में शामिल होने का आग्रह किया है।

कांग्रेस नेता बैरवा ने नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली के जन्मदिवस पर पुष्प गुच्छ भेंट कर दी शुभकामनाएं

स्मार्ट हलचल

करौली। करौली धौलपुर लोकसभा क्षेत्र के कांग्रेस नेता रवि कुमार बैरवा ने अपने टीम के साथ नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली के जन्म दिवस पर जय कृष्णा क्लब जी.डी. कॉलेज के सामने अलवर पहुंच कर रक्तदान शिविर में रक्तदान कर जूली को पुष्प गुच्छ तथा माला साफा भेंट करने के साथ उन्हें जन्मदिन की बधाई दी एवं उनके स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की कामना की। उन्होंने कार्यकर्ताओं से कांग्रेस पार्टी की रीति-नीति और ईमानदारी से एकजुट होकर कार्य करने का आह्वान किया। साथ ही कहा कि एसआईआर पहली बार नहीं हो रही है। पहले एसआईआर होती थी, तब हमें पता नहीं चलता था। जो गलत नाम है वो कटने चाहिए। लेकिन, जो जायज ना है, वो नहीं कटने चाहिए। उन्होंने कहा कि कोई भी गरीब, दलित, आदिवासी, बुजुर्ग किसी भी कारण से अपने अधिकार से वंचित न हो।भाजपा सरकार धर्म के नाम पर लोगों में नफरत फैलाने का कार्य कर रही है जिससे देश खोखला होता जा रहा है। भाजपा आपस में लड़वाकर अपनी राजनीतिक रोटियां सेक रही है। किसानों के साथ युवाओं का कांग्रेस की ओर रुझान बढ़ गया है। इस दौरान कांग्रेस नेता रवि कुमार बैरवा, समंदर माली, डॉ बुधराम बैरवा सतनारायण जोशी,अभिषेक शर्मा,नांगल पहाड़ी, मुकेश सेन, थानसिंह बैरवा नारोली डांग, सुभाष बैरवा, मोहन मीणा, रामप्रसाद बैरवा,चेतन प्रजापति सहित कई कार्यकर्ताओं ने रक्तदान शिविर में भाग लेकर रक्तदान किया।

भारतीय रेलवे काशी तमिल संगमम 4.0 के लिए तमिलनाडु से बनारस तक सात विशेष ट्रेनें चला रहा है

स्मार्ट हलचल| कोटा

भारतीय रेलवे कन्याकुमारी, चेन्नई, कोयंबटूर और बनारस के बीच सात विशेष ट्रेनों की श्रृंखला चला रहा है ताकि काशी तमिल संगमम 4.0 में बड़े पैमाने पर भागीदारी सुनिश्चित की जा सके और तमिल भाषी क्षेत्र और काशी के प्राचीन आध्यात्मिक केंद्र के बीच सांस्कृतिक संबंधों को मज़बूत किया जा सके। इन विशेष ट्रेनों को इस बहु-दिवसीय सांस्कृतिक विसर्जन कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागियों के लिए निर्बाध यात्रा, आरामदायक लंबी दूरी की कनेक्टिविटी और समय पर आगमन सुनिश्चित करने के लिए निर्धारित किया गया है।

इन सेवाओं की शुरुआत 29 नवंबर 2025 को कन्याकुमारी से पहली ट्रेन के प्रस्थान के साथ हुई। इसके बाद आज चेन्नई से एक अतिरिक्त विशेष ट्रेन रवाना हुई। अगली प्रस्थान 3 दिसंबर को कोयंबटूर से, 6 दिसंबर को चेन्नई से, 7 दिसंबर को कन्याकुमारी से, 9 दिसंबर को कोयंबटूर से और 12 दिसंबर 2025 को चेन्नई से एक और सेवा निर्धारित है। इन नियोजित प्रस्थानों के साथ, तमिलनाडु के प्रमुख शहरों से बनारस के लिए कुल सात विशेष ट्रेनें एक सुव्यवस्थित और चरणबद्ध तरीके से चलेंगी।

समय पर वापसी यात्रा सुनिश्चित करने के लिए, भारतीय रेलवे ने बनारस से कई विशेष वापसी सेवाओं की व्यवस्था की है। इनमें 5 दिसंबर को कन्याकुमारी, 7 दिसंबर को चेन्नई और 9 दिसंबर को कोयंबटूर के लिए प्र-स्थान शामिल हैं, इसके बाद 11 दिसंबर को चेन्नई, 13 दिसंबर को कन्याकुमारी, 15 दिसंबर को कोयंबटूर और 17 दिसंबर 2025 को फिर से चेन्नई के लिए अतिरिक्त वापसी सेवाएं निर्धारित हैं।

आज से शुरू हो रहा काशी तमिल संगमम 4.0, तमिलनाडु और काशी के बीच लंबे समय से चले आ रहे सांस्कृतिक संबंध को जारी रखता है। यह संस्करण 'आइए तमिल सीखें - तमिल करकलम' विषय पर केंद्रित है, जो वाराणसी के स्कूलों में तमिल सीखने की पहल, काशी क्षेत्र के छात्रों के लिए तमिलनाडु के अध्ययन दौरों और तेनकाशी से काशी तक प्रतीकात्मक ऋषि अगस्त्य वाहन अभियान के माध्यम से दोनों क्षेत्रों के बीच भाषाई और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है।

काशी तमिल संगमम 4.0 एक भारत श्रेष्ठ भारत के सार को मूर्त रूप देता है, जो लोगों को अपनी संस्कृति से परे संस्कृतियों की समृद्धि को समझने और उसकी सराहना करने के लिए प्रोत्साहित करता है। शिक्षा मंत्रालय द्वारा संचालित, आईआईटी मद्रास और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय प्रमुख ज्ञान साझेदार के रूप में कार्य कर रहे हैं, और रेलवे सहित दस मंत्रालयों की भागीदारी, दोनों क्षेत्रों के छात्रों, कारीगरों, विद्वानों, आध्यात्मिक नेताओं, शिक्षकों और सांस्कृतिक व्यवसायियों को एक साथ लाती है, जिससे उनके बीच विचारों, सांस्कृतिक प्रथाओं और पारंपरिक ज्ञान का आदान-प्रदान होता है। इन सात विशेष ट्रेनों को चलाकर और एक सावधानीपूर्वक नियोजित, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध यात्रा कार्यक्रम का समन्वय करके, भारतीय रेलवे देश के विविध क्षेत्रों को जोड़ने और तमिलनाडु और काशी के बीच साझा विरासत को सुदृढ़ करने में एक केंद्रीय भूमिका निभा रहा है।

नरेन्द्र मेहरा कांग्रेस ओबीसी विभाग प्रदेश कार्यकारिणी में प्रदेश सचिव नियुक्त

स्मार्ट हलचल । दूनी/टोंक

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ओबीसी विभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ अरविन्द जयहिंद ने राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी ओबीसी विभाग की प्रदेश कार्यकारिणी की घोषणा की है। जिसमें हर सहाय यादव को राजस्थान का प्रदेशाध्यक्ष व डॉ नरेन्द्र मेहरा एडवोकेट दूनी को प्रदेश सचिव नियुक्त किया है।डॉ नरेन्द्र मेहरा एडवोकेट को राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी ओबीसी विभाग मे प्रदेश सचिव नियुक्त होने पर टोंक जिले में खुशी की लहर दौड़ गई और मेहरा को बधाई देने वालो का तांता लग गया और डॉ नरेन्द्र मेहरा ने शीर्ष नेतृत्व का आभार व्यक्त किया है।

प्रभारी सचिव ने ली बजट घोषणाओं व पंचायतीराज की विभिन्न योजनाओं की समीक्षात्मक बैठक

स्मार्ट हलचल| बूंदी

बजट घोषणाओं 2024-25 एवं 2025-26 के तहत स्वीकृत विकास कार्यों के क्रियान्वयन एवं पंचायती राज विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की समीक्षात्मक बैठक मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में प्रभारी सचिव श्री कुंजीलाल मीणा की अध्यक्षता में आयोजित हुई।

बैठक में श्री मीणा ने बूंदी एवं कोटा जिले के विभिन्न पंचायत समिति के विकास अधिकारियों से स्वीकृत विकास कार्यों की पंचायतवार समीक्षा करते हुए कहा कि अप्रारंभ कार्यों को शीघ्र शुरू करावें व प्रगतिरत कार्यों को पूर्ण करवाया जावें एवं पूर्ण हो चुके कार्यों का शीघ्र भुगतान जारी किया जावें। निर्माण कार्यों में गुणवत्ता से समझौता नहीं किया जावें, सभी निर्माण कार्य तय समय सीमा में पूर्ण किये जावें।

प्रभारी सचिव ने निर्देश दिए कि पूर्ण हो चुके कार्यों के अतिशीघ्र कार्य पूर्णता प्रमाण पत्र व कार्य उपयोगिता प्रमाण पत्र भिजवाये जावें। लंबित यूसी व यूसीसी की सूची बनवाकर प्राथमिकता के साथ शीघ्र भिजवाने के लिए आवश्यक कार्यवाही की जावें। सभी विकास अधिकारी स्वयं की पंचायत समिति में संचालित विभिन्न निर्माण कार्यों का संबंधित ग्राम विकास अधिकारी व प्रशासक के साथ संयुक्त रूप से निरीक्षण कर गुणवत्ता की जांच सुनिश्चित करें। उन्होंने बजट घोषणाओं में स्वीकृत हुए विभिन्न विकास कार्यों की वर्तमान प्रगति की बिंदुवार समीक्षा करते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने बूंदी बस स्टेंड स्थानांतरण, जैत सागर व नवल सागर सौंदर्यकरण कार्य, डाबी में स्वीकृत महाविद्यालय के निर्माण शुरू होने, कापरेन में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, श्री अन्न आउटलेट, सेंडस्टोन पार्क, केशवरायपाटन में खेल स्टेडियम निर्माण, छात्राओं की आत्मरक्षा के लिए प्रत्येक ब्लॉक पर विद्यालयों में स्थापित होने वाले रानी लक्ष्मीबाई केंद्र सहित अन्य बजट घोषणाओं की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि बजट घोषणा के लंबित कार्यों, प्रगतिरत व पूर्ण हो चुके कार्यों की सूची तैयार की जावें साथ ही सभी संबंधित अधिकारी प्राथमिकता के साथ बजट घोषणाओं को धरातल पर लागू करने के लिए विशेष प्रयास करें। इस दौरान जिला कलक्टर अक्षय गोदारा, अतिरिक्त जिला कलक्टर रामकिशोर मीणा, मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद् बूंदी रवि वर्मा, मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद् कोटा कमल कुमार मीणा, एसई पीडब्ल्यूडी मुकेश गुप्ता सहित विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहें।

पप्पू जाटव राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी एससी विभाग के प्रदेश सचिव नियुक्त

स्मार्ट हलचल

करौली। एआईसीसी राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और जननायक आदरणीय राहुल गांधी और एससी विभाग राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेंद्र पाल गौतम के नेतृत्व में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस अनुसूचित जाति विभाग की कार्यकारिणी घोषित की गई। जिसमे पप्पू जाटव महू को एससी विभाग का प्रदेश सचिव नियुक्त किया है।

इस मौके पर पप्पू जाटव ने बताया कि कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय नेतृत्व एवं प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा एवं सुखवीर सिंह रंधावा, नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली, एससी विभाग प्रदेशाध्यक्ष ममता भूपेश, राष्ट्रीय कोर्डिनेटर धर्मेन्द्र कुमार जाटव, विधायक अनीता जाटव,सहित प्रदेश के शीर्ष नेतृत्व का आभार जताते हुए कहा लोकतंत्र, संविधान की लड़ाई में सक्रिय भूमिका का निर्वहन कर जनसेवा के नव आयाम स्थापित करने के लिए हमेशा समर्पित रहूंगा। इस अवसर पर राष्ट्रीय कोर्डिनेटर धर्मेन्द्र कुमार जाटव, विधायक अनीता जाटव, नवनियुक्त जिलाध्यक्ष प्रभाव चौधरी, जिला प्रमुख प्रतिनिधि रक्षी लाल बैरवा, जिला परिषद सदस्य भूपेन्द्र सिंह सोलंकी, एवं कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने प्रत्यक्ष व सोशल मीडिया के माध्यम से शुभकामनाएं दी।

श्री राधा गोविंद देव मंदिर का 18वाँ स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया

स्मार्ट हलचल| कोटा

न्यू क्लॉथ मार्केट में स्थित श्री राधा गोविंद देव मंदिर का 18वाँ स्थापना दिवस भक्ति, उत्साह और आध्यात्मिक माहौल के बीच संपन्न हुआ। सुबह 11 बजे अभिषेक और सामूहिक पाठ के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। सुबह से ही श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ने लगी और पूरे दिन दर्शनार्थियों का तांता लगा रहा।

समारोह होलसेल क्लॉथ मर्चेंट एसोसिएशन कोटा के सहयोग से आयोजित किया गया। संघ के अध्यक्ष कन्हैया लाल ग्वालानी, सचिव नरेश राजानी और अन्य पदाधिकारियों ने पूरे आयोजन में सक्रिय भागीदारी की।

राधा गोविंद जी का मनमोहक श्रृंगार किया गया।कार्यक्रम के दौरान अखण्ड रामायण का पाठ किया गया। शहर की सुख-समृद्धि और शांति की कामना के लिए विशेष हवन का आयोजन किया गया, जिसमें क्लॉथ मार्केट के कई व्यापारियों ने हिस्सा लिया। दिनभर चले भक्ति आयोजनों के दौरान लगभग 2000 से अधिक श्रद्धालुओं ने महाभोज प्रसादी ग्रहण की। प्रसादी वितरण में स्वयंसेवकों और मंदिर प्रबंधन ने सराहनीय योगदान दिया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में समाज के प्रतिष्ठित नागरिक, व्यापारी और सेवाभावी कार्यकर्ता शामिल हुए।

पंचायत समिति का मुख्यालय रखने की मांग को लेकर आज बंद रहेंगे सूरौठ के बाजार, निकलेगी सर्व समाज की रैली

स्मार्ट हलचल| सूरौठ

राज्य सरकार की ओर से शेरपुर -सूरौठ के संयुक्त नाम से सृजित की गई पंचायत समिति का मुख्यालय सूरौठ रखने की मांग को लेकर 3 दिसंबर को शहर के सभी बाजार बंद रहेंगे। गांधी स्मारक मैदान मे आम सभा करने के बाद शहर के मुख्य चौराहे से तहसील कार्यालय तक सर्व समाज की रैली निकाली जाएगी। तहसील कार्यालय में प्रशासनिक अधिकारियों को मुख्यमंत्री एवं राज्यपाल के नाम ज्ञापन सौंपा जाएगा। सूरौठ पंचायत समिति मुख्यालय बनाओ संघर्ष समिति के सदस्यों ने मंगलवार को बाजारों में जनसंपर्क कर दुकानदारों से 3 दिसंबर को अपने प्रतिष्ठान बंद रखने की अपील की। व्यापार मंडल के पदाधिकारियों ने ने भी

बाजार बंद रखने की बात कही। संघर्ष समिति के सदस्यों ने बताया कि सूरौठ एवं आसपास के काफी गांवों के लोग 3 दिसंबर को सुबह 8 बजे शहर के मुख्य चौराहे स्थित गांधी स्मारक मैदान मे एकत्रित होंगे जहां पर सभा आयोजित की जाएगी। इसके पश्चात सर्व समाज की रैली मुख्य चौराहे से शुरू होगी तथा बाजार व प्रमुख मार्गो से होती हुई तहसील कार्यालय पहुंचेगी। शहर के सभी बाजार पूरी तरह बंद रहेंगे। संघर्ष समिति के सदस्यों ने बताया कि परिसीमन प्रक्रिया के दौरान राज्य सरकार ने शेरपुर-सूरौठ के नाम से नवीन पंचायत समिति का सृजन किया है। सूरौठ शहर भरतपुर गंगापुर स्टेट हाईवे नंबर 1 एवं दिल्ली मुंबई रेल मार्ग पर स्थित है। सूरौठ में तहसील कार्यालय, नगर पालिका, पुलिस थाना, राजकीय महाविद्यालय, रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, बिजली निगम का एईएन ऑफिस, राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, बीएड कॉलेज, फिजिकल कॉलेज,एसटीसी कॉलेज एवं सभी विभागों के क्षेत्रीय कार्यालय पहले से ही संचालित है । सूरौठ प्रमुख व्यापारिक केंद्र भी है जहां करीब दो हजार दुकानें हैं। आसपास के सैकड़ों गांवों के लोग सूरौठ बाजार में ही खरीदारी करने आते हैं। सूरौठ तहसील मुख्यालय पर ही पंचायत समिति का कार्यालय खुलने से क्षेत्र के ग्रामीणों को काफी सुविधा रहेगी। करीब 25 हजार की आबादी वाले सूरौठ शहर में पंचायत समिति कार्यालय खुलना न्यायोचित रहेगा।

मुम्बई की नेत्र चिकित्सक डॉ. ऐश्वर्या पार्थसारथी मेडिकल रेटिना नेत्र फैलोशिप के लिए पहुँची कोटा

विगत् 3 वर्षो में बीस नेत्र चिकित्सक मेडिकल रेटिना एवं युविआईटिस टेऊनिंग हेतु सुवि नेत्र चिकित्सालय कोटा पहुंचे

स्मार्ट हलचल| कोटा

नेत्र चिकित्सक डॉ. ऐश्वर्या पार्थसारथी मुम्बई से मेडिकल रेटिना एवं युविआईटिस नामक फैलोशिप हेतु सुवि नेत्र चिकित्सालय एवं लेसिक लेज़र सेन्टर, कोटा पहुंची। डॉ. ऐश्वर्या पार्थसारथी संस्थान के रेटिना एवं युविआईटिस विशेषज्ञ डॉ. निपुण बागरेचा के मार्गदर्शन में इनडायरेक्ट ऑफ्थेलमोस्कोपी, एन्टी-वेज़एफ इंजेक्शन, रेटिनल लेज़र फोटोकोगुलेशन, बराज रेटिनल लेज़र, आदि अनेकों नवीनतम विधियाँ सीखेंगी। संस्थान के रेटिना विशेषज्ञ डॉ. निपुण बागरेचा ने बताया कि विगत् तीन वर्षो में 20 नेत्र चिकित्सक मेडिकल रेटिना एवं

युविआईटिस फैलोशिप टेऊनिंग हेतु सुवि नेत्र चिकित्सालय कोटा आ चुके है।

सुवि नेत्र चिकित्सालय एवं लेसिक लेज़र सेन्टर, कोटा के निदेशक एवं वरिष्ठ नेत्र सर्जन डॉ. सुरेश पाण्डेय एवं डॉ. विदुषी शर्मा एवं डॉ. एस. के. गुप्ता, डॉ. डिम्पल भाकुनी ने बताया कि वे फेकिक लैन्स इम्पलान्टेशन, टोपिकल फेको कैटरेक्ट सर्जरी एवं प्रीमियम टोरिक, ट्राइफोकल लैन्स इम्पलान्टेशन, लेसिक लेज़र सर्जरी आदि पद्धतियों को सीखेंगी। डॉ. ऐश्वर्या पार्थसारथी ने बताया कि उन्होंनें मुंबई से कोटा आकर सुवि नेत्र चिकित्सालय एवं लेसिक लेज़र सेन्टर कोटा के चिकित्सकों द्वारा नेत्र चिकित्सा जगत की अत्याधुनिक पद्धति को सीखकर नेत्र रोगियों को रोशनी लौटाने में सहायक बनना है। संस्थान के निदेशक डॉ. सुरेश पाण्डेय ने डॉ. ऐश्वर्या पार्थसारथी को अपनी पुस्तक 'एन्टरप्रोन्योरशिप फॉर डॉक्टर्स' एवम् 'एक आई सर्जन की डायरीः भारत, अमेरिका, आस्टेऊलिया में मेरे अनुभव' भी भेंट की। डॉ. ऐश्वर्या पार्थसारथी ने मेडिकल रेटिना एवं युविआईटिस नामक फैलोशिप हेतु सुवि नेत्र चिकित्सालय के रेटिना विशेषज्ञ डॉ. निपुण बागरेचा का फैलोशिप स्वीकृति हेतु आभार व्यक्त किया।

असामाजिक तत्वों ने की बाबा साहब अंबेडकर की प्रतिमा क्षतिग्रस्त, सिर तोड़कर साथ गए

दो दिन में मूर्ति लगाने एवं आरोपियों की गिरफ्तारी के आश्वासन पर धरना समाप्त

मामला दर्ज, सर्व समाज ने की कड़ी कार्रवाई की मांग

स्मार्ट हलचल| हरसौर

पीलवा थाना क्षेत्र के ग्राम पीह में असामाजिक तत्वों ने संविधान निर्माता बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा को क्षतिग्रस्त कर दिया। घटना सोमवार रात 11.20 बजे की है। मंगलवार सुबह खंडित मूर्ति पर ग्रामीणों की नजर पड़ी तो लोगों में आक्रोश फैल गया। गुस्साए सर्व समाज के लोगों ने घटना को लेकर नाराजगी जताते हुए घटनास्थल पर धरना दे दिया। घटना की सूचना मिलते ही नागौर एवं अजमेर जिले से बड़ी संख्या में दलित संगठनों के लोगों ने पीह में डेरा डाल दिया। वहीं, मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस एवं प्रशासन के अधिकारी मौके पर पहुंचे और मामले की जानकारी ली। दिनभर चले धरने के बाद देर शाम नई मूर्ति लगाने एवं जल्द आरोपियों की गिरफ्तारी करने की मांग पर सहमति बनी।

सीसीटीवी कैमरों में नजर आए आधा दर्जन आरोपी- अंबेडकर स्मारक के पास लगे सीसीटीवी कैमरों में आधा दर्जन बदमाश नजर आ रहे है। आरोपियों ने पहले बाबा साहेब की प्रतिमा को बड़ा पत्थर मारा फिर टूटे हुए सिर को साथ लेकर गए। सूचना मिलने पर पूर्व विधायक मानसिंह किनसरिया एवं सरपंच अमरचंद जाजड़ा धरना दे रहे सर्व समाज के लोगों से वार्ता की तथा आरोपियों की तत्काल गिरफ्तारी व नई प्रतिमा लगवाने का आश्वासन दिया।

आंदोलन की दी चेतावनी- धरनास्थल पर कर समाज के लोगों ने संघर्ष समिति का गठन कर आंदोलन की रणनीति तैयार की। संघर्ष समिति के लोगों ने बताया कि कुछ असमाजिकतत्वों ने ही यह कृत्य किया है। यदि उनकी गिरफ्तारी नहीं हुई तो वे अगला कदम उठाने पर बाध्य हो जाएंगे। जिसकी सारी जिम्मेदारी प्रशासन की होगी। इस पर एसडीएम कुसुमलता चौहान, मकराना डिप्टी विक्की नागपाल ने लोगों को आश्वस्त किया कि डॉ अम्बेडकर की नई मूर्ति जनसहयोग से लगाई जाएगी और दोषियों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाएगी, तब जाकर ग्रामीणों का गुस्सा शांत हुआ। इस दौरान तहसीलदार हरेंद्र सिंह, नायब तहसीलदार रुपनारायण यादव, पीलवा एसएचओ महीराम बिश्नोई, परबतसर एसएचओ सुमन बुंदेला सहित अन्य अधिकारी तैनात रहे।

इन मांगो पर बनी सहमति- देर रात तक अम्बेडकर स्मारक के पास चल रहे धरने में प्रशासन और संघर्ष समिति के बीच चली वार्ता सफल रही। प्रशासन ने जनसहयोग से दो दिन में मूर्ति लगाने एवं आरोपियों को गिरफ्तार करने का आश्वासन दिया। उसके बाद संघर्ष समिति ने धरना समाप्त करने का निर्णय लिया।

ये लोग रहे मौजूद- अंबेडकर स्मारक पर चल रहे धरने में रक्तकोष फाउंडेशन के जिला संयोजक महेश काला,भीम सेना के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष पीएल कटारिया, अम्बेडकर मिशन के महासचिव महेंद्र परिहार, मण्डल अध्यक्ष अमित आसोपा, आजाद समाज पार्टी के कैलाश गुद02वाड़िया, पूर्व जिला मंत्री नरेंद्र जयपाल, उप प्रधान अशोक बामनिया, एडवोकेट अशोक चौहान, श्रवणराम बुगालिया, पूर्व सरपंच महेश चावला, तपेन्द्र मेघवाल, अमन पाटोदिया पुष्कर, ईश्वर. मेघवाल, सुरेंद्र मलिंडा, ओमप्रकाश बिकुनिया सहित बड़ी संख्या में सर्व समाज के लोग शामिल हुए।

डीएसपी बोले-अमन और शांति भंग करने वालों पर कार्रवाई की जाएगी-डीएसपी विक्की नागपाल ने बताया कि ग्रामीणों से पूछताछ की जा रही है। अज्ञात लोगों पर मामला दर्ज कर लिया गया है। जल्द से जल्द आरोपी को पकड़कर सलाखों के पीछे भेजा जाएगा। अमन, चैन, शांति भंग करने वालों पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीम में गठित की गई है। घटनास्थल के आसपास की सीडीआर एवं अन्य अनुसंधान जारी है। जल्दी ही आरोपी पुलिस की गिरफ्त में होंगे।

महीराम बिश्नोई- एसएचओ, पीलवा

एसआईआर–2026 में शत–प्रतिशत डिजीटाइजेशन कार्य करने वाले सुपरवाइजरों को किया सम्मानित

स्मार्ट हलचल

सादुलपुर/चूरू। जिला निर्वाचन अधिकारी अभिषेक सुराणा ने मंगलवार को जिला कलक्टर कार्यालय में एसआईआर–2026 के दौरान शत– प्रतिशत डिजीटाइजेशन कार्य करने वाले सुपरवाइजरों को प्रशस्ति–पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

जिला निर्वाचन अधिकारी सुराणा ने कहा कि राष्ट्रीय महत्व के कार्यक्रम एसआईआर–2026 अंतर्गत सभी गतिविधियां समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण ढंग से संपादित करने में फील्ड स्तरीय मशीनरी की भूमिका सराहनीय है। कार्मिकों का निष्ठापूर्ण, अनुशासित और समर्पित कार्य पूरी मशीनरी के लिए प्रेरणादायी है। इस अवसर पर उन्होंने तारानगर विधानसभा क्षेत्र के सुपरवाइजर धर्मपाल व विजय कुमार, सरदारशहर के मुकेश कुमार, चूरू के फूलाराम, सुभाष, रामकृष्ण, राजेन्द्र प्रसाद, महेश कुमार सहित कुल 08 सुपरवाइजरों को मुख्य निर्वाचन अधिकारी, राजस्थान द्वारा हस्ताक्षरित प्रशस्ति–पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस दौरान उप जिला निर्वाचन अधिकारी अर्पिता सोनी, शिवप्रकाश शर्मा, गोविंद राहड़, अजय सहित अन्य मौजूद रहे।

सड़क हादसे में बाइक सवार किशोर की मौत

बेगूं। पारसोली थाना क्षेत्र के नेशनल हाईवे नंबर 27 चित्तौड़गढ़ कोटा राजमार्ग पर हरिपुरा पेट्रोल पम्प के पास अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार 17 वर्षीय छात्रा की मौके पर मौत हो गई एवं एक अन्य साथी गंभीर रूप से घायल हो गया, जिसे उपचार के लिए भीलवाड़ा रेफर किया गया। थाना अधिकारी शिवराज राव ने बताया कि पारसोली थाना क्षेत्र के बर्नियास ग्राम पंचायत के कंवरपुरा निवासी प्रभु लाल पुत्र घीसालाल धाकड़ एवं रतनलाल पुत्र प्रभु लाल धाकड़ सोमवार रात्रि मोटरसाइकल पर बेगूं आ रहे थे।

बीमारियों से बचाव व इम्युनिटी को मजबूत करने के लिए आयुर्वेदिक उपाय जरूरी-किनसरिया

निशुल्क आयुर्वेद शल्य चिकित्सा शिविर का हुआ शुभारंभ

स्मार्ट हलचल| हरसौर

मंगलवार को ग्राम पीलवा के राजकीय आयुर्वेद औषधालय में आयुर्वेद विभाग एवं राष्ट्रीय आयुष मिशन के संयुक्त तत्वावधान में दस दिवसीय निशुल्क अंतरंग क्षार सूत्र शल्य चिकित्सा का शुभारम्भ हुआ। शिविर का शुभारम्भ पूर्व विधायक मानसिंह किनसरिया, नगरपालिका अध्यक्ष ओमप्रकाश सेन, अतिरिक्त निदेशक मुख्यालय अजमेर डॉ रमेश मीणा, उपनिदेशक आयुर्वेद विभाग डॉ गोविंदसहाय शर्मा ने किया। शिविर में आए लोगों को संबोधित करते हुए पूर्व विधायक किनसरिया ने कहा कि

आयुर्वेद के अनुसार अधिकांश बीमारियों का मूल कारण अनुचित भोजन और जीवन शैली है। बीमारियों से बचाव व इम्युनिटी को मजबूत करने के लिए आयुर्वेदिक उपाय बेहद जरूरी है। शिविर प्रभारी डॉ गोविंद चोयल ने बताया कि शिविर में पाइल्स, फिस्टुला, फिशर के 35 रोगी भर्ती किये तथा पंचकर्म के 90 एवं अग्निकर्म के 47 रोगी स्वर्ण प्राशन के लिए 107 बच्चों को नामांकित किया गया। उसके साथ ही अन्य रोगों से संबंधित 275 रोगियों को चिकित्सा दी गई। शिविर 11 दिसम्बर तक चलेगा। कार्यक्रम में प्रदीप सिंह पीलवा, शिंभूपूरी गोस्वामी, नरेंद्रसिंह मोड़ी खुर्द , रामलाल बाजडोलिया, सोहननाथ गर्वा, भंवरलाल, गोविंदसिंह आसपास क्षेत्र के जनप्रतिनिधिगण एवं सरपंच गण उपस्थित रहे। शिविर सह प्रभारी डॉ श्रवण सिंह चारण व डॉ दिनेश कुमार ने बताया कि क्षार सूत्र शल्य चिकित्सा शिविर में आयुर्वेद विभाग के प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक डॉ आशीष सोनी, डॉ पंकज पोटलिया, डॉ हरवीर सांगवा, डॉ प्रेम प्रकाश के द्वारा सर्जरी की जाएगी तथा संभाग के विशेषज्ञ चिकित्सकों के द्वारा विभिन्न रोगों के आयुर्वेद विशेषज्ञों के द्वारा सेवाएं दी जाएगी। रोगियों के रहने, खाने, औषधियो की व्यवस्था निशुल्क रहेगी। इन रोगों से पीड़ित व्यक्ति आयुर्वेद औषधालय पीलवा में ज्यादा से ज्यादा पूर्व रजिस्ट्रेशन 7733864573 पर करवाकर लाभ ले सकते हैं। शिविर में क्षारसूत्र शल्य चिकित्सा द्वारा अर्श (मस्सा), भगंदर (फिस्टुला), फिशर एवं अन्य गुदगत रोगों की शल्य चिकित्सा द्वारा एवम समस्त रोगों की ओपीडी सेवाओं के साथ-साथ पंचकर्म, अग्निकर्म चिकित्सा एवं योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा के द्वारा रोगियों को लाभान्वित किया जाएगा।

भारतीय दूतावास की सतर्कता से कंबोडिया में फंसे 81 भारतीयों को बचाया

स्मार्ट हलचल

नोम पेन्ह। भारत के विदेश मंत्रालय और कंबोडिया स्थित भारतीय दूतावास ने कंबोडियाई अधिकारियों के सहयोग से 81 भारतीयों को जॉब स्कैम के चंगुल में से बाहर निकाला है।

नोम पेन्ह स्थित भारतीय दूतावास ने 1 दिसंबर को सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा भारतीय दूतावास आज बावेट से 28 भारतीय नागरिकों को बचाने के लिए कंबोडियाई अधिकारियों का बहुत शुक्रिया अदा करता है। सभी 28 भारतीयों को जल्द ही वापस लाया जा रहा है। इसके बाद दूतावास ने 2 दिसंबर को अपनी पहली पोस्ट को रिट्वीट करते हुए लिखा, अपडेट कल कंबोडिया के बावेट में 53 और भारतीय नागरिकों को बचाया गया, जिससे 2 दिनों में कुल संख्या 81 हो गई। दूतावास कंबोडियाई अधिकारियों का बहुत आभारी है।

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर के रहने वाले दो भाइयों द्वारा उनके सोशल मीडिया अकाउंट के माध्यम से 22 नवंबर को साइबर धोखाधड़ी करने वाली कंपनी के खिलाफ पोस्ट लिखी गई थी। उन्होंने अपनी पोस्ट में बताया था कि कंबोडिया के बावेट में काफी लोगों को बंधक बनाकर साइबर फ्रॉड से जुड़े कार्य कराए जा रहे हैं, जिनमें 100 से अधिक भारतीय नागरिक भी शामिल हैं। कंबोडिया स्थित भारतीय दूतावास ने इस पोस्ट पर संज्ञान लेते हुए पीड़ितों से संपर्क किया। दूतावास ने इस मामले की जानकारी भारतीय विदेश मंत्रालय के साथ ही नई दिल्ली में गृह मंत्रालय को भी दी, जिसके बाद ईडियन साइबर क्राइम कोऑर्डिनेशन सेंटर (14सी) ने इस मामले को गंभीरता से लेते हुए कंबोडिया के बावेट इलाके में ओपन सोर्स इंटेलिजेंस (ओएसआईएनटी) का इस्तेमाल करके कंपाउंड की लोकेशन का पता लगाने में टेक्निकल मदद दी। भारतीय दूतावास ने तुरंत कंबोडियाई सरकार के शीर्ष स्तर के समक्ष यह मामला उठाया और संबंधित अधिकारियों एवं एजेंसियों को कई खास इंटेलिजेंस टिप भी दी। इसके बाद 28 भारतीय नागरिकों को बचाया गया। हालांकि दूतावास की कोशिशें जारी रही, जिसके चलते बाद में 53 और भारतीय नागरिकों को जॉब स्कैम सेंटर्स के चंगुल से छुड़ाया गया। अभी भी दूतावास स्थानीय अधिकारियों के साथ समन्वय में है और अन्य संभावित भारतीयों की तलाश जारी है। बता दें कि कंबोडिया स्थित भारतीय दूतावास ने इससे पहले भी कई बार समय रहते जॉब स्कैम में फंसे भारतीयों को निकालने में सफलता हासिल की है। दूतावास की ओर से समय-समय पर भारतीय नागरिकों से सतर्क रहने, नौकरी के प्रस्तावों व भर्ती एजेंसियों को अच्छी तरह से सत्यापित करने के साथ ही विदेशी रोजगार के अवसरों के लिए केवल अधिकृत चैनलों पर भरोसा करने की अपील की जाती रही है।

अवैध देशी शराब के 52 पव्वों के साथ युवक गिरफ्तार

स्मार्ट हलचल

नारायणपुर। थाना पुलिस ने मंगलवार को अवैध देशी शराब पर कार्रवाई करते हुए एक युवक को दबोचा। पुलिस ने बताया कि उन्हें सूचना मिली थी कि गुणी वाले हनुमानजी के पास एक व्यक्ति अवैध देशी शराब बेचने की फिराक में बैठा हुआ है। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस टीम को देखकर युवक भागने लगा, लेकिन पुलिस ने पीछा कर उसे पकड़ लिया। पकड़े गए युवक की पहचान दयाराम गुर्जर निवासी डोडिया वाली ढाणी, मानावास के रूप में हुई है। पुलिस ने उसके कब्जे से अवैध देशी शराब के 52 पव्वे बरामद किए हैं। मामला दर्ज कर पुलिस ने आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

बालोतरा पुलिस ने ऑपरेशन अश्ववेग में वाहन चोर गिरोह का पर्दाफाश

स्मार्ट हलचल| बालोतरा

बालोतरा थाना की विशेष कार्रवाई में वाहन चोर अवसार को गिरफ्तार कर उसकी निशानदेही पर चोरी की कुल 05 मोटरसाइकिल बरामद की गईं। यह कार्रवाई संपत्ति अपराधों के शीघ्र खुलासे और पूर्ण बरामदगी के उद्देश्य से चलाए जा रहे अभियान ऑपरेशन अश्ववेग के तहत की गई।

घटना का संक्षेपः पुलिस अधीक्षक रमेश के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक हरफूलसिंह आरपीएस और पुलिस उप अधीक्षक अनिल पुरोहित के सुपरविजन में थानाधिकारी हिंगलाजदान निपु के नेतृत्व में गठित टीम ने 16 नवंबर 2025 की रात हुई मोटरसाइकिल चोरी की वारदात का खुलासा किया। शिकायतकर्ता पिन्टु पुत्र पेमाराम और अशोक कुमार पुत्र बुधाराम ने 17 नवंबर 2025 को रिपोर्ट दर्ज कराई कि उनके घर के बाहर हैंडल

लॉक की हुई मोटरसाइकिलें 16 नवंबर की रात गायब पाई गईं। प्रकरण में धारा 303(2), 112(2) भारतीय न्याय संहिता 2023 के तहत मामला दर्ज कर अन्वेषण शुरू किया गया। गिरफ्तारी और बरामदगीः विशेष टीम ने पारंपरिक पुलिसिंग और तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर संदिग्ध की पहचान कर उसे गिरफ्तार किया। आरोपी अवसार ने पूछताछ में बालोतरा कस्बे व आसपास के हल्का क्षेत्रों में कई मोटरसाइकिल चोरी करने की बात कबूल की। आरोपी की निशानदेही पर कुल पाँच मोटरसाइकिल बरामद की गईं। आरोपी पेशे से मजदूर है और उससे अन्य मामलों की भी पुष्टि हुई है।

गिरफ्तार आरोपी का विवरणः नामः अवसार; पिता का नामः इकरामदीन; जातिः मुसलमान; उम्रः 20 वर्ष; पेशाः मजदूरी; निवासः तामलीयार, थाना रामसर, जिला बाड़मेर।

जांच में शामिल पुलिस टीमः गुमाननाथ सउनि, थाना बालोतरा (विशेष भूमिका); सुखदेव कानि, जैताराम कानि, घनश्याम कानि, रघुराजसिंह कानि – सभी थाना बालोतरा। आगे की कार्रवाईः बरामद मोटरसाइकिलों की मालिकाना हक की पुष्टि के बाद उन्हें स्वामियों को सौंपा जाएगा। आरोपी के विरुद्ध प्रभावी कानूनी कार्रवाई जारी है और जांच के दौरान अन्य संबंधित मामलों की भी पड़ताल की जा रही है।

जैन आर्यका विशेषमति माता जी का विहार

स्मार्ट हलचल

नगर फोर्ट उनियारा शहर से जैन आर्यका विशेषमति माताजी ने सोमवार को विहार किया। चातुर्मास का सफलतापूर्वक संपन्न करने के बाद आर्यका विशेषमति माताजी ने अग्रवाल धर्मशाला से नैनवा के लिए विहार किया।विहार से पूर्व अग्रवाल धर्मशाला में नवकार महामंत्र का जाप, प्रार्थना और बड़ी मांगलिक प्रदान की गई। महिला मंडल ने चातुर्मास के तप, त्याग और धर्म साधना को बढ़ावा देने के लिए कृतज्ञता व्यक्त करी। आर्यका विशेष मति माताजी ने उनियारा से विहार कर चतरपुरा गांव में विश्राम किया। मंगलवार सुबह चतरपुरा से आचार्य विद्यासागर महाराज के धर्मगुरु आचार्य धर्मासागर जी महाराज की जन्मस्थली अतिशय क्षेत्र गंभीरा के पहुंचे। जहां अतिशय क्षेत्र गम्भीरा मे दर्शन किए। गम्भीरा मे आर्यका विशेष मति माताजी की आहारचार्य हुई। संघ सायंकाल गम्भीरा से विहार कर कचरावता गाव पहुंचा। आज सुबह नैनवा पहुंचेंगा जहां आहारचार्य होगी।

ढमोला किनारे महापौर व नगरायुक्त ने किया वृहद पौधारोपण

स्मार्ट हलचल| सहारनपुर

शहर के ढमोला पुलों के निकट नदी किनारों के सौंदर्यीकरण की पहल करते हुए आज महापौर डॉ. अजय कुमार व नगरायुक्त शिपू गिरि सहित निगम के अनेक अधिकारियों एवं पार्शदों ने पौधा रोपण किया। चम्पा, ग्लोचिन, फाइकस व बोगनवेलिया के करीब एक हजार पौधों का रोपण किया गया। महापौर व नगरायुक्त ने लोगों से इस अभियान में जनसहयोग की अपील करते हुए कहा कि लोग नहरों में कूड़ा-कचरा न फेंके और निगम के कर्मचारियों या गाड़ियों में ही कूड़ा डालें।

ढमोला नदी में वर्शा ऋतु में आने वाली बाढ़ के दौरान तटीय क्षेत्रों को जलभराव से बचाने के लिए नगर निगम द्वारा अपने संसाधनों से सफाई कराकर जो मिट्टी और शिल्ट किनारों पर डाली गयी थी, महापौर के सुझाव और नगरायुक्त के निर्देश पर उस मिट्टी को पोकलेन व जेसीबी आदि मशीनों की मदद से ढमोला नदी किनारे फैलाकर सीढ़ीनुमा कच्चे घाट तैयार किये जा रहे हैं। किनारों को संरक्षित और सुरक्षित करने के लिए एक जाली भी मिट्टी में लगायी गयी है। विश्वकर्मा चौक के निकट ढमोला किनारे विकसित किये गए ऐसे घाटों पर आज महापौर डॉ. अजय कुमार व नगरायुक्त शिपू गिरि ने चम्पा, ग्लोचिन, फाइकस व बोगनवेलिया पौधों का रोपण किया।

महापौर डॉ. अजय कुमार ने कहा कि नगर निगम ढमोला पुल के दोनों ओर सौ-डेढ़ सौ मीटर लंबे बांध बना कर उनका सौंदर्यीकरण करा रहा हैं जिससे कि न केवल बारिश के मौसम में लोगों के नुकसान को रोका जा सके बल्कि इन स्थानों को सुंदर भी बनाया जा सके। उन्होंने कहा कि नगर निगम सीमा में वार्ड नंबर आठ में जहां से नदी प्रवेश करती है और वार्ड नंबर दो में जहां से बाहर निकलती है उस पूरे नदी क्षेत्र में जहां लोगो द्वारा अतिक्रमण करने से अवरोध के कारण उसका आकार छोटा हो गया है, उस अतिक्रमण को हटवाकर नदियों को बचाने का काम भी किया जायेगा। इससे न केवल वायु प्रदूशण की दृश्टि से शहर कार्बन न्यूट्रल बनेगा और पर्यावरण में सुधार आयेगा। उन्होंने जन सहभागिता पर जोर देते हुए कहा कि बिना जन सहयोग के कोई भी कार्य पूरा नहीं हो सकता।

नगरायुक्त शिपू गिरी ने कहा कि नदियों के किनारे पड़े कूड़े-कचरे से शहर की प्रतिकूल छवि बन रही थी। अपनी प्राचीन नदियों को संरक्षित करें और सुंदर बनायें यह हमारा दायित्व है, उसी सोच के साथ नदी के किनारों को सुंदर और संरक्षित करने का यह कार्य शुरु किया गया है और यह लगातार जारी रहेगा। उन्होंने लोगों से अपनी भागेदारी करने का भी आह्वान किया। पौधारोपण कार्यक्रम में सहायक नगरायुक्त जे पी यादव, अधिशासी अभियंता आलोक श्रीवास्तव व विजय बहादुर सिंह, नगर स्वास्थय अधिकारी डॉ. प्रवीण शाह, जेडएसओ राजीव चौधरी के अलावा पार्शद अमित त्यागी, गौरव कपिल, कपिल धीमान व राजकुमार शर्मा तथा भाजपा नेता अजय वशिश्ठ, नवाब सिंह गुर्जर व अशोक गुप्ता आदि ने भी पौधारोपण किया।

पता नहीं क्यों फांसी पर लटक गया कानपुर पुलिस का सिपाही

स्मार्ट हलचल

कानपुर। पता नहीं किस वजह से यहां कानपुर पुलिस के एक सिपाही ने आज मंगलवार को फांसी लगाकर जान दे दी। वह यूपी 112 में तैनात था। उम्र 30 साल थी। साथी पुलिसकर्मियों ने दरवाजा तोड़कर फंदे से शव उतारा। घटना के बाद उसके परिवार में कोहराम मचा हुआ है। पुलिस ने बताया कि घटना की वजह अभी तक पता नहीं चल पाई है । लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेज कर घटना की छानबीन की जा रही है।

पुलिस से मिली जानकारीके मुताबिक कॉन्स्टेबल मान महेंद्र थाना कल्याणपुर के श्यामाजीपुरम में बारा सिरोही बम्बा रोड पर पूर्व ब्लॉक प्रमुख अजय यादव के 4 मंजिला मकान में रहते थे। साथ में पत्नी कविता (26) और दो बच्चे तेजस (5) और दीपांशु (3) रहते थे। इसी मकान के सेकेंड फ्लोर पर कल्याणपुर थाने के दरोगा इतेंद्र कुमार भी रहते थे। उनका हेलमेट सिपाही मान महेंद्र के पास रखा था।

आप मंगलवार सुबह दरोगा इतेंद्र कुमार अपना हेलमेट लेने महेंद्र के कमरे पर पहुंचे। उन्होंने महेंद्र को आवाज दी और दरवाजा खटखटाया। लेकिन कोई हलचल नहीं हुई।

इसके बाद उन्होंने खिड़की से देखा तो महेंद्र का शव फंदे से लटका रहा था। इसके बाद उन्होंने थाने पर सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने दरवाजा तोड़कर शव को नीचे उतारा। 26 नंवबर को दोनों बच्चो के साथ पत्नी मायके मथुरा के नरौली थाना क्षेत्र के सारपीपुर गांव गई थी। पत्नी ने बताया- 27 नंवबर से मेरी कोई बात नहीं हुई थी। पुलिस ने बताया कि लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेज कर घटना की जांच की जा रही है।

जीवन के हर मोड़ पर साथ निभाता है प्यार

प्यार! एक छोटा-सा शब्द, पर अपने आपमें अनूठा और अनुपम है। गन्ने की मिठास, सागर की गहराई, चंद्रमा की शीतलता, सूर्य की तपन, आकाश की पवित्रता, धरा का धैर्य, नदी की चंचलता मानो सभी इस नन्हे से शब्द प्यार में सिमट गए हों। यह जिंदगी को काव्यात्मक रूप दे देता है, कठोरता को कोमलता में बदल देता है यह मानवीय भावनाओं को निकृष्ट से उत्कृष्ट बना देता है।

प्रेम न बाड़ी उपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा-प्रजा जेहि रुचे, सीस देई से जाए।'
प्यार! एक छोटा-सा शब्द, पर अपने आपमें अनूठा और अनुपम है। गन्ने की मिठास, सागर की गहराई, चंद्रमा की शीतलता, सूर्य की तपन, आकाश की पवित्रता, धरा का धैर्य, नदी की चंचलता मानो सभी इस नन्हे से शब्द प्यार में सिमट गए हों। यह जिंदगी को काव्यात्मक रूप दे देता है, कठोरता को कोमलता में बदल देता है यह मानवीय भावनाओं को निकृष्ट से उत्कृष्ट बना देता है।

प्यार को हम एक ही दृष्टि से न देखें तो हमें इसके ढेर सारे रूप देखने को मिलते है। सबसे पहला और अद्‌भुत प्यार 'वात्सल्य' होता है। यह प्यार हमें माता-पिता से ही मिल पाता है। यह नि:स्वार्थ, निष्कपट, निष्पक्ष और मासूम प्यार होता है। बच्चा जब गर्भ में रहता है तो सबसे पहले उसे माँ का ही प्यार मिलता है। माँ की उँगलियों के स्पर्श से उसे अहसास होता है कि वह इस दुनिया में पहला कदम रख रहा है, वह डरा-सहमा सा रहता है, शायद इसलिए ही रोता है पर जब वह अपनी माँ के आँचल में आता है तब मां के शरीर की गंध को,उसकी उँगलियों के स्नेह स्पर्श को पहचानकर अपने आपको सुरक्षित समझ चुपचाप सो जाता है।

इस समय न उसे धन-यश की चाह होती है न ही किसी अप्सरा की, चाह होती है तो केवल अपने माता-पिता के सामीप्य की। बचपन में मिला यह प्यार उसे अंत तक सहारा देता है। इसलिए कहा जाता है कि शैशव अवस्था में बच्चों को भरपूर प्यार देना चाहिए, यह उनके व्यक्तित्व के विकास में उचित पोषण देता है। जिस तरह एक पौधे को बढ़ने के लिए उचित वातावरण, खाद, पानी और रोशनी की जरूरत होती है, उसी तरह बच्चों के समुचित विकास के लिए अच्छे वातावरण, पौष्टिक भोजन के साथ 'उचित' प्यार की भी जरूरत होती है।

प्यार का एक दूसरा रूप है 'स्नेह'। 'स्नेह' जो हमें अपने से बड़ों, पड़ोसियों और गुरुजनों से मिलता है। स्नेह ऐसा प्यार है जो हमें हमारे सद्गुणों के कारण मिलता है। यह एक तरह का प्रतिदान होता है अर्थात बदले में मिला प्यार। हम बड़ों का सम्मान करेंगे तो हमें उनसे प्यार मिलेगा, गुरुजनों के प्रति श्रद्धा रखेंगे तो उनसे हमें स्नेह के साथ ज्ञान भी मिलेगा। 'स्नेह' के लिए किसी से जिद्द नहीं की जा सकती, उसके लिए स्वयं को तराशना और उस योग्य बनना होता है।

प्यार का एक और रूप जो अजीब है अनबूझ पहेली की तरह है। इसे आज तक कोई समझ नहीं पाया है। यह पता नहीं किस तरह दो अजनबी को बहुत करीब ला देता है। लगता है मानो यह नियति के रूप में आता है और जीवन को काव्यात्मक आलोक दे जाता है। यह वह रूप है जो भावशून्य व्यक्ति में भी भावना की हिलोरें उत्पन्न कर देता है, मन को उद्विग्न कर देता है। आदर्शों में जीने वाला कठोर हृदय व्यक्ति भी समझ नहीं पाता कि कब, क्यों और कैसे उसके हृदय की कठोर बंजर भूमि पर प्यार का अंकुरण हो गया। उसकी आकांक्षाएं, उसके सारे ऊंचे आदर्श धरे रह जाते हैं। हर किसी के बस की बात नहीं है उस महान प्यार को पाना और देना। यह प्यार दो आत्माओं का प्यार है, दैहिकता से उठकर अलौकिक प्यार है। इस प्यार में हमें प्रतिदान की आवश्यकता नहीं रहती, यह हमें समर्पण करना सिखाता है, त्याग करना सिखाता है। हमें व्यभिचार से दूरकर संपूर्ण पवित्रता की ओर ले जाता है। यह हममें नैतिक साहस लाता है। यह वह प्यार है जो राधा और मीरा ने कृष्ण से किया था। राधा जिसने शरीर, आयु के बंधन से मुक्त होकर कृष्ण को चाहा था।

उन्होंने अपने दाम्पत्य जीवन को निभाते हुए कृष्ण को अपने दिल में जगह दी थी। उनकी आत्मा ने कृष्ण की आत्मा को चाहा था। उनका प्यार कृष्ण के कर्तव्य-पथ पर बाधक नहीं बना। राधा के प्यार में अहंकार की झलक नहीं, स्वाभिमान की खुशबू मिलती है। उन्होंने अपने प्यार में दीनता नहीं आने दी। कृष्ण के गृहस्थ-जीवन में अपना अधिकार माँगने नहीं गईं पर कृष्ण के चरण उनके हृदय में अंत तक अंकित रहे। कृष्ण का थोड़ा-सा प्यार पाकर वे तो चिर-विरहणी बन गईं। महान रूसी उपन्यासकार 'तुर्गनेव' ने भी अपने से उम्र में काफी बड़ी शादीशुदा महिला को चाहा। वह महिला अपने पति को तलाक देने को तैयार नहीं हुई तो उन्होंने आजीवन अविवाहित रहने का निश्चय किया पर उस महिला को कभी दिल से न निकाल सके। प्यार अपने साथी को कभी भी तकलीफ नहीं पहुँचाता है। सच्चा प्यार करने वाला अपने साथी के दु:ख को अपनाकर उसे सुख ही सुख देना चाहता है। कड़ी धूप में छतरी बन उसे छाया देना चाहता है। उसकी गलतियों को अपने सिर लेकर उसे अपमानित होने से बचाता है। अपने दोस्तों के बीच उसे वार्तालाप में नहीं लाता है, वह तो उसे सबसे छुपाकर अपने हृदय के मखमली डिबिया में संजोकर रखता है। वह अपने साथी की 'गरिमा' और 'प्रतिष्ठा' को बनाए रखता है। प्यार तो दिव्य है, यह कभी भी गलत नहीं होता है।

हां! प्यार करने वाले गलत हो सकते हैं। यह तो हम पर निर्भर है कि हमने प्यार को किस स्तर पर ले लिया है। हमारा प्यार सच्चा है तो हमें अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए कि सामने वाला भी ठीक हमारे जैसा हो। कभी-कभी प्यार हमें स्वार्थी बना देता है, हम अपने साथी से उतना जुड़ जाते हैं कि किसी का भी उनके करीब आना हम सह नहीं पाते। हम हर समय बस उसे अपने ही साथ चाहते हैं।

अपने प्यार को संजीवनी की तरह बनाएं जो जिंदगी को नई ऊर्जा दे सके, जीवन की खुशी की सांस ले सके। प्राप्त प्यार सच्चा है या झूठा, यह सोचकर अपने जीवन के अनमोल पल को व्यर्थ न जाने दें। हो सकता है आपके साथी की प्यार की गागर 'आधी ही भरी' हो, पर आपको उदारता से अपने प्यार को उसके गागर में छलकाते चले जाना है। एक दिन उनकी गागर छलकने लगेगी और आप उस प्यार के रस से सराबोर हो उठेंगे। प्यार पाना है हमें तो प्यार करना सीखना होगा। अपने अहं, स्वार्थ का त्याग करना होगा हम तभी हम अपने प्यार को वह दिव्य रूप दे सकेंगे। वर्ना तो-

'वो एक लफ्ज की खुशबू न रख सका महफूज
मैं उसके हाथ में सारी प्यार की किताब क्या देता?'

बदल रही है सास बहू की छवि

जब भी किसी लड़की की शादी होने वाली होती है तो सब से बड़ा डर उसके मन में सास की छवि को लेकर होता है। आमतौर पर सास के नाम के साथ यह धारणा जुड़ी होती है कि सास कभी मां की जगह नहीं ले सकती परन्तु आज के समय में यह भ्रम टूटता हुआ सा लगता है क्योंकि अब सास का स्वरूप बदलने लगा है। सच तो यह है कि ससुराल में पति के बाद आपकी सास ही वह सदस्य होती है जिससे आप बेहिचक अपने दिल की बातें कह सकती हैं। सास कैसी भी हो लेकिन आप अपने अच्छे व्यवहार से उन्हें अपना बना सकती हैं। आखिर उनमें भी एक मां का दिल धड़कता है। बस जरूरत है एक-दूसरे को समझने की।

सोच में आया है परिवर्तन

आज सास न तो बहू को खरी-खोटी सुनाने में विश्वास रखती हैं और न ही बहू-बेटे के बीच दूरियां बनाने का प्रयत्न करती हैं। वे बदल गई हैं और यही चाहती हैं कि जिस प्रकार वे किसी की बेटी से किसी की बहू बन कर गृहस्थी की सभी जिम्मेदारियों को निभाती आई हैं, ठीक उसी का अनुसरण उनकी बहू भी करे। कुल मिला कर वे अपनी बहू की रोल मॉडल बनना चाहती हैं।

रिश्तों से परिचित कराती हैं सास

ससुराल में सास एक ऐसी सदस्य होती है जो परिवार के प्रत्येक सदस्य के व्यवहार और आदतों से परिचित होती है। वह अपनी बहू को उन सबसे परिचित करवा कर उनके दिलों को जीतने की कला भी बताती हैं। सास द्वारा मिली जानकारी से आप सब की अच्छी तरह देखभाल कर सकती हैं और उन्हें प्रेम व सम्मान देकर उनकी प्रिय बन सकती हैं। इससे आपके व उनके रिश्तों में मजबूती आएगी।

सास होती है बेहतर काऊंसलर

सास एक मां होती है इसलिए उसे अपनी बहू अपने बच्चों की तरह ही लगती है। अगर बहू-बेटे में किसी बात को लेकर तनाव की स्थिति पैदा होती है तब सास ही दोनों में सुलह करवाने का सेतु बनती है। सास और बहू में इतना खुलापन अवश्य होना चाहिए कि बहू अपने पति या परिवार से संबंधित कोई भी परेशानी उनसे बांट सके। इससे संबंधों में निकटता बनी रहेगी। कई बार कम अनुभव के कारण बहू जिम्मेदारियां पूरी तरह नहीं निभा पाती, तब सास ही सब मैनेज करने के गुर बताती है। जब सास अपने बहू-बेटे को खुश देखती है तो वह संतुष्ट होती है क्योंकि वह आज की आधुनिक सास है।

देती हैं इमोशनल सपोर्ट

अगर आप शादी के बाद नौकरी करती हैं या घर संभालती हैं तब सास के अनुभवों से आपको बहुत कुछ सीखने को मिल सकता है क्योंकि उन्होंने आपसे अधिक दुनिया देखी है। दुख और तकलीफ के क्षणों में वह इमोशनली सपोर्ट का काम करती हैं व आपकी समस्या का समाधान बड़ी समझ और धैर्य से ढूंढती हैं। इन सबके बीच वह जाने कब आपकी सुख-दुख की सच्ची सहेली बन जाती हैं और आप उनके साथ घूमने, मूवी देखने या शापिंग पर भी जा सकती हैं।

रीति-रिवाज और संस्कार सिखाती

शादी होते ही लड़की को ससुराल के रीति-रिवाजों की ही पालना करनी पड़ती है। आपकी सास उन सबसे आपको अवगत कराती है। आप खुशनसीब हैं क्योंकि सास के रहते आप की जिम्मेदारियां कुछ कम हो जाती हैं। आप बेफिक्र होकर कहीं भी घूमने जा सकती हैं। नौकरी करती हैं तो बच्चों को निशचिंत होकर उनके पास छोड़ सकती हैं। बच्चों को अकेलापन नहीं झेलना पड़ता और सबसे बड़ी बात अपनी दादी मां की स्नेह भरी छत्रछाया में वह स्वयं को सुरक्षित महसूस करते हैं। उनमें मिल-बांट कर खाने-पीने और साथ रहने की भावना पनपती है।

सास-बहू में तालमेल है जरूरी

पति के परिवार और परम्पराओं को समझने व उनसे जुड़ने का सास से बेहतर कोई साधन नहीं हो सकता लेकिन आपको भी अपनी सासू मां को अपनी मां जैसा मान-सम्मान देना होगा। दोनों में किसी भी बात को लेकर छुपाव नहीं होना चाहिए बल्कि एक-दूसरे के प्रति ऐसी स्वच्छ भावनाएं छिपी हों कि बिना कहे ही वे एक-दूजे के मन की बात को भली-भांति समझ लें। जिस प्रकार आपको अपनी सास से उम्मीदें होती हैं ठीक उसी तरह उन्हें भी आप से उम्मीदें होती हैं। आज के समय में यह सच है कि जहां सास अपनी बहू के प्रति उदार हुई हैं, वहीं बहू के मन में भी सास के प्रति सम्मान की भावना बढ़ी है।

समय के साथ-साथ हो रहा है सोच में बदलाव

महिलाएं बड़ी कुशलता से घर व दफ्तर की जिम्मेदारियों को निभा रही हैं। बदलती जीवन शैली ने महिलाओं की सोच को तो बदल दिया है पर घर व दफ्तर की जिम्मेदारियां निभाते-निभाते वे कई बार संवेग में आकर कई गलत फैसले ले लेती हैं।

समय के साथ-साथ महिलाओं की सोच में काफी बदलाव आया है। अब वे बड़ी कुशलता से घर व दफ्तर की जिम्मेदारियों को निभा रही हैं। बदलती जीवन शैली ने महिलाओं की सोच को तो बदल दिया है पर घर व दफ्तर की जिम्मेदारियां निभाते-निभाते वे कई बार संवेग में आकर कई गलत फैसले ले लेती हैं। उनके मुंह से निकले अपशब्द और किया गया व्यवहार उनको दूसरों से अलग कर देता है और वह खुद ही धीरे-धीरे अकेलेपन का शिकार होकर मानसिक पीड़ा से गुजरने लगती हैं। एक ऐसी ही स्थिति उत्पन्न होती है जब किसी महिला की कोई वस्तु गुम हो जाए। अगर गुमशुदगी बड़ी हो तो पुलिस में रिपोर्ट लिखवाएं, अन्यथा खुद ही तफ्तीश शुरू कर देती हैं। अक्सर देखा गया है कि गुम हुई वस्तु को हर जगह ढूंढने के पश्चात विफल रहने पर वह किसी न किसी पर शक की सूई घुमा लेती है। यह सूई उसकी काम वाली बाई, उसी समय मिलने आए दोस्त या रिश्तेदार पर चली जाती है।

वह बहुत जल्द तलाशी लेने लगती है और बिना सोचे-समझे आवेश में आकर किसी एक पर इल्जाम लगा कर बदनामी मोल ले लेती है। कई बार हम कोई वस्तु कहीं रख कर ऐसे भूल जाते हैं मानो हमने रखी ही न हो। फिर वह कई दिनों, यहां तक कि कई महीनों या सालों के पश्चात अचानक घर से ही मिल जाती है। तब हमें अपनी गलती का एहसास होता है परन्तु कई बार वस्तु सचमुच चुरा ली गई हो और वह महिला सही अनुमान भी लगा रही हो फिर भी बिना सबूत के उस पर कौन विश्वास करेगा। उल्टा सब लोग उस स्त्री से पीछे हट जाएंगे। हर कोई उसके इल्जाम लगाने की प्रवृत्ति की वजह से उससे कतराने लगेगा। इसी कारण महिलाएं काफी समय अपनी ही कही बातों के जंजाल में फंस कर दोहरे मानसिक दबाव में धंस जाती हैं। एक तो उसकी वस्तु गुम हुई दूसरा वह तलाशी लेकर या इल्जाम लगा कर दूसरों में बदनाम हो जाती है। इतना ही नहीं कोई भी काम वाली बाई उसके घर काम करना पसंद नहीं करती चाहे वह महिला व्यवहार में कितनी भी अच्छी और दयालु क्यों न हो। ऐसे में कुछ बातों को ध्यान में रखना जरूरी है-

- सबसे पहले हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि अगर हम एक उंगली किसी एक की ओर उठाएंगे तो तीन उंगलियां हमारी तरफ भी उठेंगी। इसलिए संयम रखें, धैर्य से व्यवहार करें। किसी पर इल्जाम न लगाएं। दूसरों से वस्तु ढूंढने में सहायता मांगें।
- याद रखें जिसने आपकी चोरी की है वह आपको वस्तु कभी नहीं लौटाएगा और न ही उस वस्तु को अपने पास रखेगा। इसलिए तलाशी लेना ज्यादातर फिजूल ही होता है और बद्दुआएं देने से आपकी अपनी जुबान खराब होगी।
- अगर आपको किसी से अपना शक सांझा करना हो तो आप पति, बेटा, बेटी या मां-बाप आदि से बात करें और उनसे बात को गुप्त रखने का वायदा लें।
- हर कीमती या प्रिय वस्तु को अलमारी में रख कर ताला लगाएं और चाबी अपने पास रखें। पहले अपनी वस्तु को अच्छे से ढूंढें फिर चोरी के बारे बताएं।
- हमेशा अपनी कीमती चीज संभाल कर रखनी चाहिए या फिर उसकी जिम्मेदारी किसी को देकर जाएं।
- याद रखें इस जीवनकाल का काफी समय आप बिता चुकी हैं और कुछ ही समय बचा है। वस्तु मिले या न मिले, वस्तु साथ नहीं जाएगी, लेकिन आपका व्यवहार लोग आपके बाद भी याद रखेंगे। आप इस मानसिक स्थिति से बाहर निकलने की कोशिश करें। अब आप महसूस करेंगी कि आपने वस्तु तो गंवाई परन्तु संतुलन बना कर कई रिश्तों को गंवाने से बचा लिया। यह सोचते ही आपका मन हर्षोल्लास से भर जाएगा और आप गुम हुई वस्तु को भूलने लगेंगी।

स्वत्वाधिकार प्रकाशन एवं मुद्रक राजकुमार आमेटा के लिए स्मार्ट कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स, कोर्ट के सामने, माण्डलगढ़ से प्रकाशित एवं मुद्रित। मो. 9649222850 Email.smarthalchalnews@gmail.com